सत्साहित्य प्रकाशन

अतलांतिक के उस पार

अमरीकी जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन

रामकृष्ण बजाज

भूमिका
मोहम्मद करीम छागला

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली
१९६१

प्रकाशक मार्तण्ड उपाध्याय
मन्त्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

सस्करण पहला १९६१

मूल्य अढाई रुपये

मुद्रक हीरा आर्ट प्रेस
दिल्ली

प्रकाशकीय

बडे हर्ष की बात है कि हिन्दी मे यात्रा-साहित्य के लिए पाठको की रुचि बराबर बढ रही है और ऐसी पुस्तको की माग हो रही है, जो घरबैठे यात्रा का आनन्द दे सकें, साथ ही ज्ञान मे वृद्धि भी कर सकें।

हिन्दी मे ऐसे साहित्य की कमी को देखकर हमने यात्रा-साहित्य का प्रकाशन आरम्भ किया है और इस माला मे कई पुस्तके निकाली है। इन सब पुस्तको की विशेषता यह है कि इन्हे उन व्यक्तियो ने लिखा है, जिन्होने स्वय यात्रा की थी। परिणामत सभी पुस्तकें बडी रोचक बन पडी है। उनके पढने से पाठको को एक ओर आनन्द मिलता है तो दूसरी ओर उनकी जानकारी भी बढती है। 'हिमालय की गोद में' पाठको को गगोत्री-यमुनोत्री की यात्रा कराती है तो 'उत्तराखण्ड के पथ पर' बदरी-केदार की, 'लद्दाख यात्रा की डायरी' पाठको को लद्दाख के सुरम्य क्षेत्र मे ले जाती है, तो 'जय अमरनाथ' काश्मीर तथा वहां के सुविख्यात तीर्थ अमरनाथ मे। इसी प्रकार 'दुनिया की सैर : अस्सी दिन में' दुनिया के कई देशो की यात्रा करा देती है, तो 'जापान की सैर' सूर्योदय के देश मे घुमा देती है, 'रूस मे छियालीस दिन' विश्व के दो अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्रो में से एक का प्रदान कराती है, तो 'आज का इंग्लिस्तान' आधुनिक इग्लैंड की झाकी प्रस्तुत करती है और 'यूरोप-यात्रा : एक सांस्कृतिक सिहावलोकन की' कई देशो मे पर्यटन की प्रेरणा देती है।

'अतलातिक के उस पार' इसी माला की एक मूल्यवान कड़ी है। इसके लेखक ने पिछले दिनों अमरीका की यात्रा की थी और वहा के

जीवन के विभिन्न पहलुओ को बडी अच्छी तरह से देखा था। अपने इसी अनुभव का लाभ उन्होने इस पुस्तक मे पाठको को दिया है। पुस्तक की सबसे बडी खूबी यह है कि यह केवल मनोरजन ही नही करती, बल्कि एक शक्तिशाली राष्ट्र को देखने और समझने मे भी सहायक है।

हम आशा करते है कि यह तथा इस माला की सभी पुस्तके पाठक चाव से पढेगे और इनसे लाभान्वित होगे।

—मत्री

भूमिका

श्री रामकृष्ण बजाज एक ऐसे उत्साही और देशसेवी भारतीय युवक है, जो युवक-आदोलन के महत्व से भली-भाति परिचित है। सारी दुनिया के युवकों के बीच इस प्रकार का पारस्परिक सद्भाव होना चाहिए कि वह राजनैतिक नेतृत्व पर प्रतिबिंबित हो। कहने की आवश्यकता नही कि इससे उन तनावों और संघर्षों को दूर करने में निश्चित रूप से सहायता मिलेगी, जो दुर्भाग्य से आज प्राय सारी दुनिया मे विद्यमान है। कई देशों मे नौजवानों ने क्रातिकारी आदोलनो और स्वाधीनता-संग्रामों मे महत्वपूर्ण भाग लिया है। आज, जबकि स्वतंत्रता की समस्या लगभग पूरी तरह हल हो गई है, संसार को एक दूसरी समस्या का सामना करना पड रहा है, वह समस्या है स्वतन्त्रता की अखडता और स्वतंत्र देशों के बीच शातिपूर्ण सहअस्तित्व बनाये रखने की। शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व तभी स्थापित हो सकता है जबकि विभिन्न देशों की संस्कृतियों और सामाजिक प्रथाओं के प्रति सद्भाव और आदर हो। इसके लिए सहनशीलता के महान गुण की भी आवश्यकता है और यह गुण तभी आ सकता है जब अपनी शिक्षा-संस्थाओं के द्वारा हम अपने नवयुवकों में वास्तविक ऐतिहासिक भावना और दृष्टिकोण पैदा

श्री बजाज भारतीय युवको का एक शिष्टमडल लेकर अमरीका गये थे। मैं उस समय वहा का राजदूत था। यह शिष्टमडल जहा-जहा गया, वहा-वहा इसने बहुत अच्छा असर डाला। लोगो की भी इसके बारे मे अच्छी राय बनी। श्री बजाज ने कई अमरीकी सस्थाओ को बारीकी से देखा और उन्हे अच्छी तरह से समझा। प्रस्तुत पुस्तक उसीका परिणाम है।

अमरीका मे इस समय कोई चार-पाच हजार भारतीय विद्यार्थी हैं। अध्ययन के क्षेत्र मे इनमे से अधिकतर विद्यार्थियो ने असामान्य योग्यता का परिचय दिया है और इस तरह अपने देश के अनौपचारिक राजदूतो के रूप मे इन्होने सराहनीय कार्य किया है। फिर भी, जब मैं वहा था, मैंने यह अनुभव किया कि अमरीका जाने से पहले प्रत्येक युवक को वहा के बारे मे उचित जानकारी दी जानी चाहिए। अमरीका जाने का अर्थ है एक बिल्कुल दूसरी दुनिया मे जाना। वहा के रीति-रिवाज, आश्चर्यजनक समृद्धि, जीवन-स्तर आदि हमारे यहा की स्थिति से इतने भिन्न है कि पहली बार उस देश मे जानेवाले व्यक्ति के लिए अमरीकी विधि-विधानो और रीति-रिवाजो की कुछ पूर्व-जानकारी होना नितात आवश्यक है। यह पुस्तक इस दिशा मे सुदर दिग्दर्शन करायेगी। मैं इस पुस्तक को लिखने के लिए श्री बजाज को बधाई देता हू और इसकी सफलता की कामना करता हू।

—मोहम्मद करीम छागला

दो शब्द

अगस्त १९५७ मे 'वर्ल्ड असेंबली ऑफ यूथ' की अतर्राष्ट्रीय कार्फेंस दिल्ली मे हुई थी। उस समय करीब ८० देशो से ४०० प्रतिनिधि भारत आये थे। उनमे अमरीका के 'यग अडल्ट कौसिल' के सदस्य भी थे। अमरीका की करीब २६ प्रमुख युवक-सस्थाए इस कौंसिल की सदस्य है। विदेशो मे अमरीका के युवको का प्रतिनिधित्व यही सस्था करती है। उन्हीके निमत्रण पर १९५९ के फरवरी मास मे हम लोग करीब दो महीने के भ्रमण के लिए अमरीका पहुचे। भारतीय 'वर्ल्ड असेंबली ऑफ यूथ' की कमेटी के सदर के नाते मुझे इस युवक प्रतिनिधि मडल का मुखिया बनने का अवसर मिला।

प्रवास से लौटने के बाद कुछ लेख लिखे, जो 'धर्मयुग' और 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' मे प्रकाशित हुए। मित्रो ने इच्छा प्रकट की कि इन लेखो के साथ कुछ सामग्री और जोडकर एक किताब के रूप मे प्रकाशित करना उचित होगा। मै स्वय अनुभव करता रहा हू कि हमारे देश के युवक-आदोलन को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक है कि इस सिलसिले मे हमारे देश मे अधिक साहित्य का निर्माण हो। जिन लोगो को विदेशो मे जाकर भारत का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलता है, उन्हे चाहिए कि वहा के जीवन तथा प्रमुख विचार-धाराओं के बारे मे

मैंने अमरीकी जीवन के विभिन्न पहलुओ 'का विवेचन किया है। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक को पढकर पाठको को अमरीका को जानने मे मदद मिलेगी। प्रकाशित सामग्री मे मैंने बहुत परिवर्त्तन किया है और कुछ नये अध्याय भी जोडे है।

जब हम लोग अमरीका मे थे, उस समय वहा रिपब्लिकन सरकार थी। अब डेमोक्रेट सरकार आ गई है। श्री आइजनहोवर के बाद अब श्री केनेडी राष्ट्रपति हो गये है। पार्टी के बदलने के साथ-साथ एक नौजवान पहली बार इतनी छोटी उम्र मे अमरीका का राष्ट्रपति बना है। सही माने मे नई पीढी ने शासन की बागडोर अपने हाथो मे ली है हम लोग अमरीका मे थे तभी से वहा की राजनैतिक आबोहवा मे धीरे-धीरे परिवर्तन होता हुआ दिखाई दे रहा था। उनकी विदेश-नीति अधिक यथार्थवादी हो रही है। भारत के प्रति उनका आकर्षण और सहानुभूति बराबर बढ रही हे। श्री केनेडी से भी हमे मिलने का मौका मिला था। यद्यपि मुलाकात बहुत थोडे समय के लिए हुई, लेकिन उनके व्यक्तित्व से हम बहुत प्रभावित हुए। मैं मानता हू कि उनके जमाने मे भारत और अमरीका का सम्बन्ध और सुदृढ होगा।

अपनी पत्नी, विमला बजाज, के प्रति तो क्या कृतज्ञता प्रदर्शित करू ? वह भी हमारे साथ अमरीका गई थी। प्रतिनिधि-मडल की सदस्या न होते हुए भी, उन्होने पूरी यात्रा के दौरान, अपनी सूझ-बूझ तथा विनोदप्रियता से सदस्यो के बीच आत्मीयता का वातावरण बनाये रखा। इससे मुझे बहुत मदद रही। इसके अलावा, इस पुस्तक के 'डिसनीलैंड' 'हॉलीवुड' और 'नियाग्रा प्रपात व वापसी' नामक अध्यायो के लेखन मे भी उनकी सहायता मिली।

अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी श्री छागला ने पुस्तक की भूमिका लिख दी, इसके लिए मैं उनका आभारी हू।

—रामकृष्ण बजाज

विषय-सूची

अतलांतिक
के
उस पार

: १ :

न्यूयार्क में

भारी-भरकम जहाज 'क्वीन ऐलीजाबेथ' हम लोगो को लिये अमरीका के पूर्वी किनारे पर स्थित न्यूयार्क पहुचना ही चाहता था। एक ओर न्यूयार्क के सबसे घने बसे हुए भाग मैनहट्टन के गगन-चुबी भवन दिखाई दे रहे थे, दूसरी ओर 'स्टैच्यू आफ लिबर्टी' (स्वतत्रता की मूर्ति) थी। इसके बारे मे इतना सुना था, फिर भी उसके सामने से गुजरने पर कई तरह की भावनाए अपने-आप पैदा होती रही। भारतीय स्वतत्रता के आदोलन के दिन याद आने लगे। जिस तरह अमरीका ने अग्रेजो के विरुद्ध लडकर आजादी पाई, उसी तरह भारत ने भी, उसके अनेक वर्षो बाद, अपने देश के लिए स्वतत्रता प्राप्त की। यद्यपि दोनो देश इतनी दूरी पर स्थित है, लोगो के सस्कार, विचार और सोचने के तरीको मे इतना अतर है, फिर भी आजादी की पुकार किस तरह सारी दुनिया मे एक-सी होती है, इसका दिग्दर्शन स्वतत्रता की इस महाकाय मूर्ति को देखकर स्वाभाविक रूप मे होजाता है।

हमारा जहाज बदरगाह पर पहुचा, तो मानो हमारे स्वागत के लिए बहुत जोरो से बर्फ गिर रही थी। वातावरण की उदासीनता व ठडक, हमारे पूर्वपरिचित दोस्त अर्विन कर्न (यग अडल्ट कौंसिल के अध्यक्ष) की हर्षभरी मुस्कान और भावपूर्ण स्वागत से दूर हो गई। 'यग अडल्ट कौसिल' (याक) के आमत्रण पर हम लोग भारत के नौजवानो की तरफ से एक युवक-प्रतिनिधि-मडल लेकर अमरीका पहुचे थे। श्री कर्न १९५८ के अगस्त मास मे दिल्ली मे अपने अन्य साथियो के

साथ, अमरीका के युवक-प्रतिनिधि-मडल के अध्यक्ष की हैसियत से विश्व-युवक-सघ (वर्ल्ड असेवली ऑफ यूथ, या 'वे') के तृतीय अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे भाग लेने आये थे। उसी समय हम लोगो से उनका अच्छा गाढा मित्र-भाव स्थापित हो गया था। देश-विदेश के नवयुवक जब इस तरह के सम्मेलनो मे इकट्ठे होते है तो स्वाभाविक ही उनमे आपस मे विना किसी रग और जाति-भेद के वहुत जल्दी ही दोस्ती हो जाती है, क्योकि उनकी भावना के पीछे कोई बधन नही रहता और न राजनीति की खाई ही उनको एक-दूसरे से अलग करती है। अपने-अपने देश के निर्माण के लिए उत्साह से काम करनेवाले अस्सी देशो के करीब चारसौ प्रतिनिधि नवयुवक भाई-वहन ऐसे ही सम्मेलन के लिए दिल्ली मे इकट्ठे हुए थे। इस सम्मेलन का उदघाटन हमारे परम-प्रिय और चिरयुवक श्री जवाहरलाल नेहरू ने किया था। इतने वडे और अतर्राष्ट्रीय युवक-सम्मेलन का भारत मे आयोजित होने का यह पहला ही अवसर था। वहुत वडी सख्या मे विदेशी अतिथि गैरसरकारी तौर पर आमत्रित किये गए थे और नवयुवको ने अपने ही वूते पर इसकी सारी जिम्मेदारी उठाई थी। सम्मेलन को पूरी सफलता से सपन्न करके उन्होने सिद्ध कर दिया कि युवको को जिम्मेदारी सौपी जाय तो उसे वे अच्छी तरह से और सफलतापूर्वक निभा सकते है।

इसी अवमर पर, और शायद इसी वजह से, अमरीकी प्रतिनिधि-मडल ने यह इच्छा प्रकट की कि हम लोग उनके देश मे भी जाय और वहा के युवक-आदोलन को समीप से देखे और समझें। उनके अनुभव से हम लाभ उठावे और अपने युवको के बारे मे भी वहा के नौजवानो को सारी बाते वतावे।

विश्व-युवक-सघ (वे) की भारतीय कार्य-समिति ने निर्णय किया कि १९५९ के आरभ मे एक ऐसा युवक-मडल अमरीका-प्रवास के लिए भेजा जाय, जिसे अधिक-से-अधिक नुमाइदगी प्राप्त हो। इस आधार पर समिति ने निम्न प्रतिनिधियो को मडल के सदस्यो के रूप मे चुना

१ श्री रामलाल पारिख (युवक काग्रेस)

२ डॉ० जी जी. पारिख (समाजवादी युवक सभा—प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का युवक-विभाग)
३ श्री आर नरसिमैया (यग फार्मर्स एसोसियेशन)
४ श्री पी टी कुरियाकोज (ऑल इडिया कैथलिक युनिवर्सिटी फेडरेशन)
५. कुमारी मालती वैद्यनाथन (बबई विश्वविद्यालय की एक छात्रा, भारतीय नृत्यकला मे निपुण)

श्री वीरेन जे० शाह, भारतीय विश्वयुवक-सघ के कोषाध्यक्ष, जो उस समय अमरीका मे ही थे, को भी सदस्य के रूप मे शामिल कर लिया गया। चूकि इन पक्तियो का लेखक भारतीय समिति का अध्यक्ष था, अत उसे इस प्रतिनिधि-मडल का नेता बनाया गया और इस प्रकार प्रतिनिधि-मडल की सदस्य-सख्या, अतत , सात हो गई।

हम लोग न्यूयार्क शहर मे पहुचे। वहा का जीवन बडा ही व्यस्त है। सभी लोग बराबर भाग-दौड मे रहते हैं। सारा काम बडी रफ्तार और फुर्ती से चलता है। लोगो की चाल भी तेज होती है। किसी व्यस्त सडक पर जब हम पहुचते तो उसी तेज रफ्तार से हमे भी चलना पडता। इतनी तेज चलने की आदत न होने से यह हमारे लिए थका देनेवाली बात होती थी।

हा, एक चीज हमे बहुत पसन्द आई। वह थी वहा की सडको का विभाजन। सारी न्यूयार्क नगरी छ -सात बहुत बडे रास्तो मे विभाजित है। उनको एवेन्यू कहते है और सबको अलग-अलग नाम दिये गए है। उनको जितनी भी छोटी-बडी सडके काटती हैं, उन सबको क्रमश. नबर दिये गए है—करीब १ से १५० तक। इसलिए किसी भी नये व्यक्ति को यदि शहर मे कोई जगह ढूढनी हो तो जरा भी दिक्कत नही होती। सडक का नबर बताते ही पता चल जाता है कि हमे किधर जाना होगा। घरो के नबर भी कुछ सख्या तक तो, मध्य की बडी सडक की एक तरफ होते है और बाकी के दूसरी तरफ। यह व्यवस्था समय बचाने के लिए बहुत ही उपयुक्त और सुविधाजनक लगी।

न्यूयार्क मे एक बडी समस्या हमे दिखाई दी। वह थी लोगो के

गाडी खडी करने की। आमतौर पर जिनके पास अपनी गाडी होती है, वे भी शहर के वाहर काफी दूर जाना होता हो तव, या फिर छुट्टियो के दिनो मे ही उसे निकालते हे। रोजमर्रा के जीवन मे तो वे जमीन के भीतर चलनेवाली रेल गाडी या वस के द्वारा ही घूमना पसद करते है। यह तरीका वहुत सुविधाजनक, समय बचानेवाला और सस्ता भी रहता है। गाडी पार्क करने के लिए जगह मुश्किल से मिलती है। मिल भी जाती है तो वहुत महगी पडती है। मुख्य सडको पर तो गाडी खडी कर ही नही सकते। आस-पास की गलियो मे जाना पडता है। वहा भी वहुत-सी सडको पर मीटर लगे हुए होते है। कई जगह आप आधे घटे से ज्यादा गाडी नही रोक सकते और कई जगह एक घटे से ज्यादा नही। जव गाडी रोकेगे तो मीटर मे निश्चित की हुई रकम भाडे के रूप मे डाल देनी पडती है। आधे या एक घटे के लिए जैसी जगह मिले, उसके अनुसार पच्चीस सेट से एक डालर तक भाडा चुकाना पडता है।

यदि हम किसीसे कही मिलने गये और आधे घटे से ज्यादा लग गया तो फिक्र हो जाती थी कि गाडी के पार्किंग का समय पूरा हो गया। यदि कोई किसीको खाने के लिए वुलाता है तो वह आनेवाला सवसे पहले यह सवाल पूछता है कि उनके यहा आने के लिए गाडी कहा पार्क करनी चाहिए। मोटर को लेकर उनके रोजमर्रा के जीवन मे अनेक परिवर्तन दिखाई दे रहे है। मोटर के वडे-वडे कारखाने और उनके मालिक तो वहा के राजनैतिक और सामाजिक जीवन मे वडा महत्वपूर्ण स्थान रखते ही है। इन्ही कारखानो के ऊपर अमरीका के अधिकतर लोहे के कारखानो का कार्यक्रम अवलवित रहता है। मोटरो की सख्या इतनी वढ गई है कि पार्किंग के लिए अलग-अलग वडे-वडे मैदान छोडने पडते है। कई मजिलो की ऊची-ऊची इमारते खास मोटर खडी करने के लिए वनानी पडती है।

शहरो और मकानो को तोड-ताडकर हर जगह नये-नये रास्ते वनाये जाते है। उनको चौडा किया जाता है। मुख्य रास्ते ग्राड ट्रक रोड, हाई वे, सुपर हाई वे आदि नाम से पुकारे जाते है। तेज चलने-वाली मोटरे अलग रास्तो पर से जाती है। लवी मुसाफिरी करने-

वाली गाडिया दूसरे खास रास्ते पर से जाती है। इसकी वजह से शहरो की रचना नये ढग से होती जा रही है।

होटलो मे भी क्रातिकारी परिवर्तन हो रहा है। पहले तो ऊचे-ऊचे जाने का प्रयत्न होता रहा। एक होटल चालीस मजिला बना तो दूसरा साठ का और तीसरा पिचहत्तर का। लेकिन अब शहर से कुछ दूरी पर सिर्फ एक मजिल के होटल बनने लगे है। इनको 'मोटल' कहते है। यह मोटर और होटल दो शब्दो से मिलकर एक नया शब्द बना है। मोटर मे बैठकर अपने कमरे के सामने आकर रुक जाय, ऐसी सुविधा इनमे है। 'ड्राइव-इन' का शौक बढता जा रहा है। हर जगह मोटर मे बैठे-बैठे काम हो जाय या अपने गतव्य स्थान के निकट-से-निकट तक मोटर मे बैठे-बैठे पहुच जाय, इसकी तरफ विशेष प्रवृत्ति है।

इसलिए अब वहा खुले बडे मैदान मे सिनेमा दिखाने का रिवाज बढ रहा है। आप अपनी मोटर मे बैठे-बैठे ही टिकट खरीदकर मोटर को मैदान मे लगा लीजिये और सामने बहुत बडे परदे पर मोटर मे बैठे-बैठे देख लीजिये। वहा पास मे खडा हुआ आदमी आपको एक छोटा-सा लाऊड-स्पीकर दे देगा। आप इसे मोटर मे रख लीजिये और कम-ज्यादा करके जितने जोर से चाहे उस आवाज मे सिनेमा की बातचीत सुन लीजिये। साथ ही यदि ठड हो तो वह बिजली का छोटा-सा हीटर भी दे देगा, जो आपको गरम किये रहेगा।

हम लोगो को न्यूयार्क के टैक्सी और बस-ड्राइवरो का अनुभव अच्छा नही हुआ। ये लोग शिष्टाचार-रहित व्यवहार करने मे कुशल है। स्त्रियो से भी नम्रता या सभ्यता से बात करने की उन्हे कोई परवा नही है। स्त्रियो को हुक्म देते हुए से बात करेगे। उनकी बातो का भी जवाब कई ड्राइवर तो बहुत बुरी तरह से देगे। मौका हुआ तो उन्हे झिडक देने मे भी उनको कोई सकोच नही होता।

यह जरूर है कि उनको सारे काम खुद करने पडते है। ड्राइवर के अलावा बस मे कोई कडक्टर नही होता। बस के दरवाजे खोलना, पैसे इकट्ठे करना, गाडी चलाना आदि सब काम उसीको करने पडते है।

इसके लिए उसको उठने की जरूरत नही पडती। बटन दबाते ही दरवाजे खुल जाते है और बन्द हो जाते है। पैसे लेने के लिए भी बहुत सुविधाजनक मशीन लगी रहती है। फिर भी उसका काम मुश्किल तो होता ही है। इसलिए उनमे से बहुत-से लोग चिडचिडे हो जाते है। आपने पूरे आवश्यक पैसे पहले से निकालकर नही रखे या यदि आप नये हो तो पूछे कि कितने पैसे देने हे या चिल्लर वापस देनी पडे तो उसको कठिनाई होती है। आप पूछे कि आपको फलानी जगह जाना है तो कहा उतरना चाहिए, यह भी सब ड्राइवरो को अच्छा नही लगता।

एक बार एक स्त्री, मेरे सामने ही, ड्राइवर से पूछ बैठी कि उसको जिस जगह जाना है, वह कितनी दूर है। ड्राइवर ने उसको झिडक दिया और बुरी तरह से कहा कि उसे क्या मालूम। स्त्री ने फिर अच्छी तरह से कहा कि उसे कहा उतरना चाहिए, यह तो बता दें, तब भी ड्राइवर ने कहा कि उसे स्वय जानकारी लेकर आना चाहिए था, वह कुछ नही जानता। स्त्री ने फिर कहा, "आप इतनी बुरी तरह से बाते क्यो करते है" तो उसका जवाब मिला, "मैं तो ऐसे ही बात करूगा, तुमको जो करना हो करो।" वह स्त्री तो बेचारी सिटपिटाकर अगले पडाव पर उतर पडी। यही हाल न्यूयार्क के कई टैक्सी-ड्राइवरो का हे। शाम को आफिस बद होने के समय टैक्सी मिलना मुश्किल हो जाता है। कई बार आधा-पौन घटे तक ठहरना पडता है। जहा भी गाडी खाली दिखाई दी दौडकर उसका ध्यान अपनी तरफ खीचकर उसे रोकने का प्रयत्न करना पडता है। कई बार वह किसी ड्यूटी पर जा रहा हो तो गाडी रोकता नही और ऐसी हालत मे आपको झुझलाहट होना स्वाभाविक ही है।

एक बार हम लोग अपनी एक अमरीकी महिला दोस्त के साथ थे। उसने हम लोगो को एक होटल मे चाय-पानी के लिए बुलाया था। बाहर आते ही टैक्सी मगाई। उसमे हम लोगो को साथ लेकर वह सवार हो गई। टैक्सी चली तो उसने अपने घर का पता ड्राइवर को बता दिया कि वह हमे वहा ले जाय। टैक्सीवाला आग-बबूला हो गया। वह

जगह सिर्फ दो-तीन फर्लांग थी। उसने तुरत कहा, "इतनी थोडी दूर जाने के लिए मुझे क्यो रोका ? इतना नजदीक तो आपको पैदल चला जाना चाहिए था। मुझे कई इकतर्फे रास्तो को बचाते हुए चक्कर लेकर जाना पडेगा। यह समय तो बडा व्यस्त और कमाई का है।" इत्यादि-इत्यादि। हमारी दोस्त भी कुछ अजीब जरूर थी। इतनी-सी दूरी के लिए उसको टैक्सी करने की आवश्यकता नहीं थी। फिर भी जब उसने टैक्सी कर ली तो टैक्सी-ड्राइवर का यह फर्ज था कि गतव्य स्थान पर हमको ठीक से पहुचा दे। अधिक-से-अधिक वह कुछ अधिक टिप की अपेक्षा रख सकता था। वह न केवल बोलता ही गया, बल्कि लडाई पर भी उतर आया। हमारी दोस्त ने तुनकमिजाजी से कहा कि गाडी यही रोक दे। गाडी रुक गई और हम वही उतर पडे। इसपर टैक्सीवाले ने कहा कि तुम तो इसलिए उतरना चाहते थे कि टिप न देनी पडे। हमारी दोस्त की मशा यह कतई नही थी। ड्राइवर का यह रुख देखकर हमको भी बहुत बुरा लगा और उस बेचारी दोस्त पर दया भी आई। उसने गुस्से में वही उतरकर एक डॉलर का नोट ड्राइवर को थमाया और चिल्लर वापस लिये बिना ही हम लोगो को लेकर अपने घर का रास्ता नापा।

: २ :

अमरीका का युवक-आंदोलन

अमरीका को देखने और वहा के लोगो से मिलने का आकर्षण हरेक भारतवासी के मन मे बना रहता है, इसलिए जब हम लोगो ने अमरीका की धरती पर पैर रखा, तब खुशी होना स्वाभाविक था। यह खुशी दुगुनी हो गई जब हमारे स्वागत के लिए वहा के अनेक युवक-सगठनो की सहकारिणी समिति के प्रतिनिधि खुले दिल से हमारे स्वागत के लिए तैयार थे। 'याक' अमरीका की 'नेशनल सोशल वेलफेयर असेबली' का युवक-विभाग है, जो अमरीका के करीब-करीब सभी प्रमुख युवक-सस्थाओ के काम को योजनाबद्ध करता है। भारत मे हमारी 'वर्ल्ड असेबली ऑव यूथ' की समिति, इसी नाम की जिस अंतर्राष्ट्रीय सस्था से जुडी हुई है, 'याक' का सबध भी उसी सस्था से है। अतर्राष्ट्रीय युवक-सम्मेलन मे अमरीकी युवको का प्रतिनिधित्व इसी सस्था की मार्फत होता है। अमरीका की 'नेशनल स्टूडेट्स एसोसियेशन', 'वाई एम सी ए', 'यग क्रिश्चियन वर्कर्स', 'वाई डब्ल्यू सी ए', आदि बडी-बडी शक्तिशाली युवक-सस्थाए इसकी सदस्य है। 'यग डेमोक्रेट्स' और 'यग रिपब्लिकन्स' ने भी इसके सदस्य बनकर इसकी ताकत बढाने का निश्चय किया है। इसके कारण अब तो यह सस्था, सभी मानो मे, अमरीका के युवको का प्रतिनिधित्व करनेवाली बन गई है।

अमरीका का युवक-आदोलन अभी तक मजबूत इसलिए नही बन पाया कि पहले शायद इसकी आवश्यकता भी इतनी महसूस नही होती थी, जितनी कि अब हो रही है। 'याक' की तरफ से किसी विदेशी युवक-प्रतिनिधि-मडल को आमन्त्रित करके अमरीका मे बुलाने का यह पहला ही अवसर था। जबसे उन्होने अपने काम के विस्तार करने का

निश्चय किया तबसे विदेशो से युवक प्रतिनिधियो को बुलाने और उनको अपना देश दिखाने पर काफी महत्व दिया गया है। इसी तरह से वे अपने युवक-नेताओ को भी अलग-अलग देशो मे भेजकर वहा की जानकारी से अवगत कराने के प्रयत्न मे है। जैसे ही हमारी दो महीने की यात्रा पूरी हुई कि पश्चिमी अफ्रीका के कई देशो का एक मिला-जुला युवक-मडल उनके आमत्रण पर वहा पहुच गया। इस तरह हम लोगो को अफ्रीका के साथियो से भी न्यूयार्क मे मिलने का मौका मिला। इसकी हम सभीको बडी खुशी हुई।

अमरीका मे हमने पूर्वी से पश्चिमी समुद्र तक और उत्तर से दक्षिण तक बारह प्राती का कोई आठ हजार मील का दौरा किया। प्रतिनिधि-मडल के सभी सदस्यो की विभिन्न आवश्यकताए ध्यान मे रखकर 'याक' ने हमारे प्रवास का बहुत ही सधा हुआ, सुनियोजित, कार्यक्रम बनाया था।

हमारे अमरीका-प्रवास का कार्यक्रम बहुत दिनो पहले से ही तय हो चुका था और हमारा वहा का दौरा औपचारिक रूप से शुरू होने की तारीख भी, सबकी सुविधानुसार, तय हुई थी। उस दिन हमारे 'याक' के साथियो ने एक प्रीतिसम्मेलन का आयोजन किया था। अनेक प्रतिष्ठित लोग, जो युवक-आदोलन मे रुचि रखते है, वहा इकट्ठे हुए थे। हमारे देश के राजदूत श्री एम० सी० छागला और न्यूयार्क-स्थित कौन्सल-जनरल श्री गोपाल मेनन भी उपस्थित थे। इस उत्सव के दिन

एसोसियेशन और 'नेशनल कौंसिल ऑव कैथोलिक यूथ' की तरह की अनेक सस्थाए तो बहुत बडी-बडी है। 'वाइ एम सी ए', 'वाइ डब्ल्यू सी ए' और 'यग क्रिश्चियन वर्कर्स' जैसी सस्थाए समाज-कल्याण के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। आम तौर पर युवक-सगठनो मे राजनैतिक चेतना की कमी है, कितु 'यग डेमोक्रेट्स', 'यग रिपब्लिकन्स' और 'नेशनल स्टूडेट्स एसोसियेशन' राजनीति की दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक सचेत है। कह सकते हे कि देश मे सक्रिय युवक-सगठन तो बहुत है, लेकिन राष्ट्रव्यापी स्तर पर किसी युवक-आदोलन का अस्तित्व नही है। अब वे अपनी इस कमी को महसूस करने लगे है और इस दिशा मे प्रयत्नशील है। 'यग डेमोक्रेट्स' और 'यग रिपब्लिकन्स' सस्थाए, जितनी उम्मीद की जाती है, उतनी मजबूत और सुसगठित नही है। पिछले कुछ समय से अमरीका के दोनो प्रमुख दल—डैमोक्रैटिक दल और रिपब्लिकन दल—एक सुसगठित देशव्यापी युवक-आदोलन की आवश्यकता अनुभव करने लगे है, और शायद इसी कारण इन दोनो राजनैतिक दलो के इन युवक-विभागो ने 'याक' मे शामिल हो जाने का निश्चय किया है। 'याक' अपनी तरफ से भी देश के युवक-सगठनो की प्रवृत्तियो को सुसगठित और सुनियत्रित रूप मे चलाने का बहुत प्रयत्न करता है, ताकि एक जागरूक और रचनात्मक युवक-आदोलन का निर्माण हो सके।

'नेशनल स्टूडेट्स एसोसियेशन' अमरीकी विद्यार्थियो की एकमात्र सस्था के रूप मे सरकार द्वारा मान्य है। इसके कार्यकर्ताओ से हमने कई बार मुलाकात की। यह विद्यार्थियो की सबसे प्रमुख सस्था है। इसका मुख्य दफ्तर फिलेडलफिया मे है। इस सस्था को सगठित हुए कोई बारह वर्ष हो गये। कोई व्यक्ति सीधा इसका सदस्य नही बन सकता। कालेजो और विश्वविद्यालयो की विद्यार्थियो की सरकारे इसकी सदस्य है। फिलहाल, कहते है, इस एसोसियेशन से सबधित सस्थाओ की सदस्य-सख्या करीब दस लाख है। यह बीस क्षेत्रो मे विभाजित है। इसकी कार्यकारिणी इन बीसो क्षेत्रों के अध्यक्ष और चालीस हजार विद्यार्थियो का प्रतिनिधित्व करनेवाले क्षेत्र से एक-एक सदस्य को लेकर बनती है।

एसोसियेशन की ओर से हर वर्ष एक अतर्राष्ट्रीय सपर्क सेमीनार का आयोजन किया जाता है। एसोसियेशन के छ चुने हुए पदाधिकारी है, जिनमे से एक को छोडकर शेष सब पूरा समय देनेवाले कार्यकर्ता है। ये लोग अपनी एक साल की पढाई छोडकर एसोसियेशन का कार्य-भार सभालते है।

जो पदाधिकारी चुने जाते है, वे विद्यार्थियो मे से ही होते है। पर चूकि चुने जाने पर उन्हे सस्था का काम दिल लगाकर और पूरा समय और शक्ति देकर करना चाहिए, इसलिए उनको पदाधिकारी रहने के समय तक पढाई छोडनी पडती है। यही कारण है कि सस्था इतनी सशक्त हो पाई है। यह पद्धति हमे पसन्द आई। एक बार चुना गया व्यक्ति दुबारा उसी पद पर नही चुना जा सकता। इन पदाधिकारियो को नियमित भत्ता भी सस्था की तरफ से मिलता है। क्योकि ये अपना पूरा समय सस्था के काम के लिए देते है, इसलिए इसकी आवश्यकता हो जाती है।

उनकी 'विद्यार्थी-सरकारे हमारे विद्यार्थी-सघो के समान ही है, किंतु उनका दायरा और अधिकार अपेक्षाकृत विस्तृत है। वे विद्यार्थियो की आम सभाओ द्वारा निर्वाचित होती है और विभिन्न अधिकारो से सपन्न होती हे। स्पोर्ट और खेल-कूद की प्रवृत्तिया उनके ही नियत्रण मे चलती है और यह उनकी आमदनी के सबसे बडे स्रोत भी है। वे स्टूडेट कोआपरेटिव स्टोर्स, किताबो की दूकानें, कैफे-टीरिया इत्यादि का प्रवध भी अपने अधिकार मे रखती है। अनेक विद्यार्थी-सरकारो को न्याय के अधिकार भी प्राप्त है। ये सरकारें विद्यार्थियो मे नेतृत्व के प्रशिक्षण केद्रो के रूप मे अत्यत लाभदायक सिद्ध हुई है। इन विद्यार्थी-सरकारो के द्वारा विश्वविद्यालयो के क्षेत्रो मे अनेक अखबार भी निकलते है, जिनमे दैनिक भी होते है। एक यूनिवर्सिटी कैंपस से प्रकाशित होनेवाले एक दैनिक को नगर का प्रतिष्ठित पत्र होने का सम्मान प्राप्त है।

एनआर्बर युनिवर्सिटी की विद्यार्थियो की सरकार अपना खुद का एक दैनिक निकालती है। इसकी दस हजार प्रतिया रोजाना छपती

है। अखबार से सालाना १ लाख ५० हजार डालर आते है। मुख्य कमाई विज्ञापन के द्वारा होती है। विद्यार्थी-सरकार का सालाना खर्च करीब वारह हजार डालर होता है।

ऊपर विद्यार्थी-सरकारो के पक्ष मे कहा गया है, किंतु हम यह भी कहेगे कि विद्यार्थियो की स्कूल-कालेजो से अतिरिक्त प्रवृत्तियो के वौद्धिक पक्ष की ओर कम ध्यान दिया जाता है। केवल सामाजिक जीवन पर ही अधिक वल दिया जाता है।

देश के प्रगतिशील तत्वो, विशेपकर युवको के वीच, डेमोक्रेटिक पार्टी अधिकाधिक लोकप्रिय होती जा रही है। वे खूव परिश्रम कर रहे है, और पूरी उम्मीद करते है कि अगले राष्ट्रपति के चुनाव मे उनका दल ही विजयी होगा।[1] हा, उन्हे पूरा निश्चय है कि चुनाव का यह सघर्ष वडा जोरदार सिद्ध होगा। जव हम लोग अमरीका मे थे तव ये चार व्यक्ति ही मैदान मे थे—निक्सन और राकफेलर रिपब्लिकन दल की ओर से, केनेडी और हफ्री डेमोक्रेटिक दल की ओर से।

यहा हम खास तौर पर अमरीकी विद्यार्थियो और आम तौर पर वहा के युवको के इस रुख का जिक्र करना चाहेगे, जो उन्होने अमरीकी राजनीति, अर्थनीति और सामाजिकता के सवध मे अपनाया है। वे अपनी इन नीतियो के प्रति कुछ इतने ज्यादा सतुष्ट हैं कि इन क्षेत्रो मे किसी भी तरह के परिवर्तनो की सभावनाओ पर विचार ही नही करना चाहते। 'अमरीकी जीवन-शैली' के वे अध-भक्त से हो गये है। वेहिचक, विना किसी नुक्ताचीनी के, उन्होने उसे स्वीकार कर लिया है। परिणामस्वरूप उनकी धारणा वन गई है कि जीवन का इससे अच्छा और कोई तरीका हो ही नही सकता। इस विश्वास के कारण नये विचारो को ग्रहण करने का वे आम तौर पर प्रतिकार करते है।

अमरीका मे पढनेवाले भारतीय विद्यार्थियो के सवध मे कुछ कहना हमे कठिन प्रतीत होता है, क्योकि तीन हजार विद्यार्थियो मे से हम वहुत थोडे विद्यार्थियो से ही मिल पाये थे। किंतु हमने उनके

[1] यह सत्य निकला, श्री केनेडी निर्वाचित हो गये।

सबध मे, जिन विश्वविद्यालयो मे हम गये, वहा के अधिकारियो और विदेशी विद्यार्थी-परिपदो की राय जानने का प्रयत्न किया। उनकी राय मे ज्ञान के क्षेत्र मे हमारे विद्यार्थियो को विदेशी विद्यार्थियो मे बहुत ऊचे दर्जे का स्थान प्राप्त है। कितु उनके विरुद्ध आम तौर पर एक शिकायत सभी जगह सुन पडती है। वह यह कि भारतीय विद्यार्थी प्राय एकात-प्रिय होते है। वे लोगो मे अच्छी तरह घुलते-मिलते नही। कुछ दार्शनिक प्रवृत्ति के होने के कारण अहिसा, सास्कृतिक परपरा और आत्मा-परमात्मा के बारे मे ही ज्यादा बाते करने की ओर उनका झुकाव रहता है। हमे ऐसा भी बताया गया कि हमारे विद्यार्थी अपना एक अलग ही दल बनाकर उसीमे विचरते है और दूसरो से मिलना-जुलना कम पसद करते है।

उनकी भी अपनी कई कठिनाइया है। ये नवयुवक शिक्षा के क्षेत्र मे अच्छी प्रगति करके भी शायद कुछ कुठाओ के शिकार है, विशेषकर वे अपने भविष्य के सबध मे एक निश्चयहीनता से आशकित हैं। वे हमारे देश के सर्वश्रेष्ठ बुद्धिजीवियो मे से है और यदि वे स्थायी रूप से अमरीका मे बस जाने का निश्चय कर ले तो उन्हे अच्छी-खासी नौकरियो की कोई कमी नही होगी, कितु उनमे से अधिकाश, देश-भक्ति की भावनाओ से प्रेरित होकर, स्वदेश मे ही, अपेक्षाकृत कम वेतन पर भी, काम करने के इच्छुक है, यद्यपि वे जानते है कि इसमे उन्हे काफी आत्म-त्याग करना पडेगा। हमे टेकनिकल शिक्षा-प्राप्त युवको की बहुत आवश्यकता है। दुर्भाग्य से ठीक-ठीक व्यवस्था न होने से हम इन प्रशिक्षित नौजवानो को उचित वेतन और उचित पद पर नियुक्त नही कर पाते। परिणाम यह होता है कि हमारे अनेक नव-युवक वही रह जाने का आर्कपण रोक नही पाते, या सिवा वही नौकरी कर लेने के उनके सम्मुख और कोई चारा नही होता। हम उनकी उपयोगी योग्यताओ का लाभ नही उठा पाते। अपनी सरकार से अपेक्षा की जाती है कि इस समस्या पर वह पूरी गभीरता से ध्यान दे, ताकि हमारे देश को इन सुशिक्षित नवयुवको का देश की उन्नति और विकास मे पूरा उपयोग मिल सके।

हमे पूरी सतर्कता से यह प्रयत्न करना चाहिए कि अमरीकी जनता हमारी विचार-धारा और हमारे देश से अधिक तथा स्पष्ट रूप से परिचित हो सके। ऐसे गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मडल, जैसाकि हमारा था, सरकारी प्रतिनिधि-मडलो की अपेक्षा कही अधिक अच्छे सबध स्थापित कर सकते हैं। अनौपचारिक रूप से अपेक्षाकृत बहुत अधिक कार्य कर सकते है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि भिन्न-भिन्न क्षेत्रो से जितने ही अधिक सद्भाव-मडलो का गैरसरकारी स्तर पर आना-जाना होगा, उतने ही हमारे दोनो देश एक-दूसरे के दृष्टिकोण को अच्छी तरह समझकर एक-दूसरे के अधिकाधिक समीप आएगे। हमारे स्वदेश वापस लौटने पर अमरीका मे स्थित भारतीय राजदूत श्री छागला, कौसल-जनरल श्री गोपाल मेनन के आये हुए पत्रो से भी इस धारणा की पुष्टि होती है।

इस प्रवास से हमे जो कुछ अनुभव हुआ, वह हमारे देश के लिए बडा उपयोगी सिद्ध हो सकता है। हमे आशा है कि इन अनुभवो के कारण हम यहा पर एक शक्तिशाली और सगठित युवक-आदोलन स्थापित करने की दिशा मे और अधिक सक्रियता से प्रयत्नशील हो सकते हैं, जोकि देश के प्रजातात्रिक विकास और उन्नति मे अपना पूरा सहयोग देगा। यह कार्य किसी एक सगठन के द्वारा अकेले ही पूरा नही किया जा सकता। हमारे युवको के सम्मुख प्रजातत्र की सफलता का महान कार्य है। हम अपने उद्देश्यो मे तभी सफल हो सकते हैं जब हमारे लाखो युवक-युवतिया पूरी शक्ति से अपना कर्तव्य निभाने मे लग जाय। इसके लिए आवश्यकता है एक ताकतवर और सगठित युवक-आदोलन की। हमे आशा है, विश्व-युवक-सघ की भारतीय शाखा देश के समस्त प्रजातात्रिक युवक-सगठनो को एक ही झडे के नेतृत्व मे सगठित करके इस शुभ उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा मे अग्रसर होगी।

: ३ :

कुछ प्रमुख मुलाकातें

न्यूयार्क मे हमे श्रीमती फ्रैकलिन रूजवेल्ट से मिलकर बडी प्रसन्नता हुई। उनके हृदय मे हमारे प्रधानमत्री के प्रति बडा आदर-भाव दिखाई दिया। उनकी वैदेशिक नीति की भी वह बडी प्रशसक है। उन्होने कहा कि हमारे देश की विदेश-नीति बिलकुल सही है और सघर्षो मे फसी हुई आज की इस दुनिया के लिए शायद सबसे बडी उम्मीद है। श्रीमती रूजवेल्ट सचमुच एक महान महिला है। इनका व्यक्तित्व एकदम सादा होते हुए भी बडा प्रभावशाली है। इतनी उम्र हो जाने पर भी इतना काम करती है कि हम नौजवानो को उन्हे देखकर ईर्ष्या होना स्वाभाविक है। दिन-रात सामाजिक सेवा मे लगी रहती है। कोई काम छोटा हो या बडा, उसे करने मे किसी तरह से सकुचाती नही है। बडा व्यस्त और परिश्रमी जीवन-क्रम बना रखा है। इतनी मिलनसार है कि उनसे मिलकर हमें लगा कि हम किसी अपने ही निकट के जान-पहचानवाले, सहानुभूति रखनेवाले व्यक्ति से मिले हो। उनकी मिठास और सबकी हर तरह से मदद करने की वृत्ति सबके मन को जीत लेती है।

न्यूयार्क मे जिस समय हम थे, वहा श्री रूजवेल्ट के जीवन को दर्शाने-वाला नाटक चल रहा था। हम भी उसे देखने गये। बडे सुदर ढग से उनका चरित्र-चित्रण किया गया था कि किस तरह पोलियो के आक्रमण से उनका शरीर कृश हो गया था, फिर भी मजबूत इच्छा-शक्ति से उन्होने हर कठिनाई का सामना किया और अपने मुल्क के नेता बने और अनेक वर्षो तक अमरीका के भाग्य-विधाता बने रहे। श्रीमती रूजवेल्ट को ऐसे विशिष्ट व्यक्ति की जीवन-सगिनी बनने का सौभाग्य मिला था। उनका बचपन और शादी के बाद का भी जीवन वर्षो तक एक मामूली, शर्मीली और सामान्य घरेलू स्त्री के समान ही बीता, पर धीरे-धीरे उन्होने मेहनत

और सतत सेवा करके अपने खुद के लिए अमरीका के लोगो के हृदय मे हमेशा के लिए स्थान वना लिया।

न्यूयार्क मे हमे श्री नार्मन टामस से भी मिलने का अवसर मिला। वह पिछले राष्ट्रपति के चुनाव मे एक उम्मीदवार थे। श्री टामस समाजवादी आदोलन के समर्थक है। वह गहरे विचारक है। उनका दावा है कि उनके अनेक सिद्धातो को, अमरीकी राजनैतिक पार्टियो ने, धीरे-धीरे स्वीकार कर लिया है। उनके विचारो की एक झलक हमे उनके इस कथन मे मिली—"चूकि मैक्सिको के मजदूर-वर्ग का काम सिर्फ मौसमी है, वे अपने-आपको पूरी तरह सगठित नही कर पाये है। नतीजा यह हुआ कि मालिक वर्ग उनकी इस कमजोरी का नाजायज फायदा उठा रहा है।" जब उनसे यह प्रश्न किया गया कि अमरीकी मजदूर-वर्ग ने गत चुनाव मे सोशलिस्ट पार्टी के विरुद्ध डेमोक्रेटिक पार्टी को अपने मत क्यो दिये, तब उन्होने कहा, "यह मसला वडा उलझा हुआ है। शायद अमरीकी जनता दो पार्टियो की प्रणाली की इतनी अभ्यस्त हो गई है कि एक तीसरी पार्टी का जन्म उसको पसद नही आया। इसके अलावा मजदूर-वर्ग भी सोशलिस्ट पार्टी के क्रातिकारी परिवर्तनो के लिए कहा पूरी तरह से तैयार था?"

न्यूयार्क से हम वाशिगटन गये। वहापर हम 'यग रिपब्लिकन्स' और 'यग डेमोक्रैट्स' के मेहमान थे। 'यग डेमोक्रैट्स' के एक्जीक्यूटिव सेक्रेटरी श्री रिचर्ड मर्फी ने हमे डेमोक्रेटिक पार्टी के इतिहास से परिचित किया। उन्होने कहा कि उनकी पार्टी का दृष्टिकोण, सरकार के अधिकाधिक अधिकार ग्रहण करने, जनहित मे खूब खर्च करने और सामाजिक सुरक्षा के कार्यक्रमो के सचालन के पक्ष मे है।

श्री मीड आलकार्न ने, जो उस समय अमरीका पर राज्य करनेवाली रिपब्लिकन पार्टी के अध्यक्ष थे, हमे वताया कि रिपब्लिकन पार्टी केंद्रीय सरकार के पास अधिक अधिकार होने के पक्ष मे नही है। वे चाहते है कि प्रात मे और आम जनता के हाथो मे अधिक शक्ति हो, नही तो देश तानाशाही की तरफ वढ सकता है। उनके हिसाव से डेमोक्रैट्स और उनमे इस बात को लेकर मूलभूत अतर है। उन्होने यह भी कहा कि

महत्वपूर्ण आर्थिक नीति मे उनकी पार्टी 'कजरवेटिव' है । वे मानते है कि राष्ट्रीय आय से ज्यादा खर्च कर देना देश के हित मे नही है । जैसे एक घर मे होता है, उसी तरह देश मे भी । कमाई से अधिक खर्च करना लाभदायी कैसे हो सकता है ? श्री आलकार्न ने बताया कि उनकी पार्टी का विश्वास तो एक सतुलित बजट और सरकार के द्वारा अपेक्षाकृत कम खर्च करने के पक्ष मे है । डेमोक्रेट्स, इसके विपरीत, खर्च बढाने के पक्ष मे है। लेकिन इसका मतलब यह हुआ कि वे अपनी जवाबदारी आनेवाली पीढी के ऊपर डाल देना चाहते हैं । जहातक खेती का सवाल है, वे, किसानो को अपनी पैदावार का कम-से-कम एक निश्चित भाव जरूर मिले, इस पक्ष मे हैं । उन्होने यह भी बताया कि अमरीका मे पाच हजार डालर से ज्यादा कोई व्यक्ति एक वर्ष मे किसी भी राजनैतिक पार्टी को धर्मादा नही कर सकता । जाइट स्टाक कपनी तो राजनैतिक पार्टियो को चदा दे ही नही सकती ।

हम कृषि-विभाग के कुछ अधिकारियो से भी मिले, जिनमे कृषि-विभाग के सेक्रेटरी श्री इजरा टेफ्ट बेसन भी थे। बातचीत का विषय था—४-एच आदोलन और आवश्यकता से अधिक फसल का होना। हमे बतायागया कि प्रतिवर्ष करीब नब्बे लाख डालर की कीमत की अतिरिक्त पैदावार होती है, और इसका ठीक से बटवारा करने मे उन्हे कठिनाई होती है । यहातक कि इसे यदि विदेशो को मदद के रूप मे दे भी दिया जाय तो अन्य देशो मे उसका भी उग्र विरोध किया जाता है। ४-एच कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यह है कि अपने सदस्यो को अच्छा किसान बनाया जाय । इसके लिए उनकी मदद कुछ इस ढग से की जाय कि वे अपने तजुर्बे से खुद-ब-खुद सीखे। ४-एच क्लब की सदस्यता ६ वर्ष से लेकर २१ वर्ष तक के लडके-लडकियो क लिए खुली हुई है । सारे देश मे ऐसे हजारो क्लब खुले हुए हे और बहुत उपयोगी काम कर रहे है ।

जब कृषि-विभाग के अधिकारियो ने हमसे कहा कि उस समय उनके सामने बडी-से-बडी समस्या यह है कि आवश्यकता से अधिक ज अनाज पैदा हो गया हे उसका क्या करे । हमने कहा कि यह बात अ

हमसे करते है तब हमे ताज्जुब होता है। आपके यहा अधिक है और हमारे यहा कमी है। दोनो साथ मे बैठकर बाते कर ले तो जरूर कोई-न-कोई समाधानकारक रास्ता निकल आयगा। उन्होने कहा कि अगर कोई जहाज का किराया देकर ही यह अनाज यहा से ले जाय तो हम खुशी से देने को तैयार है, बशर्ते इससे दूसरे देशो मे असतोष न फैले। अन्य देशो के गेहू की खपत कम हो या भाव गिर जाय तो वे हमसे नाराज होते है। इसलिए इससे कठिनाइया खडी हो जाती है।

ओर्गो के एक डेमोक्रेट नेता, सिनेटर डब्लू० मोर्स से हमारी मुलाकात हुई। उन्होने आइजनहॉवर की शासन-व्यवस्था और रिपब्लिकन पार्टी की बडी आलोचना की। उनकी राय मे रिपब्लिकन पार्टी चद शक्तिशाली प्रतिगामियो का एक सगठन है। वे खुद पार्टी के अनुशासन को कोई ज्यादा महत्व नही देते है। उनके मत मे किसी भी पार्टी का उद्देश्य आम जनता का कल्याण करना होना चाहिए, न कि महज कार्पोरेशनो के हितो की रक्षा मे लगे रहना। डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकनो के दृष्टिकोण मे यही अतर प्रमुख है। हा, रिपब्लिकनो मे भी कुछ सिनेटर अपेक्षाकृत उदार दृष्टिवाले जरूर है, लेकिन जब मत देने का मौका आता है, तब वे उतने उदार नही रह पाते, क्योकि उनकी एक आख अगले चुनाव पर भी तो लगी रहती है। सिनेटर मोर्स की राय मे स्वर्गीय श्री डलेस की विदेश-नीति सपूर्णत अनैतिक थी। विश्व-शाति के सबध मे उन्होने कहा, "आज रूस और अमरीका दोनो ही देश समान रूप से विश्व-शाति के लिए खतरा पैदा किये हुए है, क्योकि दोनो ने ही हाइड्रोजन बम को अपनी नीति का आधार बना रखा है।" उन्हे उम्मीद थी कि भारत हमेशा तटस्थ ही बना रहेगा। उन्होने कहा कि हा, यह कहने का हक उन्हे हासिल नही है कि हमारा देश सचमुच मे किसी हद तक तटस्थ है।

जब हम वाशिंगटन गये तब वहा भी हमे कई नामी नेताओ से मिलने का अवसर मिला। श्री चेस्टर बाउल्स ने, जो भारत के भूतपूर्व राजदूत रह चुके है, एक मुलाकात के दौरान मे हमसे कहा कि १९६० का वर्ष सारी दुनिया मे नव चेतना लाने के लिए बडा ही रचनात्मक एव कर्मशील । अमरीका के लोग दो युगो मे से गुजर चुके है। पहले वे अग्रेजो से

स्वाधीन हुए। इस प्रयत्न मे अमरीका के अधिकतर लोग शामिल हुए। लेकिन कुछ ऐसे भी थे, जिन्होने इसका विरोध किया। उसके बाद जमाना आया सीमित प्रजातत्रवाद का। शुरू मे मताधिकार सिर्फ जमीदारो और पैसेवालो को मिला। स्त्रियो को तो मताधिकार था ही नही। लेकिन अब उनका देश ऐसी क्राति के लिए तैयार हो रहा है, जोकि हर व्यक्ति की क्राति होगी और जिसका लाभ हर व्यक्ति को मिलेगा। उनके देश में अब भी पैंतीस लाख आदमी बेकार है। करीब पाच करोड लोग ऐसे है, जो अपने धधो से असंतुष्ट होने के कारण उन्हे बार-बार बदलते रहते है। सारे देश मे करीब छ करोड सत्तर लाख लोगो को नौकरी मिली है।

श्री बाउल्स ने कहा कि अमरीका मे हिदुस्तान के लिए बडी गहरी मित्रता की भावना है। विशेषत हमारी पचवर्षीय योजनाओ को मदद पहुचाने के विषय मे तो उनमे बडी ही जागरूकता है। उनकी राय में अमरीका को चाहिए कि विदेशो मे अधिक प्रशिक्षित विशेषज्ञ ही भेजे। अमरीका के युवक एक उलझे हुए और कुठित दौर मे से गुजर रहे है। सौभाग्य से अमरीकी जनता इस दौर के खतरो को समझने लगी है।

उन्होने यह भी कहा कि चीन और रूस के दृष्टिकोण मे कई बातों को लेकर अतर पडना सभव है और आगे-पीछे वे एक-दूसरे से मिलकर काम न करे, यह भी सभव है। काश्मीर के बारे मे उनकी राय थी कि यदि हम अतर्राष्ट्रीय अदालत मे जाते तो हम जीतते और हमारे लिए वही करना उचित था।

जज सौध से भी हमारी मुलाकात हुई। ये एक भारतीय हैं, जो कई वर्षो से अमरीका मे वस गये है और इस बार वहा की पार्लमेंट मे चुने गए है। उन्होने कहा कि पार्लमेंट मे चुने जाने के बाद उनके पास अपने चुनाव-क्षेत्र से आम नागरिको की तरफ से करीब पचास-साठ चिट्ठिया रोज आ जाती है। वहा उनके लिए यह आवश्यक है कि वह ऐसी हर चिट्ठी का जवाब दे। अमरीका के लोग हिदुस्तान के बारे मे बहुत कम जानते है। हमे अधिक प्रयत्न करके वहा के लोगो को अपने देश के बारे मे सही-सही जानकारी देना आवश्यक है। हिदुस्तान के लोगो को अमरीका के बारे मे बेमतलब की टीका-टिप्पणी करना बद कर देना चाहिए। एक-दूसरे

उपदेश देने से कोई लाभ नही होता। उन्होने कहा कि दरअसल भारत और अमरीका दोनो ही देश आपस मे एक-दूसरे से बहुत-कुछ सीख सकते है। उन्होने यह भी बताया कि अमरीकी युवको की सबसे बडी विशेषता यह है कि वे नये-नये तौर-तरीको का प्रयोग बहुत उत्साह के साथ करते है। हाथ से काम करने मे वहा जरा भी तौहीन या बुराई नही मानी जाती। भारतीय नौजवानो को अमरीकी नौजवानो से यह सबक तो सीख ही लेना चाहिए। काश्मीर की समस्या पर जज सौध ने कहा कि उस मसले के बारे मे अमरीकी जनता को अपेक्षाकृत सही जानकारी नही है। इसलिए वहा के अधिकाश अखबारो का रुख भारत के प्रति सहानुभूतिपूर्ण नही है। "लेकिन", जज सौध ने कहा, "अमरीकी जनता के मन मे भारत के विरुद्ध कोई ठोस अमैत्रीपूर्ण भाव नही है।"

वाशिगटन मे रहते हुए हम तीन और बडे महत्व के सिनेटरो से मिल सके। श्री जान केनेडी[1], श्री ह्य बर्ट हम्फ्री और श्री शर्मन कूपर। श्री कूपर तो भारत मे अमरीकी राजदूत के पद पर भी रह चुके है। उन्होने आशा प्रकट की कि इस प्रकार के और भी अनेक प्रतिनिधि-मडल भारत से अमरीका आय। श्री केनेडी और श्री हम्फ्री दोनो ही बडे व्यस्त व्यक्तियो मे से थे। ये दोनो ही उस समय डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से अमरीका के भावी प्रेसीडेट होने की तैयारी मे लगे हुए थे। श्री केनेडी को तो उसी दिन एक बिल पर भाषण देना था, जिसका ताल्लुक भारत से भी था। फिर भी जब उनको पता चला कि हम भारत से युवको का एक प्रतिनिधि-मडल लेकर आये है तो वे अपनी सीट छोडकर ऊपर गेलरी मे हमसे मिलने के लिए आ गये। कुछ गलतफहमी होने से जब वह ऊपर आये, हमलोग इधर-उधर हो गये थे। वह एक बार नीचे जाकर फिर दुबारा हमसे मिलने के लिए ऊपर आये। हमारी कुशलक्षेम पूछी और अपनी शुभकामनाए जताई। हमारे 'याक' के साथी श्री फ्रेक फरारी से पूछा कि हमे किसने निमन्त्रित किया है और खर्चे आदि की व्यवस्था कैसे हुई है। श्री केनेडी अमरीका के एक बहुत बडे धनी परिवार के है। वहा के इतने महत्वपूर्ण नेता होते हुए भी वह हमसे बडे मित्र-भाव से मिले। उनका व्यक्तित्व बडा सौम्य और सज्जनता से भरा हुआ

[1] अब अमरीका के राष्ट्रपति

मालूम दिया। उनके मित्रतापूर्ण व्यवहार का हम सभी पर अच्छा असर पडा।

श्री हफ्री भी ऊचे दर्जे के और बडे योग्य नेताओ मे से है। उनसे थोडी-सी देर के लिए ही मुलाकात हो सकी। उन्होने भी हमे अपनी शुभकामनाए दी। अमरीकी प्रेसिडेट पद के लिए चार प्रमुख उम्मीदवारो में से दो से वाशिगटन मे और बाद मे तीसरे, श्री राकफेलर से न्यूयार्क मे मिलने का हमे सौभाग्य मिल सका। इसकी हमे बडी खुशी हुई और इसके लिए हम 'याक' के हमेशा आभारी रहेगे।

मिशिगन प्रदेश के गवर्नर श्री विलियम्स से भी मिलने का हमे मौका मिला। ये डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता है। उन्होने बताया कि अमरीका मे हर दस व्यक्तियो के पीछे कम-से-कम एक को, जन्म से मृत्यु-पर्यत के जीवन-काल मे, किसी भी समय एक बार तो पागलखाने मे जरूर जाना पडता है। अमरीका मे भी वहा की राष्ट्रीय आय के अनुपात मे आबादी अधिक तेजी से बढ रही है। प्रात मे जो टैक्स लगाया जाता है, उसका करीब ७५% केद्रीय सरकार इकट्ठा करती है। केद्रीय सरकार शिक्षण के लिए ३½% खर्च करती है। श्री विलियम्स, जिनको लोग प्रेम से 'सोपी विलियम्स' कहते हैं, बहुत लोकप्रिय है। उन्होने बताया कि केंद्र मे रिपब्लिकन सरकार है और वे डेमोक्रेटिक गवर्नर है फिर भी आपस में काम करना उतना मुश्किल नही है, जितना कि लोग अदाज लगाते हे। वे अपेक्षाकृत एक सुदृढ और सुनियत्रित पार्टी सगठन मे विश्वास करते है, किंतु यह आवश्यक नही मानते कि केंद्रीय सरकार को ज्यादा अधिकार दिये जाय। उनका कहना था कि शिक्षा आदि विषयो मे विकेंद्रीकरण जरूर होना चाहिए। यह प्रजातत्र के लिए अधिक अनुकूल है। विकेंद्रीकरण से हिटलरो की सभावना घट जाती है।

बोस्टन के मुख्य अखबार 'बोस्टन डेली ग्लोब' के मालिको ने हम लोगो के सम्मान मे एक छोटा-सा भोज दिया था। समारोह की व्यवस्था उन्होने अपने अखबार के नये भवन मे ही की थी, जिससे हमे अखबार छपने की पूरी विधि भी बताई जा सके। इस कारखाने मे अखबार छापने की एकदम नई मशीन लगी है। सारी व्यवस्था मानो एक मशीन के

लगातार चौबीसो घटे नियमित रूप से चलती रहती है। प्रत्येक दिन इस अखबार के करीब बीस सस्करण निकलते है। जैसे-जैसे खबरे आती रहती हैं, नये सस्करणो मे उनको शामिल कर लिया जाता है। आस-पास के गावो मे जानेवाले सस्करण अलग होते है। सारा काम बडा व्यवस्थित था और लोगो को फुर्ती से काम करते हुए देखकर अच्छा लगा। हम लोगो को तो कौन-सा सस्करण नया है और कौन-सा पुराना, इसीको समझने मे बडी कठिनाई होती थी।

सारे अखबार की छपाई मे विज्ञापन की छपाई का विभाग बहुत बडा है। कमाई भी तो विज्ञापनो से ही होती है न ? अखबार मे विज्ञापन ही जगह भी ज्यादा घेरते है।

यह अखबार अमरीका के थोडे-से प्रगतिशील अखबारो मे से एक है। इसके सपादक-मडल ने हम लोगो से भारत के बारे मे कई सवाल पूछे और अपनी शुभकामनाए प्रकट की।

बोस्टन मे वाई० एम० सी० ए० की एक बहुत बडी शाखा है। इनकी वार्षिक सभा मे हम लोगो को सम्मानित अतिथियो के रूप मे आमन्त्रित किया गया था। प्रेसिडेट आइजनहोवर के सलाहकारो में से एक सज्जन उस सभा के मुख्य वक्ता थे।

जब हम हार्वर्ड पहुचे तो वहा के बिजनेस स्कूल के अधिकारियो ने हम लोगो को दोपहर के खाने के लिए निमन्त्रित किया। उन्होने अपने स्कूल की मुख्य-मुख्य विशेषताए बतलाई और कहा कि वे चाहते है कि उनके अनुभवो का लाभ हिदुस्तान के उदीयमान नवयुवको को प्राप्त हो। अधिक सख्या मे हमारे यहा के विद्यार्थियो को वहा जाने मे अनेक तरह की कठिनाइया थी। खर्च का तो प्रश्न था ही। उनको भी अपने देश के युवको की तरफ ध्यान देना लाजमी था। एक विदेशी लडके को वे ले तो उसका मतलब है कि उनके यहा के एक लडके को उसकी विशेष पढाई से वचित रखे। इसलिए वे सोच रहे थे कि उनके शिक्षको को बीच-बीच मे एशिया के देशो मे थोडे-थोडे समय के विशेष कोर्स लेने के लिए भेजे, जिससे यहा के लोग उनका अधिक-से-अधिक फायदा उठा सके। हम लोगो को कल्पना पसद आई, क्योकि हमारे देश मे बढते हुए औद्योगीकरण के

लिए इस तरह की विशेषता प्राप्त किये हुए नवयुवको की बहुत आवश्यकता हो गई है। जो व्यापार और उद्योग चलाते हैं, वे यदि इस तरह के प्रगतिशील विचारो को समझे और जाने तो उससे हमारे उद्योगो को सही रास्ते पर चलाने और उनको बढाने मे मदद मिलेगी।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय अमरीका के विश्वविद्यालयो मे सबसे अधिक पुराना और सबसे अधिक धनवान भी है। जिस समय हम वहा गये थे, उनको और धन की आवश्यकता थी और वे करीब आठ करोड डालर से कुछ अधिक धन इकट्ठा करने की फिराक मे थे। इससे पता चल सकता है कि उनका कार्यक्षेत्र कितना विस्तृत है।

उनके विद्यार्थियो मे से करीब तीस प्रतिशत को वे वजीफा देते है। सारे विद्यार्थियो मे ७% विद्यार्थी विदेशो से आते है। व्यापारी जगत मे जो उतार-चढाव और नये-नये रुख दिखाई देते हैं, उनसे अपने-आपको पूरी तरह से अवगत रखना इनके मुख्य कामो मे से एक है।

न्यूयार्क मे यदि सबसे व्यस्त कोई आदमी होगा तो वह है वहा के लोकप्रिय गवर्नर श्री नेलसन रॉकफेलर। हमारे प्रतिनिधि-मडल ने अत मे उनसे मुलाकात की। इस महत्वपूर्ण मुलाकात व चर्चा के बाद अमरीका का हमारा दौरा औपचारिक तौर से पूरा हुआ। उन्हीके पूछने पर हमने अपने अमरीका के दौरे के अनुभव उन्हे बताये और कहा कि यह देखकर हमे बहुत ताज्जुब हुआ कि अमरीका की आम जनता दूसरे देशो की राजनीति से कतई अनभिज्ञ है और विदेशियो के जीवन मे उनको विशेप दिलचस्पी नही है। अखबारो मे भी विदेशी खबरे बहुत कम छपती है और उसका नतीजा वहा की परराष्ट्रीय नीति पर भी पडता है। भारत-सरीखे देश मे, जो वहा से इतनी दूर स्थित है, लोग इस बात को समझ नही पाते है। हमारे विचारो को सुनकर वह एक तरह से खुश हुए और उन्होने कहा भी कि उन्हे बहुत प्रसन्नता है कि बहुत थोडे समय मे ही हम लोग इस बात को समझ सके। हम लोग कहते हैं, यह बात सही है और यह उनकी कठिनाइयो मे से एक है।

उन्होने आगे चलकर यह भी कहा कि उनको विश्वास है कि भविष्य मे दुनिया की राजनीति मे अमरीका, भारत और ब्राजील को मिलकर

बडा काम करना है। भविष्य के सत्रध मे तो कुछ कहना वहुत कठिन है, पर वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए उन्होने ब्राजील को इतना महत्व क्यो दिया, यह हम नही समझ सके। हो सकता है कि दक्षिण अमरीका के देशो मे ब्राजील मे लोकसत्ता का सवसे अधिक जोर है और शायद वे मानते हैं कि ब्राजील के दक्षिण अमरीका के नेता के रूप मे आगे आने की पूरी सभावना है।

वापस लौटने के पहले हम लोगो ने एक छोटा यरवदा-चक्र उन्हे भेट किया। यह भेट उन्हे वहुत पसद आई। उन्होने कहा भी कि हम लोग इससे अधिक अच्छी भेट उन्हे नही दे सकते थे। उन्होने याद दिलाया कि १९३२ मे जव वह भारत आये थे तव गाधीजी से मिलने का उन्हे मौका मिला था। उस समय गाधीजी चर्खे पर कात रहे थे। चर्खा भेट करते समय मैंने उनसे कहा कि यह हमारी आजादी का प्रतीक तो है ही साथ ही हमारे देश के औद्योगिक प्रयत्नो का भी प्रतीक है। इसे हम उनको न्यूयार्क के गवर्नर की हैसियत से नही, वल्कि अमरीका के वडे-से-वडे उद्योगपति-परिवार के प्रतिनिधि रूप मे भी भेट कर रहे हैं। यह सुनकर उन्हे वडी खुशी हुई थी।

श्री राकफेलर वडे सौम्य और सज्जन पुरुप हैं और हमे खुले दिल से वात करनेवाले सफल नेता लगे। उम्र मे वहुत वडे न होते हुए भी, करीव ५५ वर्प के होगे—वह वडे प्रतिभाशाली व्यक्ति है। इतने व्यस्त रहते हुए भी हमसे वडे प्रेम और मित्रता से मिले और वरावरी के नाते हम लोगो से वार्ता-लाप करते रहे।

श्री राकफेलर रिपव्लिकन पार्टी के अनुयायी हैं और अपनी पार्टी की तरफ से अमरीका के अगले प्रेसीडेट के चुनाव मे खडे होने की वडी तमन्ना रखते थे। वडी मेहनत करके उन्होने अपने लिए अच्छा नाम और देश-वासियो के दिलो मे ऊचा स्थान प्राप्त कर लिया था। अमरीका के लोग तो छोटी-छोटी वातो पर ही लट्टू हो जाते है। वह दो-चार वार रास्तो पर के छोटे-मोटे रेस्तरा मे खाना खा आये। इसीकी वडी चर्चा रही और लोग मानने लगे कि इतने वडे धनी घराने के आदमी होकर इस तरह सवसे वरावरी का व्यवहार करते है तो जरूर वे आम लोगो के हितैपी है। इतना

सब होते हुए भी पार्टी के अंदर श्री निक्सन के सामने इनकी एक न चली। वैसे, इनके विरोधी डेमोक्रेटिक दल के नेता भी यह मानते थे कि यद्यपि इस बार विजय उन्हीके दल की रहेगी, फिर भी राकफेलर की बजाय निक्सन को हराना उनके लिए अधिक आसान है। इसीलिए वे भी आशंकित थे कि रिपब्लिकन दल कही राकफेलर को अपनी पार्टी की तरफ से प्रेसीडेंटशिप के लिए नुमाइंदा न चुन ले।

इस तरह हम लोगो को मौका मिला कि हम अमरीका के अलग-अलग क्षेत्रो के उच्चकोटि के नेताओ से मिलकर बातचीत कर सके और उनसे विचार-विनिमय कर सके। इसकी वजह से हम लोगो को उनके देश की समस्याओ व उनके जीवन के अनेक पहलुओ से संबंधित उनके दृष्टिकोण को समझने मे आसानी हुई।

: ४ :

अमरीका की राजनीति और भारत–१

जब अमरीकी दोस्तो से हम खूब घुल-मिल गये तो दिल खोलकर बाते होने लगी। कई दोस्तो के दिमाग मे सदेह था कि हमारा देश शायद साम्यवाद की तरफ झुकता जा रहा है। वे कहते कि जब श्री ख्रुश्चेव और श्री बुलगानिन भारत आये तब उनके प्रति किया गया सम्मान एक तरह से इस बात का सबूत था कि हमारा देश साम्यवाद और उसके नेताओ को चाहता है। हम लोग कहते कि यह बात सही नही है। जिस तरह आपका बडा शक्तिशाली देश है, उसी तरह आज दुनिया मे रूस भी बडी शक्ति रखता है। ऐसा देश, जो कि करीब-करीब आधी दुनिया पर राज्य करता है, उसकी सरकार के सर्वोच्च नेता भारत मे पहली बार आये थे, तो उनका स्वागत करना हमारी जनता के लिए स्वाभाविक था। अमरीका से जो भी नेता भारत मे आये है, वे वहा की सरकार के उच्चतम अधिकारी नही थे। यदि आपके प्रेसीडेट भारत मे जायगे तो उनका स्वागत भी हमारा देश उनके उपयुक्त ही करेगा, इसमे हमे कोई सदेह नही है।

वे कहते थे कि हमारा सविधान ही ऐसा है कि हमारे प्रेसीडेट कई दिनो तक लगातार देश से बाहर नही रह सकते। इसलिए बहुत इच्छा होते हुए भी हमारे प्रेसीडेट आपके या अन्य देशो मे जाय, यह कैसे सभव होगा? हम कहते, जो हो, आज के बदलते हुए वातावरण मे जब अमरीका दुनिया की राजनीति मे इतना महत्व का हिस्सा ले रहा है, यह सभावना जरूर होनी चाहिए कि आपके प्रेसीडेट दुनिया के अलग-अलग देशो मे जाकर अपनी आखो से लोगो की हालत देखे और उनके विचार समझे। यदि आवश्यक हो तो इसके लिए आपका सविधान भी बदला जाना

जब अमरीका के प्रेसिडेट इसके कुछ ही दिनो बाद भारत मे पधारे और यहा की जनता ने उनका इतना शानदार स्वागत किया, जैसा कि इसके पहले कभी नही हुआ था, तो हमे खुशी हुई कि जो बात हमने कही थी वह अक्षरश सही निकली।

अमरीका के लोगो को अपने अमरीकी तरीके के जीवन के प्रति अत्यत अभिमान है। किसी भी दिशा से उन्हे अपने अस्तित्व के सबध मे खतरे का आभास मिलता है तो वे स्वाभाविक ही भयभीत हो उठते है और उसका उग्र विरोध करते है। अमरीकी जनता मे इसी कारण से हर बात का मूल्याकन इसी दृष्टि से करने की प्रवृत्ति पाई जाती है कि अमुक घटना या कृत्य साम्यवाद का पोषक है या उसके विरोध मे है। वे इसी आधार पर उसका समर्थन या विरोध करते है। इस मामले मे वे एकदम भावुक हो गये है। हम पाते है कि आम जन-समूह की विचार-धारा इसी एक खास साचे मे ढल-सी गई है। विचित्र बात तो यह है कि सिद्धान्तो और सरकारो के सगठनो मे मौलिक अतर होने के बावजूद अमरीकी और सोवियत जनता का इस एक जगह—अपनी विचारा-धारा को एक मात्र सत्य मानने के आग्रह मे—एक प्रकार का साम्य है।

आज तक की अमरीका के 'स्टेट डिपार्टमेट' की विदेश नीति के मूल मे यही भावना काम कर रही थी। उसका रूप मुख्यत निषेधात्मक और रक्षात्मक था। इसके अतिरिक्त अमरीका ने, अन्तर्राष्ट्रीय मामलो के प्रति अरुचि के कारण, विदेश-नीति के मामले मे सुदक्ष, सक्षम और विशेष योग्यतावाले अधिकारी तैयार करने का कोई प्रयत्न नही किया, जैसाकि ब्रिटेन और सोवियत रूस ने किया है। लगता है, मानो यह अन्तर्राष्ट्रीय नेतागिरी उनपर, बिल्कुल उनकी इच्छा और स्वभाव के विरुद्ध, लाद दी गई हो।

मैने उनके महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो से इस सबध मे बात की और पाया कि वे उक्त विश्लेषण और नतीजो से आम तौर पर सहमत है। इसका परिणाम यह हुआ कि उनकी नीतियो के सबध मे अन्य देशो मे, विशे-षत भारत या अन्य एशियाई देशो मे भी, काफी गलतफहमिया फैल गई है। इसकी कोई जानकारी स्वय अमरीकी जनता को पूरी तरह से

नही दी गई है कि बाहरी दुनिया के विचार और उसका रुख क्या है। यही कारण है कि आम अमरीकी यह समझ नही पाता कि उनकी नीतियो के सबध मे, बाहरी दुनिया मे, इतनी गलतफहमी क्यो फैली हुई है ? वे नही समझ पाते कि उनके इतने अरबो डालर खर्च करने पर भी जिन देशो मे डालर खर्च होते है, वहा के लोग भी उनसे खुश क्यो नही है ?

एक बात हमारी समझ मे नही आती थी। वह यह कि अमरीका के लोग हमे क्यो नही ठीक समझ पाते ? उन्हीकी तरह हमारा देश भी हर तरह की आजादी चाहता है और हम भी व्यक्ति की स्वतत्रता मे पूरा-पूरा विश्वास रखते है। व्यक्तिगत स्वतत्रता को कायम रखते हुए देश का जल्दी-से-जल्दी विकास करना और लोगो का जीवन-स्तर ऊचा उठाना, यही हमारा उद्देश्य है। तो फिर हमारे दोनो देशो मे एक दूसरे के प्रति गलतफहमी क्यो ? क्यो हम एक-दूसरे की भाषा नही समझ पाते है ? क्यो एक दूसरे के लिए मन मे अविश्वास और सदेह है ?

गहराई मे जाने से पता चला कि कई कारणो के इकट्ठा मिल जाने से ही यह भ्रात वातावरण पैदा हो गया था। हमारी आजादी की लडाई के साथ वहा के लोगो की पूरी-पूरी सहानुभूति थी। वहा की आम जनता के विचार और जीवन-मूल्य इस बात के दृढतापूर्वक हामी है कि हरेक देश और व्यक्ति को स्वतत्र होना चाहिए। हम उन्हे इसलिए भी पसद आते थे कि हमने उन्हीके पद-चिह्नो पर चलकर आजादी पाई। हमने आजादी पाई है, इसकी उन्हे दिल से खुशी हुई। लेकिन उनकी ख्वाहिश रही कि आजादी पाने पर हम उनके गुट मे शामिल हो जाय, जैसा कि पाकिस्तान ने किया। जब उनकी यह इच्छा पूरी नही हुई तब हमारे प्रति उनका रोष बढता गया। हमारी हर बात को वे उल्टा समझते गये।

श्री कृष्ण मेनन के रूखे व्यवहार और बातचीत का भी वहा की जनता पर काफी असर पड चुका था। जैसा मैंने पहले भी लिखा है, अमरीका पर बडी बातो का उतना असर नही पडता है, जितना एक मुस्कराहट या मीठे बोल का। कुछ लोगो ने तो मुझसे यहातक कहा कि श्री मेनन, जान पडता है, जानबूझकर एक विशेष प्रकार का रुख अपनाये हुए थे। इसकी वजह से टेलीविजन आदि पर उनको देखने की लोगो की भारी इच्छा रहती

थी। वह खुद अमरीका मे बदनाम जरूर हुए, लेकिन हिंदुस्तान के बारे मे जानकारी पाने की उत्सुकता लोगो मे बढती ही गई। अमरीका की राजधानी मे दुनिया के हर देश के राजदूत बसते है। कौन किसकी परवा करता है। लेकिन श्री कृष्ण मेनन अपनी ओर सबका ध्यान आकर्षित करने मे सफल हुए। जबतक वह वहा रहे, चर्चा का केंद्र बने रहे। कुछ लोगो ने तो यहातक कहा कि यह उन्होने जान-बूझकर किया, नही तो उनकी ओर भारत की ओर किसीका इतना ध्यान कैसे जाता ?

जब हम लोग वहा पहुचे उस समय भारत के प्रति अविश्वास और दुर्भावना कम होती जा रही थी। लोगो मे भारत के प्रति सहानुभूति बढ रही थी। हमारी विदेश-नीति को सही मानो मे समझने की कोशिश हो रही थी। अतर्राष्ट्रीय घटनाओ ने अमरीका पर यह स्पष्ट कर दिया था कि ऐसे राष्ट्रो का होना, जोकि अन्य बडे राष्ट्रो के गुट मे नही है, दुनिया मे शाति स्थापित करने के लिए तो आवश्यक है ही, साथ-ही-साथ दूर दृष्टि से देखा जाय तो अमरीका के भी हक मे साबित होगा। वे जानने लगे है कि जिनको वे 'आजाद मुल्क' कहते है, और जिनमे वे खुद को भी शामिल समझते है, उनकी प्रगति के लिए भी इस तरह के तटस्थ देशो का होना परमावश्यक है। हम लोग अमरीका गये थे तब वहा रिपब्लिकनो का राज्य था। अब तो नए चुनाव हो गये है और डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता श्री केनेडी सत्ताधीश हुए है। इनके नेतृत्व मे अमरीका अधिक प्रगतिशील नीति अगीकार करेगा, इसमे मुझे कोई सन्देह नही है। श्री केनेडी को मैं भारत का परम मित्र मानता हू और मुझे विश्वास है कि उनके कार्यकाल मे हम दोनो देश और अधिक निकट आ सकेगे।

अमरीका का दृष्टिकोण करीब-करीब वही था जैसा कि एक धनी परिवार का होता है। धनी परिवार अपना आलीशान बगला बनाकर उसमे रहता है। उसके चारो तरफ गरीबी होते है, जो छोटे-छोटे मकानो या झोपडो मे रहते है। उन्हे भरपेट खाने-पीने को भी नही मिलता। ऐसी हालत मे वह अपने चारो तरफ बडी दीवार बना लेता है। अपनी बचत के लिए दीवारो पर काच के टुकडे लगा लेता है, जिससे उसे कोई फाद न सके। बडा मजबूत दरवाजा बनायेगा। एक पहरेदार भी होगा, जिसके

शरीर पर भडकीली वर्दी और हाथ मे वन्दूक होगी। वह कभी नही चाहता कि उसके आस-पास के लोग दगा-फसाद या लडाई करे। वह भरसक गरीबो की मदद करके उनको खुश रखने की चेष्टा करता है। किसीकी पैसे से मदद करता है तो किसीको किसी और तरह से सतुष्ट करने का प्रयत्न करता रहता है। उसकी इच्छा रहती है कि आस-पास मे शाति बनी रहे और उसके प्रति लोगो मे सद्भावना वढे। लोग उसकी वडाई करे, उसे वाहवाही दें। उसकी समझ मे यह नही आता कि वह तो किसीसे कुछ लेता नही, वल्कि देता ही है, फिर लोगो को उससे शिकायत क्यो होनी चाहिए ? उसकी अपेक्षा सिर्फ इतनी रहती है कि जिनकी उसने मदद की है, वे लोग उसको सलाम भर करते रहे।

इसी ढग से सोचनेवाले कुछ व्यक्ति अमरीका की राजनीति मे प्रभाव रखते थे। उनके हाथो मे इतनी सत्ता थी कि वहा की सरकार का रवैया भी कुछ-कुछ इसी तरह का हो गया था। वे नही समझ पाते थे कि एक ही दुनिया मे लोगो के जीवन-स्तर मे इतना असीम अतर टिक नही सकता। इस तरह का अन्तर अपने-आपमे भी एक गलत चीज है, जिसको आज के युग मे टिकाये रखना असभव है। अन्य देशो के लोगो की, खास करके ऐसे लोगो की, जो अभी-अभी आजाद हुए है, या आजादी के लिए लड रहे है, कुछ विशेष भावनाए, और मानसिक स्थिति भी होती है, जिसका ख्याल रखना पडता है। सिर्फ बुद्धिवाद से काम नही चल सकता। हम लोग अभी-अभी वडी मुश्किलो से, अग्रेजो से लड़कर, आजाद हुए है। सैकडो सालो की गुलामी से मुक्ति पाकर हमारी जनता इस वात के प्रति अत्यत आशंकित और सतर्क रहती है कि हम फिर किसी आर्थिक या राजनैतिक गुलामी मे न फस जाय। यह मूलभूत वात अमरीका के लोगो की समझ मे नही आती थी। इसीलिए हम लोग एक-दूसरे की भापा को भी नही समझ पाते थे और गलतफहमी वढने से एक दूसरे से दूर होते जा रहे थे, नही तो अमरीका जैसा धनवान देश भला यह क्यो चाहेगा कि भारत सरीखा वडा देश उससे दूर खिचता चला जाय। उनकी समझ थी कि जो उनके साथ नही है, वे सव उनके दुश्मन के साथ है। इसीसे उनको लगता रहा कि हम भी शायद चीन के रास्ते पर ही जानेवाले है।

फिर हमसे दोस्ती बढाने मे क्या फायदा ? लेकिन धीरे-धीरे अब उनकी
समझ मे बाते आ रही है। इसीकी वजह से प्रेसीडेंट आइजनहोवर को
इतने लबे दौरे के लिए अपने देश से बाहर निकलना पडा और उन्होंने
अपना अधिक-से-अधिक समय भारत मे गुजारा। इसमे कोई शक नही कि
उनकी इस यात्रा का बहुत गहरा असर भारत और अमरीका के लोगो को
नजदीक लाने मे हुआ है। इस दृष्टि से प्रेसिडेंट आइजनहोवर की यह
यात्रा बडी सफल ही नही रही, बल्कि बडी सामयिक और ऐतिहासिक
साबित हुई है, इसमे कोई शक नही।

इस सिलसिले मे मुझे दिल्ली-विश्वविद्यालय के छात्रो के सामने
दिये गए उस भाषण की विशेष याद आ रही है, जिसमे प्रेसिडेंट आइजन-
होवर ने कहा था कि दोनो देशो के विश्वविद्यालयो को चाहिए कि उनके
द्वारा बहुत बडी सख्या मे दोनो देशो के बीच युवको का आना-जाना
हो। सैकडो बरसो तक अलग-अलग देश के नवयुवको को दूसरे देशो में
फौज और हथियार लेकर, एक-दूसरे को जीतने के लिए भेजा जाता रहा
अब समय आ गया है जब हम लोग अपने नौजवानो की तरफ देखते हैं
और चाहते हे कि वे शाति और समाधान का पैगाम लेकर एक दूसरे के
देश मे जाय, एक दूसरे को समझे और अतर्राष्ट्रीय झगडो को शाति से
निबटाने मे कारगर साबित हो। यह बात मुझे बहुत उचित प्रतीत हुई
अपने अमरीका के दौरे के बाद मुझे भी ऐसा लगा था कि सरकारी प्रति-
निधि-मडलो के आने-जाने के अलावा इस बात की बडी जरूरत है कि
गैर-सरकारी तौर पर समाज के अलग-अलग क्षेत्रो से बडी सख्या में
लोग यहा से अमरीका जाय और इसी तरह से वहाँ के साथियो को यहा
बुलाये। आपस मे अच्छा सबध बनाने के लिए गैर-सरकारी लोग अधिक
आसानी से काम कर सकते हैं। मैं तो मानता हू कि युवक तो खूब जाये
ही, साथ ही हमारे यहा के सामाजिक, शैक्षणिक, व्यापारिक तथा खेल कूद
के क्षेत्रो मे भी यह आदान-प्रदान बडे पैमाने पर हो।

मुझे पूरा भरोसा है कि अमरीका की सरकार और अमरीका के लोग
लडाई बिल्कुल नापसद करते हे और उसे वे कभी नही चाहेगे। वहां के
लोग धनवान हे, धन दे सकते हे, पर अपने जवान बेटो को मरते नहीं

देख सकते। हा, दूर कही लडाई हो और वहा के लोग मरने को तैयार हो तो वे पैसे से जरूर भरपूर मदद कर सकते है। खुद लडकर मरना वे क्यो चाहेगे ? उनको तो यही चाहिए कि अमरीका की जीवन-वृत्ति और जीने का तरीका बढे । व्यक्तिगत स्वतत्रता और काम करने की पूरी आजादी के वे बडे हामी है। वे तो केवल इस बात से डरते है कि कही उनकी यह आजादी छिन न जाय ।

यदि उनको यह भरोसा हो जाय कि अमरीका के खिलाफ साम्य-वादी कभी हमला नही करेगे, उनके जीवन मे उथल-पुथल मचाने की कोशिश नही करेगे तो वे शायद सारी दुनिया की राजनीति से दूर हटकर अपने ही देश मे आराम से बैठ जाय । उनको किसी देश से न तो कच्चा माल चाहिए और न सस्ती मजदूरी पर गुलाम ही। उनके पास पैसे भरपूर है। वे हर चीज की पूरी-पूरी कीमत चुकाने को तैयार है। वे किसी देश को आर्थिक गुलामी मे रखकर उसे चूसकर अपने देश को धनवान बनाना नही चाहते। इसके विपरीत वे तो हर देश को आर्थिक सहायता देते है।

रूस और अतर्राष्ट्रीय साम्यवाद अपना साम्राज्य फैलाना चाहत है, इसी मान्यता की वजह से वे यह जरूर चाहते है कि सैनिक दृष्टि से दूसरे लोग उनके आधिपत्य मे आ जाय और जब कभी अतर्राष्ट्रीय युद्ध छिड जाय तो उनको हार न खानी पडे। आज अतर्राष्ट्रीय साम्यवाद जिन देशो मे है, वही तक रहे और उन लोगो मे अपना क्षेत्र बढाने की वृत्ति न रहे तो मैं समझता हू कि बडी आसानी से अतर्राष्ट्रीय समझौता हो सकता हे। दुनिया मे शाति कायम होने मे पूरी मदद मिल सकती है। अतर्राष्ट्रीय साम्यवाद के पास अब बहुत क्षेत्र आ गया है। उसके दायरे के नीचे बडा क्षेत्रफल और बडी जन-सख्या हे। इतना मिल जाने पर अब भी उसकी भूख मिट जाय तो दुनिया का भविष्य सुधर सकता है। आज जो सारे लोग रोजमर्रा का जीवन डर-डरकर विताते है, उसकी आवश्यकता नही रहेगी। जो पैसा लडाई के औजारो मे लगता है, एटम बम बनाने मे लगता है, वही पैसा शान्ति, सुख, चैन और आराम की जिदगी बिताने मे व्यय किया जा सकता है। पर यह सभव कैसे हो, यह

बडा विकट प्रश्न है। जिसके पास है उसे और चाहिये। जिसके पास ज्यादा है, उसे और ज्यादा चाहिए। इसीलिए यह पागलपन और मूर्खता-भरी दौड और स्पर्धा रुक नही पाती, अन्यथा साम्यवादी ससार के लोग भी शाति तो चाहते ही है। तभी वहा के लोगो को भी अच्छा खाना, अच्छा पहनना, अच्छे घर और चैन से रहना नसीब होगा। शाति तो सब चाहते है, पर अपनी-अपनी शर्तो पर। इसलिए आवश्यकता है और जमाने की माग है कि तटस्थ देशो की सख्या बढे, जो सबसे मैत्रीपूर्ण सबध कायम रख सके और आपस मे सद्भावना का फैलाव कर सके।

: ५ :

अमरीका की राजनीति और भारत—२

अमरीका जाने से पहले हम यह मानते थे कि चूकि अमरीका का सारी दुनिया पर इतना असर है, वहा के लोग और अखबार भी देश-विदेश के मामलो मे पूरी दिलचस्पी लेते होगे और वहा की घटनाओ से पूरी तरह परिचित होगे। लेकिन वहा पहुचने पर हमने देखा कि 'न्यूयार्क टाइम्स', 'शिकागो ट्रिब्यून' और इस तरह के एक-दो अखबारो को छोडकर, अन्य अखबारो मे अतर्राष्ट्रीय खबरे नही के बराबर छपती है। यद्यपि प्रातो के दैनिक अखबारो मे भी ६०-७०-८० से लेकर १००-१२५ तक के पृष्ठ होते है, फिर भी उनमे विदेशी खबरे बहुत कम आती है। करीब ७० से ८० प्रतिशत जगह तो विज्ञापनो मे ही चली जाती है। बाकी की जगह मे बहुत-सी जगह सनसनीपूर्ण खबरो से भरी होती है। बची-खुची जगह देश व प्रात के राजनैतिक समाचारो मे खर्च हो जाती है। हमे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि हमारी प्रान्तीय पत्रिकाए, जोकि प्राय सिर्फ आठ दस पृष्ठो की होती हे और जिनके सचालको के पास ताकत और पैसा भी कम होता है, उनमे भी, विदेशी खबरे ज्यादा परिमाण मे होती है। जब इस बात की गहराई मे उतरे तब यह देखने मे आया कि वहा की आम जनता विदेशो की राजनीति मे कोई दिलचस्पी नही लेती। उन सबकी आम सद्भावना आजादी के लिए लडनेवालो के प्रति है। वे अपने रोजमर्रा के जीवन मे इतने व्यस्त है और अपना जीवन-स्तर ऊचा उठाने मे ऐसे लगे हुए हे कि उनका और किसी तरफ ध्यान ही नही जाता। उनका जीवन इतनी तेज रफ्तार से चलता है और हर क्षेत्र मे इतनी अधिक स्पर्धा है कि वे राजनैतिक मसलो की ओर जरा भी दिलचस्पी नही रखते। भौतिक साधना और शारीरिक आराम की इतनी ख्वाहिश है कि वे इसी उलझन मे दिन-रात फसे रहते है।

इन सब बातो का असर उनके देश की राजनीति और अतर्राष्ट्रीय नीति पर भी पडना स्वाभाविक ही है। श्री डलेस की नीति इन्ही सिद्धातो को लेकर बनी हुई थी। अमरीकी लोगो की आम भावना का प्रतिबिब ही उनकी विदेश-नीति मे झलकता था। उन्होने प्रगतिशील होकर अपने देश की जनता को आगे ले जाने की कोशिश नही की। इसीका परिणाम है कि उनकी इतनी मदद होते हुए भी पिछडे हुए देशो मे उनकी जितनी इज्जत होनी चाहिए उतनी नही हुई। जब हम लोग रूस मे थे तो हमें श्री ख़ुश्चेव से मिलने का मौका मिला था। उन्होने यहातक कहा कि उनके सबसे बडे मित्र तो श्री डलेस है, क्योकि उनकी नीति के कारण ही अमरीका के प्रति लोगो की नाराजगी बढती जा रही है। स्वाभाविक रूप से यह बात रूस के पक्ष मे जाती है। श्री डलेस वैसे बहुत ही सज्जन और धर्मभीरु व्यक्ति थे। अमरीका के पुराने नामी घरानो के लोग उनको बहुत चाहते थे और उनकी कार्यदक्षता, मेहनत, सज्जनता और ईमानदारी पर फिदा थे। हम जब अमरीका मे थे तब श्री डलेस बहुत बीमार थे और अच्छे-अच्छे घरानो के पुरुष और स्त्रिया उनकी तबीयत के बारे मे बहुत चिंतित थे और बराबर ईश्वर से प्रार्थना करते रहते थे। मैं मानता हू कि प्रेसीडेंट आइजनहोवर दुनिया के दौरे पर निकले और उन्होने श्री ख़ुश्चेव को अमरीका आने का निमत्रण दिया यह सब विश्व-शाति की ओर उठाये गए कदम है और ये श्री डलेस के होते हुए सभव नही थे।

अमरीका जाने से पहले हमे अपने प्रधान-मत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से मिलने का मौका मिला था। मैंने उन्हे हमारे प्रतिनिधि-मडल के अमरीका जाने के कारणो से परिचित कराया था और उनका सदेश मागा। उन्होने सक्षेप मे कहा था—"इस बारे मे मेरे विचार आप लोग जानते ही है। हम लोग अपने तरीके से आगे बढ रहे है। हम किसीके खिलाफ नही है। हम जो सही समझते है, करते है। शीतयुद्ध से कोई लाभ नही हो सकता। लोगो के मत भिन्न-भिन्न हो सकते है। उनको बहस या लडाई से सुलझाया नही जा सकता। हरेक को शाति और एकता के साथ रहना होगा। इसलिए पचशील पर हमारा भरोसा है। पचशील हमारे लिए कोई नई बात नही है। यह कहना ठीक नही है कि हम पच-

शील पर इसलिए भरोसा रखते है कि हम बडे-बडे देशो की ताकतो से डरते है और इसीलिए हमने तटस्था का स्वाग रचा है। पचशील में हमारा हमेशा भरोसा रहा है। वह तो हमारी सस्कृति और परपरा का हिस्सा हो गया है। यदि हम इसपर भरोसा न करे तो फिर दूसरा रास्ता तो सिर्फ लडाई और सपूर्ण विनाश का ही रह जाता है।

"हम लोगो को किसी दूसरे देश मे किसी तरह से भी दखल देने की इच्छा नहीं है। हमारी खुद की ही बहुत समस्याए है, जिन्हे हमे हल करना है। यदि दुनिया मे शाति रखने के लिए हमारी सेवाओ की आवश्यकता हो तो हम जरूर शक्ति के मुताबिक हिस्सा लेने को तैयार है।

"लोग कहते है कि हमारी दूसरी पचवर्षीय योजना जरूरत से ज्यादा बडी है। लेकिन हमारी जनसख्या बढती जाती है। इस दौड मे बढती हुई जन-सख्या को पकडकर उसके आगे बढने की कोशिश मे है। हमको बहुत मेहनत करके उसे पकडना होगा। अपना जीवन-स्तर ऊचा उठाना होगा। इसलिए हम अपनी योजना को कम करना नही चाहते।"

जब हमने अमरीकी मित्रो को अपने देश की यह विचार-धारा समझाने की कोशिश की तब पता चला कि पाकिस्तान का विरोधी प्रचार और उनके अपने अखबारो की उदासीनता के कारण अनेक लोगो को इस नीति के औचित्य का कतई ज्ञान नही था। हम देख रहे हैं कि धीरे-धीरे अब अमरीका की वैदेशिक नीति मे बडा अतर आ रहा है।

इसका कारण क्या है ? मैं मानता हू कि इसके दो मुख्य कारण हैं। सबसे बडा तो रूस का सफलतापूर्वक स्पुतनिक चलाना, जो उसकी तकनीकी शक्ति को प्रकट करता है। इसके पहले अमरीका के लोग यही मानते आ रहे थे कि विज्ञान और टैक्नोलोजी आदि मे उनकी ताकत को कोई छू नही सकता। इसलिए वे किसीसे क्यो दबे और समझौता करे ? जैसा वे चाहेगे, उसी तरह दुनिया को कबूल कर लेना चाहिए। और मूलत वे दुनिया के लिए भलाई ही चाहते थे, इसलिए भी उनको लगता था कि दुनिया उनकी बात को आसानी से मान लेगी।

जब रूस ने स्पुतनिक चलाया तो अमरीका के लोगो को केवल आश्चर्य ही नही हुआ, बल्कि उनको एक तरह का बडा धक्का भी लगा।

जिससे सभलने मे उन्हे बडी देर लगी। वे धीरे-धीरे समझ गये कि चाहे उनका जीवन का तरीका कितना ही बेहतर क्यो न हो, उन्हे रूस से समझौता करना आवश्यक है। साम्यवादी तरीको मे भी जरूर कुछ अच्छाइया होनी चाहिए, नही तो उनको परास्त कर सके, इतना विकास वे कैसे कर सके? इसलिए हर क्षेत्र मे क्रमश समझौते का वातावरण पैदा हुआ। उसीके फलस्वरूप श्री ख्रुश्चेव को अमरीका जाने का आमत्रण मिला और उनका वहा अच्छा स्वागत हुआ। स्पुतनिक के आविष्कार के पहले अमरीका मे रूस के नेता को सम्मान देने के बारे मे कोई सोच भी सकता था, इसमें मुझे पूरा सदेह है। जिस देश मे साम्यवाद और साम्यवादी नेताओ को सबसे बडा दुश्मन माना जाता है, उनका स्वागत वहा के लोग कैसे और क्यो करे? लेकिन जब उन्होने देखा कि दुश्मन के पास बडी ताकत है तो उन्होने सोचा कि उनमे आपस मे कितना ही भेद क्यो न हो, बेहतर यही है कि समझौते से रहा जाय। मैं मानता हू कि यही सही तरीका भी हे। जब हमे पता चल जाता है कि हम अपने विरोधी को नही हरा सकते या अपनी बात पर राजी नही कर सकते, तो लडाई—शीत या गरम—चालू रखने से कोई लाभ नही। क्रिकेट के खेल मे भी यही होता है। जब हमे पता चल जाता है कि जीत हमारे लिए असभव है, तो फिर मैच किसी भी तरह बराबरी मे छूट जाय, इसकी कोशिश चलती है।

दूसरा कारण है एशिया और अफ्रीका मे नये वातावरण का निर्माण। इन देशो मे एक तीसरा समुदाय पैदा हो गया, जिसने दुनिया के दोनो शक्तिशाली गुटो से अलग रहने का तय कर लिया है। इस दूसरी परिस्थिति के निर्माण मे हमारे प्रधानमत्री श्री जवाहरलाल नेहरू का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

अमरीका मे स्थित भारतीय लोगो मे और भारत के साथ सहानुभूति रखनेवाले अमरीकी दोस्तो मे एक बात पर वाद-विवाद चलता था। अमरीका की राजधानी वाशिगटन मे, जहा उनकी पार्लमेट आदि हुआ करती है, पाकिस्तान की बडी तगडी लॉबी हे। पाकिस्तान के लोग रात-दिन भारत के विरुद्ध जहर उगला करते है और समय-असमय अपने देश के पक्ष की बात कहते रहते है। कुछ लोगो का कहना था कि हमे भी

वही रास्ता अख्तियार करना चाहिए और पाकिस्तान की बातो का लगातार और बडे जोरो से खडन करना चाहिए और अपनी बात बराबर रखते जाना चाहिए। इससे शायद तुरत मे छोटे-मोटे फायदे भी मिल सकते है। लेकिन समझदार लोगो की राय यह थी कि हमे तो एक पुराने और सभ्य, सुसस्कृत देश की भाति बडा सौम्य और समझदारी का तरीका अख्तियार करना चाहिए। हमे अपनी बात स्पष्टता, सज्जनता और मिठास से कहनी चाहिए। उसको 'सस्तेपन' से दुहराने की आवश्यकता नही। मुझे खुशी है कि हमारे देश ने काफी विरोध होते हुए भी पहले रास्ते को छोड-कर दूसरा रास्ता ही अख्तियार किया है। उसका नतीजा यद्यपि धीरे-धीरे निकल रहा है, लेकिन यह भी मानना होगा कि इसीके फलस्वरूप आज हमारे दोनो देश इतने करीब आ गये है। मेरी यह मान्यता है कि भारत व अमरीका दोनो देश साथ मिलकर दुनिया मे शाति की स्थापना मे बडा हिस्सा बटायेगे।

हमने जो कुछ भी देखा-सुना उसके आधार पर कह सकते है कि एक सामान्य अमरीकी का रुख बडा मित्रतापूर्ण है और वे हमारी सहायता के लिए तत्पर है। हमे यह बताया गया कि करीब एक वर्ष से भारत के पक्ष मे अमरीकी जनता के रुख मे बडा परिवर्तन आया है। आइजनहोवर की सरकार भी भारत को, उसकी विदेश-नीति के बावजूद, आर्थिक सहायता देने की अहमियत महसूस करने लग गई थी। वस्तुत अनेक व्यक्ति, जिन-मे बहुत ऊची स्थिति के लोग भी है, यह अनुभव करने लगे है कि भारत ने तटस्थ रहने की जो नीति अपनाई है, वह बिल्कुल सही और उचित है। हा, अनेक क्षेत्रो मे यह भावना भी पाई जाती हे कि हम साम्यवादी देशो के प्रति उदार है। अनेक लोग शीत-युद्ध और हथियारो के सकलन की समस्याओ के कारण बहुत चिन्तित है। इसीसे भारत के प्रति उदासीन है।

किंतु फिर भी यह कहना गलत होगा कि आम अमरीकी जनसमुदाय भारत को पूर्णत समझ गया है या उसको हमारी समस्याओ की पूरी जानकारी हो गई है। अमरीकी जनता को विदेशी नीतियो के सबध मे बहुत सीमित ज्ञान है। भारत और एशिया-अफ्रीका के अन्य देशो के सबध , अमरीका मे एक अतरग ज्ञान का अभाव, काफी बडे पैमाने पर फैला

हुआ है। इसका यह कारण हमे बताया गया कि दूसरे विश्वयुद्ध के पूर्व अमरीका की नीति बिल्कुल अलग-थलग रहने की थी। बाहरी दुनिया से उसके सबध बिल्कुल सीमित थे। अनेक अमरीकियो ने तो एशिया और अफ्रीका के कई देशो के नाम ही, जब वे सन् १९४६ के बाद स्वतत्र हुए, तब पहली बार सुने थे। इसके अतिरिक्त उनके शिक्षणक्रम में भी इन देशो के इतिहास और भूगोल को बहुत कम स्थान था।

भारत के बारे मे ज्यादा गलतफहमी तो अमरीका के वे अखबार फैलाते है, जिनमे भारत-सबधी समाचार, गलत ढग पर, या कभी जान-बूझकर भी, तोड-मरोडकर छापे जाते है। विशेपत ये अखबार वे होते है, जो अपने-अपने राज्यो तक ही सीमित है। पहले तो भारत के बारे मे बहुत कम समाचार होते है, और जो कुछ भी होते है, तोडे-मरोडे हुए। इस तरह का एक उदाहरण है, श्री नेहरू के उस बयान से सबधित, जो उन्होने लोक-सभा मे तिब्बती शरणार्थियो के सबध मे दिया था। बडे-बडे अक्षरो मे एक प्रातीय अखबार मे यह शीर्पक दिया गया था 'नेहरू की तिब्बतियो पर बदिश'। फिर नीचे अवश्य नेहरू जी की तिब्बती शरणार्थियो के प्रति प्रकट की गई सहानुभूति का भी जिक्र था। शीर्षक प्रधान-मत्री के इस कथन से सबधित था कि भारत बेशुमार तिब्बतियो को अपने देश मे बसाने के लिए लेने मे समर्थ नही होगा। लोगो को पूरी खबरे पढने की तो फुर्सत ही कहा है। इसलिए इस तरह के गलत शीर्षक पढकर वे अपनी राय भी गलत बना लेते है।

हमे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि 'न्यूयार्क टाइम्स' की तरह का अखबार भी महात्मा गाधी को भारत के एक धार्मिक नेता के रूप मे सबोधित करता था, जबकि सब जानते है कि गाधीजी पूरे देश मे एक महापुरुप के रूप मे सम्मानित है। नेहरूजी की भी आम अमरीकी के दिल मे बडी इज्जत है, यद्यपि अनेक क्षेत्रो मे उनकी विदेश-नीति का विरोध है।

वाशिगटन मे अमरीका के स्टेट डिपार्टमेट के अधिकारियो से भी हमारी बाकायदा मुलाकात हुई। उन लोगो ने भी हमे बताया कि हिन्दुस्तान के पक्ष मे अमरीकी जनता का रुख इन पिछले कुछ महीनो से काफी बदल गया है। अब वे हमारी आकाक्षाओ के प्रति कही अधिक सहानुभूतिपूर्ण हो

गये है। हिंदुस्तान की पचवर्षीय योजनाओ की सफलता के लिए अमरीकी सरकार काफी सहायता देने का इरादा रखती है । जब हमने पूछा कि अमरीकी सरकार यह सहायता राष्ट्रसघ के माध्यम से क्यो नही देती, तब हमे उन लोगो ने बताया कि इस प्रकार सहायता देने के पक्ष मे अमरीकी जनता की राय कुछ बहुत अनुकूल नही है ।

बात-बात मे हमारे एक यूरोपियन मित्र ने, जो अब अमरीका मे बस-कर वहा के निवासी हो गये थे, अमरीकी लोगो के बारे मे अपने कुछ रोचक अनुभव बताये। चूकि मूलत वह भी एक विदेशी थे, इसलिए उनके ध्यान मे इन बातो का आना ज्यादा स्वाभाविक था। उनके ख्याल से अमरीका तो एक बच्चा देश है। जैसे बच्चा किसी तरह की आलोचना नही सहन कर सकता और झट मचल जाता है, उसी तरह इनका भी हाल है । यदि हम किसी बच्चे के खिलौने की आलोचना करते है तो वह चिढ जाता है न ? इसी तरह इनके बारे मे हम कोई विरोध की बात करे तो इन्हे सहन नही होती।

इन मित्र की राय मे अमरीका मे सरकारी नौकरी मे सिर्फ वे ही लोग जाते है, जिनमे खुद किसी काम की पहल करने का माद्दा नही होता। वहा सरकारी नौकरो की बहुत इज्जत नही है। जिसको जरा भी मौका मिलता है, वह सरकारी नौकरी छोडकर निजी धधा करने लगता है।

इस सदर्भ मे मैं यह भी कह दू कि अमरीकी व्यापारी अपनी निजी पूजी भारत मे लगाये, इसके पक्ष मे भी वातावरण अब अधिक अनुकूल होता जा रहा है। पूजी लगाने के सबध मे मैं जिन भी उद्योगपतियो, बैंकरो और व्यवसाय मे धन लगानेवालो से मिला, उन सबने गहरी दिलचस्पी दिखाई । वे समझने लगे हैं कि भारत मे उनकी पूजी सुरक्षित है और उससे पर्याप्त लाभ भी है। राजनैतिक दृष्टि से भी यहा का औद्योगीकरण हो, हमे लाभ पहुच सके और हमारा जीवन-स्तर ऊचा हो, यह भी उनके दिल मे है। आवश्यकता अब इस बात की है कि इस अनुकूल वातावरण का ठीक उपयोग कर लेने के लिए उचित कदम उठाये जाय ।

: ६ :

शिक्षरण-संस्थाएं

ग्रमरीका की उच्च शिक्षा की सबसे बडी सस्था न्यूयार्क स्थित 'सिटी-कालेज' को देखने का अवसर हमे मिला। इसमे तीस हजार विद्यार्थी है और इसका खर्च न्यूयार्क प्रात की सरकार की ओर से चलता है। चूकि सारा खर्च वे करते है, इसलिए प्रवेश ग्राम तौर पर उन्हीके प्रात के विद्यार्थियो को पहले मिलता है। यहापर हमारे मेजबान थे भारत के एक बडे दोस्त डा० बेल गैलेगर, जो इस सस्था के अध्यक्ष है। उनसे मिलकर हमे बडा हर्ष हुआ। यह बडे मिलनसार, सज्जन और विद्वान है। बाद मे जाकर तो इनके कुटुब से हमारा और भी निकट का परिचय हो गया। इनकी लडकी बारबरा का विवाह डा० टाम जुनूजी से कुछ ही रोज पूर्व हुआ था। टाम वहा के युवक-आदोलन मे हिस्सा ले रहे थे और जब हम दौरे पर रवाना हुए तो 'याक' ने टाम को ही हमारी देखरेख के लिए हमारे साथ भेजने का तय किया। टाम से तो हमारी अच्छी-खासी दोस्ती हो ही गई थी, पर साथ ही बारबरा से भी हो गई। दोनो ही पति-पत्नी बहुत ही मिलनसार और मीठे स्वभाव के है। खुशी की बात है कि हमारे लौटने के कुछ दिनो बाद दोनो ही 'वर्ल्ड असेम्बली आव यूथ' की तरफ से चलनेवाले हमारे अतर्राष्ट्रीय युवक-शिक्षरण-केद्र—आलोक—मे जो कि भारत के मैसूर राज्य मे स्थित है, शिक्षक की हैसियत से काम करते रहे। फिलहाल दोनो ही सारे भारतवर्ष मे घूम-घूमकर हमारे देश की सामाजिक व युवक-सस्थाओ के कार्यकर्ताओ की आवश्यकताए और उन्हे सही नेता बनने का शिक्षरण किस तरह से मिल सके, इसका निरीक्षरण कर रहे है।

इतनी बडी शिक्षरण-सस्था देखने का हमारा यह पहला अवसर था। बहुत बडा अहाता, अनेक बडे-बडे मकान, खेल-कूद के मैदान, बडी भारी व्यवस्था आदि देखकर हम सभी लोग प्रभावित हुए बिना नही रह सके।

लास एजलेस मे, कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के अहाते मे हमने विद्यार्थियो की लेजिस्लेटिव कौसिल की एक बैठक की कार्यवाही देखी। यहा विद्यार्थी-सरकार ने चाय-पान के साथ हमारा स्वागत भी किया। हममे से कुछ सदस्य लास 'एजलेस यूथ फार क्राइस्ट' की एक रेली मे भी उपस्थित थे। यहीपर, अमरीकन फ्रेड्स सोसाइटी के कालेज सेक्रेटरी श्री मैनले जान्सन ने हमारे प्रतिनिधि-मडल के सम्मान मे एक भोज का आयोजन किया।

सेन्फ्रैसिसको मे कैलीफोर्निया यूनीवर्सिटी के चासलर श्री सीबोर्ग से भी मिलने का हमे मौका मिला। उनके बर्कली के इस केद्र मे करीब बीस हजार विद्यार्थी पढते है और पन्द्रहसौ प्राध्यापक है। वैसे इनके कालिज सारे कैलीफोर्निया मे जगह-जगह बिखरे हुए है और कुल मिलाकर इनकी यूनीवर्सिटी मे तेतालीस हजार विद्यार्थी पढते है। इनकी सख्या, उम्मीद है कि १६७० मे एक लाख तक हो जायगी। यहा बडी मुश्किल से प्रवेश मिलता है। सिर्फ अच्छे नबर पाये हुए ऊपर से १२ प्रतिशत लडको को ही इसमे भरती होने का मौका मिलता है। यहा शिक्षण मुफ्त मे दिया जाता है। फिर भी रोजमर्रा की अन्य बातो मे विद्यार्थियो का करीब १२० डालर प्रति वर्ष खर्च हो जाता है। दूसरे प्रातो से पढने के लिए आये हुए विद्यार्थियो का ४०० डालर प्रति वर्ष खर्च होता है। फिर भी यहा की पढाई सारे देश मे सबसे सस्ती है। यहा के खानगी कालिज तो १००० डालर प्रति वर्ष तक फीस के रूप मे ले लेते है। यह शिक्षण-सस्था देश के सबसे अच्छे और बडे शिक्षा-केद्रो मे से एक है। यहा करीब विदेशो के एक हजार विद्यार्थी पढते थे।

यहा की विद्यार्थियो की सरकार सारे देश मे सबसे मजबूत है। विद्यार्थियो की सरकार की मार्फत करीब तीस लाख डालर हर वर्ष खर्च होता है। खेल-खूद, फुटबाल स्टेडियम, स्टोर, रेस्तरा आदि विद्यार्थी खुद चलाते है और उन सबसे होनेवाली कमाई उनको ही मिलती है। विद्यार्थी-यूनियनो के कार्य के लिए हर विद्यार्थी को सालाना १२ डालर देना पडता है। खेल-कूद मे हिस्सा लेना चाहे तो १० डालर और देना पडता है। पर यह उसकी मर्जी पर निर्भर रहता है। जब हम वहा गये थे तब विद्यार्थी

यूनियन का अपना नया भवन १ करोड २० लाख डालर की लागत से बनाया जा रहा था। इनको कुछ प्रातीय सरकार से और कुछ युनिवर्सिटी के कोष मे से भी सहायता मिल जाती है।

बर्कली विश्वविद्यालय मे हमने वहा का सहकारी स्टोर भी देखा। इस स्टोर के उपभोक्ता ही इसके मालिक है। बाईस हजार कुटुब इस स्टोर के सदस्य है। हर कुटुब का एक वोट है। हरेक को पाच डालर का शेयर खरीदना पडता है। स्टोर मे हर तरह के खाद्य-पदार्थ, मास, दूध, मक्खन, घर में लगनेवाली अन्य वस्तुए, पेट्रोल आदि सब चीजे मिलती है। इनकी करीब तीस लाख डालर की कमाई है और तीस लाख डालर के करीब ही खर्च भी। यहा चीज सस्ती मिलती है और प्रत्येक शेयर पर ४ प्रतिशत लाभाश भी मिल जाता है। हर तरह के बीमे का काम भी यहा करते हैं। बीमारी आदि मे डाक्टरी व्यवस्था, रहने के लिए नया घर ढूढना आदि कार्यों मे भी अपने सदस्यो की यह मदद करता है।

सेन्फ्रै सिसको मे और भी अनेक समारोह हमारे प्रतिनिधि-मडल के सम्मान मे हुए। भारत, पाकिस्तान, लका के विद्यार्थियो की ओर से इटर-नेशनल हाउस मे एक दिन दोपहर के खाने का आयोजन भी किया गया। इनमे पाकिस्तान, भारत, लका प्रोजेक्ट के सलाहकार डा० पार्क भी उपस्थित थे। एक पूरा दिन हमने वाइ० एम० सी० ए० की विभिन्न शाखाओ के सदस्यो से बातचीत करने मे बिताया और विशेपत किशोरो से सबधित उनके कार्यक्रमो के सबध मे बातचीत की। ये कार्यक्रम 'वाइ' क्लब द्वारा अयोजित किये जाते है। 'वाइ' क्लब के सदस्यो की उम्र बारह-तेरह वर्ष से सतरह-अठारह तक होती है। इनमे से कुछ क्लब सिर्फ लडको के लिए, कुछ सिर्फ लडकियो के लिए और बहुत-से दोनो के लिए भी होते है। वाई० एम० सी० ए० की पेनिन्सुला शाखा मे सबमे अधिक 'वाई' क्लब है। इसमे करीब एक दर्जन किशोर सदस्य होते है। किसी सदस्य के घर या अन्य पूर्व-निश्चित स्थान पर एकत्रित होकर ये लोग अपनी समस्याओ के सबध मे बातचीत करते है। वे अपने खेल-कूद प्रतियोगिताओ आदि का आयोजन भी किया करते है। अपनी पसदगी की छोटी-मोटी सेवा करने का कार्यक्रम भी बनाते है। इनमे से एक क्लब मे जब हम पहुचे तो करीब बीस

लडकिया, जिनकी उम्र पन्द्रह से वीस वर्ष के अदर थी, इकट्ठी थी। उनसे जव हमने पूछा कि भारत के वारे मे तुम लोग क्या जानती हो, तव अलग-अलग लडकियो ने निम्न वाते वताई—

१ वहा मक्खिया वहुत है, लेकिन ताजमहल वहुत ही सुदर है।

२ हिंदुस्तान मे ऊट वहुत होते हे।

३ वहा के मदिर मुझे वहुत पसद हे।

४ भारत रहने के लिए वहुत सुदर जगह है। मैं वहा जाकर रहना चाहती हू। वहा वृक्ष वहुत हे। मेरे पिता ने भारत के कई सुदर चित्र खीचे है।

५ भारत मे हर चीज को पवित्र गगा नदी मे सर्मपित कर देते है—वच्चे आदि सवकुछ।

६ शहरो मे भीड लगी रहती है।

७ वहा असख्य लोगो का समुदाय वसता है, गरमी वहुत है।

८ सपेरे वहुत रहते हैं।

९ हमको भारत की फिल्मो से पता चलता है कि वहा के पहनावे और कपडे वहुत रगीन और सुदर होते हें। मदिर वडे आकर्पक हे।

१० मुझे तो धर्म मे वडा रस है। मुझे वहा के प्रति वडा आकर्षण है।

११ हिंदुस्तानियो की वहुत सारी पत्निया होती है।

वच्चो के इस तरह के जवावो से हम लोगो को आश्चर्य नही हुआ। उन लोगो को भारत व अन्य एशिया तथा अफ्रीका के देशो के वारे मे वहुत कम जानकारी थी, क्योकि उनके स्कूलो मे हमारे देश के वारे मे कुछ सिखाया नही जाता। इसलिए यदि उन्हे यहा के वारे मे जानकारी न हो या गलत जानकारी हो तो उसमे क्या आश्चर्य है ? आवश्यकता यह है कि इन अस्पष्ट और विचित्र धारणाओ के स्थान पर अपने देश का सही नक्शा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाय।

नेब्रास्का प्रात के लिकन शहर मे वहा के कृपि-कालेज के अधिकारी ने हमको वताया कि उस क्षेत्र मे एक किसान करीव-करीव तीन हजार एकड की जुताई कर सकता हे। उस प्रदेश के लोग अधिकतर कजरवेटिव (पुरा-

तनवादी) है। समुद्र के किनारे रहनेवाले लोग अधिक उदार मत के हैं, क्योकि विदेशियो से मिलने का अवसर उन्हे अधिक मिलता। उस प्रात मे खेत बडे-वडे, औसतन करीब १६८ एकड के, होते हैं। छोटे किसान अपनी खेती पर आश्रित हैं, लेकिन शहर मे मजदूरी करते है। वहा का सबसे वड। फार्म 'राच' कहलाता हे, जोकि एक छोटे-मोटे कस्वे के वरावर वडा है। हरेक किसान अपना काम खुद अपने-आप ही कर लेता है। साथ ही वह एक कुशल व्यापारी भी है। ये खुद के प्रयत्न से अपनी प्रगति करते हैं। इन लोगो को हम लोगो मे वहुत दिलचस्पी थी, क्योकि वहा विदेशी वहुत ही कम जाते है।

नेब्रास्का विश्वविद्यालय मे काफी भारतीय छात्र हे। वहा के भारतीय विद्यार्थी-सघ ने प्रतिनिधि-मडल के स्वागत का एक अयोजन भी किया। इस विश्वविद्यालय से सवधित कालेज, देश के उन कालेजो मे से है, जिन्हे अच्छी-खासी खेती की जमीने मिली हुई हैं। विश्वविद्यालय के कृषि-सवधी अधिकारियो से हमारी मुलाकात हुई। इसी विभाग के अतर्गत ४-एच क्लव भी सगठित हे। हमे वताया गया कि इनके एक्सटेंशन कार्य-क्रम को कुल मिलाकर अच्छी सफलता मिली हे। लिंकन-प्रवास के दौरान मे हमने एक काउटी एक्सटेंशन वोर्ड की वैठक की कार्यवाही भी देखी।

हम शिकागो मे यग क्रिश्चियन वर्कर्स के मेहमान वने। शिकागो मे पहले दिन हम कुक काउटी वेलफेयर रिहैविलिटेशन केद्र देखने गए, जो विपत्तिग्रस्त लोगो की सहायता करता है। हर साल करीव दस हजार व्यक्ति इसमें अपना नाम दर्ज कराते हैं, लेकिन सिर्फ तीन हजार को ही यह केंद्र काम दिलाकर वसा सकता है। इसका खर्च केंद्रीय और राज्य सर-कारें ही उठाती है, लेकिन काउटी की ओर से भी कुछ मदद मिल जाती हे। यग क्रिश्चियन वर्कर्स ने उस सस्था के सगठन और कार्यो के वारे मे हमे पूरी जानकारी दी। तीन प्रशिक्षणार्थियो के मुखिया ने हमे वताया कि उन तीसो व्यक्तियो को कैसे उनके सगठन की ओर से, उनके कामो की जगह से, दूसरे क्षेत्रो मे ले जाकर अन्य सहयोगियो से मेल-मुलाकात वनाये रखने का प्रवध किया जाता है।

जब हम शिकागो यूनीवर्सिटी देखने गये तो पाया कि वहा के तीन

विद्यार्थियो को अपना काम खुद करने के लिए प्रोत्साहित करते है। यह स्वय एक अच्छे सलाहकार और मूलत विभिन्न प्रवृत्तियो के समन्वयकर्ता व मार्गदर्शक के रूप मे काम करते है। इस यूनियन मे ४००० के करीब विद्यार्थी है। विद्यार्थियो की १०७ सस्थाए यूनीवर्सिटी कैंपस मे सगठित है। इनमे से दो सस्थाए राजनैतिक भी है—एक तो 'इडिपेडेट स्टुडेट लीग' है और दूसरी 'स्टूडेट्स रिप्रेसेटेटिव ग्रुप'। अलग-अलग विपयो के लिए अलग-अलग क्लब वने है। दम-पद्रह विद्यार्थी भी किसी एक विषय मे दिलचस्पी रखते हो तो वे अपना अलग क्लब कायम कर लेते है। वहुत-से साहित्यिक है, तो अनेक भाति-भाति की कला के विकास के लिए है। सगीत के लिए अलग। खेल-कूद के लिए भी कई क्लब बने है। नई-नई भाषाओ के सीखने के लिए भी क्लब है और अन्य देशो की सास्कृतिक जानकारी हासिल करने के लिए भी कई लोग उत्सुक रहते है।

विद्यार्थियो का अपना स्वतत्र अखबार चलता है। इसके लिए अलग से एक लिमिटेड कारपोरेशन बना हुआ है। यद्यपि इस पत्र की नीति एक दम स्वतन्त्र है, फिर भी विश्वविद्यालय से इसको मदद मिलती है। इनकी राय विद्यार्थियो की राय से मिलना आवश्यक नही है। पत्र की नीति उस का सपादक-मडल निर्धारित करता है। इस मडल का चुनाव विद्यार्थी ही करते है, पर सारे विद्यार्थी वोट नही दे सकते। जो इस पत्र के साथ सबधित है, वे ही वोट के अधिकारी है।

एन आरबर मे हमने दो दिन बिताये और मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी देखने गये। इस यूनिवर्सिटी के कैंपस मे, अन्य किसी भी एक यूनिवर्सिटी कैंपस की अपेक्षा, सबसे अधिक सख्या मे भारतीय विद्यार्थी है। भारतीयो मे भी सबसे ज्यादा गुजराती विद्यार्थी है। इससे यह कहावत वहा प्रसिद्ध हो गई है कि एन आरबर मे अमरीकियो के वाद जिस प्रदेश का वहा सब-से ज्यादा प्रतिनिधित्व है वह है गुजरात। यूनिवर्सिटी के उपाध्यक्ष, श्री जेम्स लेविस ने, जो विद्यार्थियो से सबधित मामलो का निरीक्षण करते है, भारतीय विद्यार्थियो की बडी सराहना की।

एन आरबर यूनिवर्सिटी का सालाना बजट साढे सात करोड डालर का है। इसमे से अधिकतर पैसा प्रातीय सरकार से मिलता है। जब हम

वहा पहुचे तो उस समय वहा की प्रातीय सरकार की आर्थिक हालत बहुत नाजुक थी। इसलिए उनसे यूनिवर्सिटी को पैसा नही मिला था और वहा के प्रोफेसर और शिक्षको का वेतन भी नही दिया गया। वहा के अधिकारियो ने हमे बताया कि १८९० तक वे लोग सह-शिक्षण के पक्ष मे नही थे। स्त्रियो को समान शिक्षा दी जाय, इसके भी पक्ष मे वे नही थे। जब स्त्रियो को मेडिकल व दूसरे स्पेशिलाइज्ड (खास-खास विषयो के) कालेजो मे प्रवेश मिला तो उस यूनिवर्सिटी मे दगे हो गये थे। अमरीका के लोग तो पिछले महायुद्ध के बाद से ही बाहरी दुनिया के प्रति जागरूक हुए है, अन्यथा वे तो अपनी आर्थिक प्रगति के बारे मे ही अधिक दिलचस्पी रखते थे। उन्होने यह भी कहा कि अमरीका को अभी अधिक उम्रवाला बनने की जरूरत है। यह बूढा बनेगा तब इसे अधिक अनुभव होगा। अब हमने अमरीका के बाहर जाना शुरू किया है तो दुनिया की प्रगति मे दूसरे मुल्को ने जो कमाल हासिल किया है, उसका अदाज लगा सकते है। उसे समझकर उसकी तारीफ भी कर सकते है। सस्कृति के क्षेत्र मे दूसरे उनसे कितना आगे बढे हुए है, इसका भी पता चलता है।

उन्होने यह भी बताया कि उनका शिक्षण मूलत लोगो को अपने काम-धधो मे मदद करे, इसपर आधारित था। इसकी उन्हे उस समय आवश्यकता भी थी। लेकिन अब समय आगया है कि उनके शिक्षण मे अधिक गहराई हो। स्पुतनिक के आविष्कार ने उन सबको घबरा दिया है, इसलिए अब उनको अधिक इजीनियर बनाने की आवश्यकता महसूस होती है।

उन्होने यह भी बताया कि अब वे अपने यहा बाहर के देशो से आने-वाले विद्यार्थियो पर विशेष महत्व देते है। जहातक विदेशी विद्यार्थियो का सबध है, हिदुस्तानी विद्यार्थी पढाई मे उन सबसे अच्छे है और अमरीका के विद्यार्थियो से बराबर टक्कर लेते है। उनमे एक ही खामी है कि वे वहा के विद्यार्थियो से घुल-मिल जाने की बजाय अपना अलग दल बनाकर रहते है। यह अच्छा नही है।

विद्यार्थियो की 'कोआपरेटिव हाउसिग स्कीम' के अतर्गत, जोकि 'इटर कोआपरेटिव' नामक सस्था का ही एक अग है, उस समय आठ कोआपरेटिव

इमारते थी। इस सस्था का सपूर्ण सचालन, इन इमारतो मे रहने और भोजन करनेवाले विद्यार्थियो के हाथ मे ही है। भोजन वनाने, वर्तन धोने, इमारतो की देख-भाल करने आदि का सारा काम विद्यार्थी ही करते हैं। यहीपर भारतीय विद्यार्थियो ने हमारे स्वागतार्थ एक आयोजन किया, जिसमे हमारी एक सदस्या कुमारी मालती वैद्यनाथन ने भारत-नाट्यम शैली मे एक नृत्य प्रस्तुत किया।

अमरीका के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयो मे भारत के वहुत-से विद्यार्थी अपनी उच्च शिक्षा के लिए जाते हैं। पढाई के सिलसिले मे हमारे विद्यार्थियो का स्थान वहुत ऊचा है और वहा के विद्यार्थियो मे इनकी इज्जत है। वहा के अच्छे-से-अच्छे विद्यार्थियो की तुलना मे भी उन्होने अपनी होशियारी की अच्छी छाप वहा के लोगो पर डाली है।

: ७ :

अमरीका के किशोर

शिक्षण और स्वास्थ्य के ऊपर अमरीका मे बहुत ही ध्यान दिया जाता है। खर्च भी खूब होता है। सैकडो फाउडेशन ऐसी सस्थाओ मे दिलचस्पी रखते है। इन सस्थाओ को और विश्वविद्यालयो को हर साल करोडो रुपयो की मदद देते हे। उदाहरण के लिए हम लोग डेट्रोइट मे एक मेथोडिस्ट चर्च के द्वारा चलाये जानेवाले बच्चो के गाव मे गये थे। इसे बच्चो का गाव कहा तो जाता हे, लेकिन इस गाव मे कुल ६० बच्चे रहते हैं। इस सस्था के लिए ७० एकड जमीन है, जिसमे सात-आठ छोटे-बडे मकान बने हुए हे। एक-एक मकान मे सिर्फ सात से आठ लडके और लडकिया रहती है। ये बच्चे अनाथ नही हें, लेकिन इनके माता-पिता इनकी परिवरिश नही कर सकते। उन्हीके लिए यह सस्था चलती है। बच्चो के लिए उसी अहाते मे एक स्कूल है, एक चर्च है। दफ्तर का बडा मकान है, बडे-बडे खेलने के मैदान हे। इनमे कुछ मानसिक उच्छृखला से पीडित बच्चे भी थे। ऐसे सिर्फ दस बच्चो को यहा पढाया जाता है, बाकी को दूसरे सर्वसाधारण स्कूलो मे भेजा जाता हे। इन साठ बच्चो के ऊपर कई लाख रुपये सालाना खर्च होते हैं। हमे तो इसका अदाज लगाना भी कठिन था। इस तरह इतना अधिक खर्च करने की आवश्यकता भी कहातक है, इस बारे मे भी हमे तो सदेह बना रहा।

इस तरह से इतना खर्च करने की वृत्ति अमरीकी लोगो मे पैदा हुई, इसका एक विशेष कारण है। वे लोग प्रत्येक मनुष्य-जीवन को बहुत ही महत्व की दृष्टि से देखते हे। यदि कोई शारीरिक या मानसिक दृष्टि से पगु हो तो उसको ठीक करके, साधारण आदमी बनने के लिए अधिक-से-अधिक खर्च और मेहनत करने के लिए वे तैयार रहते हैं। वे मानते है कि उस व्यक्ति को भी, दूसरो के समान ही, स्वभाविक और उपयोगी जीवन

बिताने का अधिकार है। व्यक्तिगत समानता और स्वतन्त्रता की भावना यहा अपनी चरम सीमा पर पहुच जाती है।

हर माता-पिता को अपने जवान बच्चे के बारे मे फिक्र लगी रहती है कि वह लडका सुशील, समझदार और कामयाब हो। लेकिन व्यस्तता के कारण बच्चो के जीवन को गढने मे माता-पिता का बहुत कम हाथ रहता है। वे खुद तो समय दे नही पाते, इसलिए बच्चो का भविष्य उन्हे बहुत-कुछ राम भरोसे छोड देना पडता है। जब लडका स्कूल और कालेज मे जाता है और कुछ बडा होता है तो अपनी इच्छा के अनुकूल ढालने मे माता-पिता कुछ कर नही पाते। मा-बाप को इतना समय नही रहता कि अपने बच्चो के साथ समय बिताये और उनके रोजमर्रा के जीवन मे दिलचस्पी लें। सबको अपने-अपने कामो से फुर्सत नही मिलती। इसलिए बच्चो का मानसिक विकास कैसे हो रहा है, किशोर अवस्था मे पहुचकर उनकी क्या समस्याए है, इनको न वे समझ पाते है, न उनको सुलझाने मे हाथ बटा सकते है। साथ ही किशोरो के बाहर आने-जाने या अपने लडके-लडकियो को उनके दोस्तो के साथ पूरी आजादी से मिलने-जुलने और बाहर आने-जाने पर उनका कोई नियत्रण नही रहता। इसका नतीजा यह हो गया है कि शादी-विवाह भी लडके व लडकिया अपनी ही पसदगी से करते है। ऐसी हालत मे नई बहू का अपने सास-ससुर के घर मे घुल-मिल जाना बडा मुश्किल होता है। इसलिए शादी होने पर जवान लडका अलग घर बसा-कर रहने लगता है।

किशोरो की मानसिक अस्थिरता का मेरी समझ मे एक और भी महत्वपूर्ण कारण है। अमरीका के लोग और कुटुम्ब अपेक्षाकृत बहुत तेजी से मालदार बन गये। जैसे एक कुटुम्ब जब बिना पूरी मेहनत के आसानी से और बहुत जल्द खूब पैसा कमा लेता है तो उसकी जैसी दशा होती है वैसी ही कुछ-कुछ आज अमरीका के बहुत-से कुटुबो मे देखने को मिलती है। कोई साधारण कुटुब सट्टे मे या लाटरी मे जल्दी से बहुत-से पैसा कमा ले तो उसे पता नही चलता कि उस पैसे का क्या और कैसे उपयोग करे? पैसे को पचाने की भी एक परपरागत सस्कृति होती है। पैसे को उडाये बगैर व्यवस्थित रूप से, उसका शान और ठाठ

से उपयोग करना तभी सभव है जब पैसे के भार से दबे नही, लेकिन सही मानो मे उसके मालिक बन जाय। मैं मानता हू कि अमरीका मे इस धन की आकस्मिक विपुलता की वजह से इस तरह की समस्याए खडी हो गई है, जिसके बारे मे वे लोग खुद बहुत चिन्तित और परेशान है।

इस बारे मे उदाहरण देना हो तो लॉस एजलेस मे स्थित कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी का दिया जा सकता है। वहा करीब पद्रह हजार लडके पढते है। उनमे से दस हजार लडको के पास अपनी खुद की मोटरे है। मोटर है, इसका यह भी मतलब हुआ कि उन लोगो के पास काफी पैसा भी है, जिसे वे मनचाहे ढग से खर्च कर सकते है। कालिज की पढाई होने के बाद अपने खाली घटो मे वे क्या करे ? यह समस्या उनके सामने रोज ही आकर खडी हो जाती है। लडके-लडकिया साथ पढते हैं, मित्रता हो ही जाती है। इस मित्रता मे स्वाभाविक ही एक-दूसरे के प्रति आकर्षण रहता है। ये नौजवान और नवयुतिया एक-दूसरे की मित्रता और सहवास मे समय बिताना पसन्द करते है। नाटक, सिनेमा, क्लब-रेस्तरा, नाच-घर, नाइट-क्लबो आदि मे अधिकतर साथ जाना और शराब आदि नशीली चीज़ें पीना उनके जीवन का अग-सा हो गया है। इसकी वजह से जीवन के दृष्टि-कोण मे जो खराबिया आना स्वाभाविक है, वे आ जाती हैं।

इन्ही बातो के परिणामस्वरूप, जैसे कि मिशीगन स्टेट के गवर्नर श्री विलियम्स ने हमे बताया था, बहुत-से अमरीकियो को कुछ समय के लिए तो पागलखाने का चक्कर जरूर लगाना पडता है। यह परिस्थिति सच-मुच मे ही अमरीका के नौजवान माता-पिता के लिए बडी शोचनीय हो गई है। नई-नई शादिया बिना किसी अनुभव के जल्दबाजी मे हो जाती हैं और परिणामस्वरूप कौटुबिक जीवन मे अशाति और फिर तलाक तक की नौबत आ जाती है।

इस तरह से आये हुए विपुल वैभव को पचाने की ताकत आती है आध्यात्मिक दृष्टिकोण से। मनुष्य जब अपने जीवन के बारे मे और कर्तव्य के बारे मे गहराई से सोचने लगता है और भगवान की तरफ अभिमुख होता है तो फिर रोजमर्रा के भडकीले जीवन मे वह नही जाता। धीरे-धीरे

वह अपने जीवन को उन्नतिशील बनाने मे लग जाता है। इन बाहरी आडबरो मे जो क्षणिक सुख है, उससे आकर्षित न होकर मानसिक शाति की तरफ मुडता है, जो कि सतत सत्कर्म, सेवा और उद्योग से ही मिल सकती है। जीवन का स्तर ऊचा करने की बजाय जीवन को सादगीमय बनाने मे जो चैन और आराम मिलता है, उससे अमरीका के लोग पूरी तरह वचित है।

अब लोगो का ध्यान इस कमी की ओर जा रहा है। भारत सरीखे पुरानी सस्कृतिवाले देशो की तरफ उनकी नज़र जा रही है। हमारे पुराने वाड्मय और साहित्य को पढने मे उनकी रुचि बढ रही है और योगसाधना की तरफ भी आकर्षण हो रही है।

एक बार हम रेल द्वारा न्यूयार्क से वाशिंगटन जा रहे थे। वहा के रेलो के डिब्बो मे भीतर-ही-भीतर शुरू से आखिर तक जाने का रास्ता बना होता है। रेल के बीच मे दो-तीन पूरे डिब्बे किसी कालिज के विद्यार्थियो के लिए सुरक्षित किये हुए थे। मैं जब एक डिब्बे से दूसरे डिब्बे मे कुछ काम से गया तो इन डिब्बो से गुजरना पडा। इन तीनो डिब्बो मे कालिज के लडके-लडकिया भरे थे। इनकी उम्र करीब सोलह से बीस की होगी। सब फर्स्ट क्लास मे थे और एक-एक के लिए एक-एक सीट पहले से निश्चित की हुई थी। कालिज की तरफ से ये लोग या तो भ्रमण के लिए या किसी विषय का अभ्यास करने के लिए कही जा रहे होगे। कुछ लडके व लडकिया पैर फैलाकर सो रहे थे, कुछ पढ रहे थे। कुछ लडके अपनी दोस्त लडकियो के साथ घुल-मिलकर वार्तालाप कर रहे थे। कुछ लडके तो निस्सकोच आपस मे प्रेमालाप और प्रेमालिगन भी कर रहे थे। उनके और साथियो के सामने और दूसरे कई लोग जो आ-जा रहे थे, उनके सामने भी उन्हे किसी तरह की शर्म या सकोच नही मालूम हो रहा था, यहातक कि उनको शायद यह भी नही महसूस हो रहा था कि वह कोई गलत या अनपेक्षित काम कर रहे हैं। ऐसा लगा कि यह इन बच्चो के दैनिक जीवन का अग ही बन गया है। यह हालत इन वर्षो मे कुछ अधिक बढ गई है, ऐसा लगता है, खासकर लडाई के जमाने मे जब अमरीका के नौजवान सिपाही बडी सख्या मे बाहर के देशो मे गये तो वहा उन्हे इस तरह का जीवन बिताने

की पूरी तरह स्वतन्त्रता और छूट मिली। सिपाही तो वे थे ही, पैसा भी खूब था, इसलिए जहा कही भी जाते, उनको लडकियो के साथ खुलकर समय बिताने का खूब मौका मिला। उनके जीवन मे जो यह एक तरह की उच्छृङ्खलता आ गई है, उसको रोकने मे उन्हे बडी कठिनाई होगी

यह सब होते हुए भी कौटुविक पवित्रता की भावना अभी भी उनमे कायम है, खासकर बडी उम्र के लोगो मे। तलाक बहुत ज्यादा नही होते। तलाक को वहा भी अच्छी नजर से नही देखा जाता है। जहातक हो सके उससे बचने की कोशिश की जाती है। शादी से पहले लडका-लडकी आपस मे आजादी से मिले-जुले, इसकी पूरी स्वतन्त्रता मा-बाप देते है। जब लडके-लडकी को खुद अपनी पसदगी करनी है तो इसके अलावा कोई चारा भी तो नही रह जाता। जबतक वे आपस मे कई लोगो से बार-बार नही मिलेगे और घनिष्टता नही कायम होगी तबतक वे अपना जीवन-साथी किस प्रकार चुन सकेगे ? लेकिन शादी के बाद कोई लडका अन्य स्त्रियो के साथ आजादी से मिले, इसको कतई पसन्द नही किया जाता हे।

वहा बडे-से-बडे और नामी परिवार के लडके व लडकिया साधारण-से-साधारण व्यक्ति से शादी कर लेते हे। उसमे न तो उनके माता-पिता रुकावट डालते है, न समाज मे उसे बुरा या हलका ही माना जाता है। इतना होते हुए भी अधिकतर लोग क्रिश्चियन धर्म मे गहराई से विश्वास करते है और विवाह को बडा पवित्र बधन मानकर जीवन भर उसे खुशी से निबाहने का प्रयत्न करते है। हॉलीवुड मे बने फिल्म आदि को देखकर वहा के जीवन के बारे मे हमारी धारणा बना लेना गलत होगा। सिनेमा-जगत का जीवन तो हर जगह ही अलग होता है, लेकिन वह तो, जैसा हमारे यहा है, वहा भी अस्वाभाविक है और वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नही रखता।

साथ-ही-साथ इस समस्या का एक दूसरा पहलू भी मुझे पाठको के सामने रख देना चाहिए। एन आरबर यूनिवर्सिटी के अधिकारियो से जब हम मिले तो उनमे से एक ने कहा कि उसको पक्का भरोसा है कि सह-शिक्षण और लडके-लडकियो के स्वतन्त्रता से मिलने-जुलने से लाभ ही हुआ है। उनका आपस का सबध सुधरा है और उनमे नैतिकता भी बढी

है। अब वहा के विद्यार्थी और युवक कम उम्र मे शादी करने लगे है। अधिकारी के खुद के जमाने मे, विद्यार्थी रहते हुए कोई शादी की बात सोचता भी नही था। अब तो वही करीब चार-पाच हजार विद्यार्थी शादी-शुदा है। एक साथ पडते या काम करते है। वह लडके-लडकियो की शादी कम उम्र मे हो, इसके पक्ष मे थे। उनके मतानुसार आज अमरीका के युवक सुधार पर है। अखबार, फिल्म आदि में अनैतिक खबरें और चित्रो आदि का इतना प्रचार होते हुए भी वहा के नवयुवक गिरने के बजाय सुधर ही रहे है। उनकी नीतिमत्ता भी बढ रही है। उन्होने यह भी बताया कि गत महायुद्ध मे लाखो अमरीकी नवयुवको को सैनिक बनकर या दूसरी हैसियत से विदेश जाने का मौका मिला, इससे उनका दिलोदिमाग खुला है और दुनिया को देखने का परिणाम उनके दिमाग पर अच्छा ही पडा है।

एक बात मे अमरीकावालो ने बडी प्रगति की है। इसका उनके नव-युवको पर बडा अच्छा असर है। वह है श्रम की प्रतिष्ठा—हर काम को और उसके करनेवाले को समान समझना। कोई भी काम छोटा या बडा नही। धनवान-से-धनवान आदमी भी छोटे-से-छोटा काम करने मे शर्म महसूस नही करता, न हिचकिचाता है। रेलवे स्टेशन आदि पर, जहा कुली हो तो भी धनवान आदमी भी, जिसको पैसा बचाने की कोई परवा नही है, अपना सामान अपने हाथो से ले जायगा। घर मे नौकर आदि रखने की गुजाइश होते हुए भी वे लोग अपना सारा काम खुद अपने हाथो से कर लेना पसद करते है, यहातक कि झाड-पोछ, बरतन माजना आदि सारा काम धनी घर की स्त्रिया भी अपने हाथो से करती है। हा, मशीनो की मदद से सारा काम जल्दी निपट जाता है और उसमे गदगी भी कम महसूस होती है। साफ-सफाई या दूसरा कोई हलका काम करने की वजह से कोई आदमी हलका समझा जाय या उसका दर्जा कम हो, ऐसी कोई बात नही है।

हमारे सारे ग्रथो मे इस बात पर बहुत ज़ोर दिया है, हमारा धर्म और सस्कृति भी इसपर जोर देती है, गाधीजी ने भी बराबर जोर देकर हमे समझाया है कि हमको काम की वजह से लोगो मे फर्क नही करना चाहिए, फिर भी अफसोस की बात है कि हमारे देश में इस तरह की समानता अभी तक नही आई है। अमरीका में इसका सही मानो में पालन हो रहा है।

इसके अनेक ऐतिहासिक कारण भी है। अमरीका एक नया देश है, बडा देश है और यहा की जनसख्या बहुत कम है। अनेक कारणो की वजह से यह सभव हुआ है, फिर भी हमे मानना चाहिए कि अमरीका के लोगो के लिए यह एक बडे गर्व करने लायक स्थिति उन्होने कायम की है। नई पीढी के लिए, उनकी मानसिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए, यह एक बडी देन है। वहा के बालको और किशोरो को इस वातावरण का जरूर लाभ मिलेगा।

: ८ :

अमरीका के कुछ छोटे-बड़े कारखाने

हम लोग अमरीका मे पहली वार पहुचे ही थे। न्यूयार्क में हमारा दूसरा दिन था। न्यूयार्क के दोस्तो ने हमारे लिए पहले से ही कुछ कार्य-क्रम निश्चित कर रखा था। उन्होने कहा कि सवसे पहले हमको न्यूयार्क के वडे-से-वडे कारखाने मे ले जायगे। हम वहुत खुश हुए। अमरीका मे दुनिया के वडे-से-वडे उद्योग हे। न्यूयार्क वहा का सबसे वडा व्यावसायिक नगर है। हमने पूछा कि किस चीज के कारखाने मे हमे ले चलेगे तो उन्होने जान-वूभकर पहले से हमे कुछ वताया नही।

जव हम लोग कारखाने मे पहुचे तो हमे वडा आश्चर्य हुआ। शहर के ही एक कोने मे एक साधारण मकान मे हमे ले गये। वहा से लिफ्ट मे आठवी या दसवी मजिल पर हमे उनके छोटे-से दफ्तर मे ले गये। कही आस-पास मे भी कारखाना हो, इसकी गुजाइश नही लग रही थी। न वडी-वडी मशीने दीख रही थी, न कही से वेगन या लारिया भारी-भारी सामान ला रही थी, न ज़ोरो का प्रकाश ही था। हमारी समझ मे नही आ रहा था कि आखिर यह कौन-सा गोरख-धन्धा है। कही भूल से हमे गलत जगह तो नही ले आया गया। पर क्योकि नये-नये ही वहा पहुचे थे, इसलिए एक सभ्य मेहमान की तरह चुपचाप जहा वे कहते उनके पीछे-पीछे जा रहे थे। अपने अज्ञान का प्रदर्शन भी तो नही करना था न ?

जव कारखाने के अन्दर पहुचे तव पता चला कि वहा स्त्रियो के लिए कपडो की सिलाई होती हे। अमरीका मे वने-वनाये कपडे पहनने का ही अधिक रिवाज है। माप देकर दर्जी से कपडे वनाना तो वहा वहुत महगा पडता है। वहुत वडे परिमाण मे एक साथ अलग-अलग माप के कपडे वनाकर छोटे-वडे स्टोर्स और दुकानो को वेच देते हैं।

न्यूयार्क शहर मे लोहे, मोटर, मशीनरी आदि वनाने के कोई वडे

कारखाने नही है । वहा तो व्यापार, आयात-निर्यात, शेयर्स खरीदी-बिक्री आदि का काम अधिक होता है । कारखाने तो उत्तर मे शिकागो-डेट्रोइट विभाग मे ज्यादा बने हुए है । चूकि इन कपडो के सिलाने के बहुत-से छोटे-मोटे 'कारखाने' न्यूयार्क मे है और इसी व्यवसाय मे वहा अधिक-से-अधिक मजदूर काम करते है, इसलिए हमारे मित्रो ने कहा था कि वे हमे न्यूयार्क के सबसे बडे उद्योग को बताने ले जा रहे है ।

अमरीका मे बना-बनाया तैयार कपडे बनाने का काम बहुत बडे परिमाण मे होता है । सारे देश मे कितना कपडा खर्च होता है, इसका अपने लिए तो अन्दाज लगाना भी कठिन है । हम लोगो की अपेक्षा वहा हर व्यक्ति के पीछे औसत कपडे का खर्च कम-से-कम तीस-चालीस गुना अधिक तो होगा ही । जब सारे ही लोग बने-बनाये कपडे ही खरीदे तब कितनी सख्या मे ऐसे कपडे बनते होगे, इसकी कुछ कल्पना पाठको को हो सकेगी ।

रोज नई-नई फेशन निकलती है । कभी गले के काट मे फर्क कर दिया तो कभी पट्टे का ढग बदल दिया । कभी फ्रॉक लम्बाई मे छोटा कर दिया तो कभी बडा । इस तरह से नई फैशन चलाकर ये पुराने कपडो का चलन बन्द करवा देते है । लोगो को नये-नये कपडे खरीदने के लिए करीब-करीब बाध्य-सा कर देते है । नई-नई डिजाइने बनाने मे करोडो-अरबो रुपये खर्च कर देते है । अच्छी डिजाइने बनानेवालो को भरपूर पगार दी जाती है।

इन कपडो को बनाने के लिए बहुत बडी पूजी लगाकर बडे-बडे कार-पोरेशन बने हुए है । उन सबकी आपस मे मिली-जुली सस्थाए एव एसो-सियेशन भी है । इन सबके प्रतिनिधि मिलकर आपस मे फैसला करते है कि अब अगले वर्ष के लिए किस तरह का फेशन चलाना है । अगले वर्ष के लिए स्वेटर का गला नये ढग का बनाना तय हुआ तो फिर पुराने ढग का स्वेटर कोई नही बनाया और उसका चलन ही बन्द हो जायगा । यह कार्य-क्रम बडी होशियारी और सोच-समझकर बनाया जाता है, क्योकि इसीपर सारे वर्ष की बिक्री और मुनाफा निर्भर करता है । सारे वर्ष की आवश्यकता का अनुमान पहले से लगाकर उस मुताबिक अपना उत्पादन का कार्य-क्रम बनाते है । इस तरह के व्यवस्थित और पूर्व-निश्चित कार्य-क्रम के अनुसार कपडे बनाकर और विज्ञापन आदि के द्वारा कुछ इस तरह

का वातावरण बनाते है कि साधारण आदमी के पास पुराने कपडे होते हुए भी इनके पास से और नये कपडे खरीदने के अलावा उसके पास और कोई चारा नही रह जाता। खरीददार, सर्वसाधारण व्यक्ति, जिनको ये अपना मालिक समझते है, उन्हीको भुलावे मे डालकर लूटते रहते है और अपनी सम्पति को बढाते है। अमरीका के जीवन मे जो इस प्रकार की एक दौड जोरो से चलती है, उसका दर्शन हमे वहा पहुचते ही मिल गया।

अब जिनको हम कारखाने समझते है, ऐसे कुछ कारखानो का परिचय कीजिये।

शिकागो शहर मे दुनिया के और किसी भी शहर से ज्यादा मोटरे बनती है। ऐसे कारखानो मे जो 'असेम्बली लाइन' होती है, याने जहा गाडी के अलग-अलग पुर्जे फिट करके गाडिया तैयार की जाती है, वह दृश्य देखने लायक होता है। हम लोगो को वहा के विश्व-विख्यात फोर्ड मोटर बनाने के कारखाने मे ले जाया गया। यहा अडतालीस सेकड मे एक गाडी तैयार होकर निकलती है। शुरू से आखिर तक छोटे-बडे पुर्जे, इजन, सीट, गाडी के दरवाजे आदि सब एक के बाद एक चारो तरफ से मशीन की मदद से बराबर आते रहते है। वहा बहुत थोडे ही व्यक्ति काम पर होते है, जो इन पुर्जो को अपनी-अपनी जगह लगा देते है। अलग-अलग पाच तरह की गाडिया एक के बाद एक, जिस नम्बर मे बिक्री के आर्डर आये हुए है, उसीके अनुसार तैयार होती है। कोई एक रग की गाडी है तो कोई दुरगी। रग भी भाति-भाति के। कोई दो दरवाजेवाली गाडी तो कोई चार की। कोई बन्द गाडी तो कोई ऊपर से खुलनेवाली। सबके इजन भी भिन्न-भिन्न होते है। जिस नबर का चेसिस है उसी हिसाब से उसके और पुर्जे भी एक के बाद एक ठेठ तक चले आते है। अनेक चेसिस एक घूमनेवाली बहुत लम्बी जजीर लगी हुई मशीन के ऊपर अपनी गति से लगातार चलते रहते है। इसलिए उसकी गति के हिसाब से मजदूरो को हर गाडी के पुर्जे उसमे लगा ही देने पडते है। यदि जरा-सी गलती हुई तो सारा मामला चौपट। जैसे-जैसे पुर्जे फिट हो जाते है, गाडी अपना स्वरूप लेती रहती है। जब हम इसके आखिरी हिस्से पर पहुचते है तो हर अडतालीस सेकड मे एक ड्राइवर आकर, नई गाडी मे बैठकर फुर्ती से उसको चालू करके, गाडी को चलाते

हुए वहा से वाहर ले जाता है। इस कारखाने मे प्रतिदिन के सोलह घटो मे १०४० गाडिया वनाती है। इस एक कारखाने में करीब ८२०० गाडियो के पुर्जे भी वनते है। सिर्फ फोर्ड कम्पनी के पुर्जे वनाने के ऐसे ही चार कारखाने है। वहा फोर्ड कम्पनी के और भी कई कारखाने है। अमरीका की सिर्फ यह एक सस्था मोटर और लारिया आदि मिलाकर प्रतिदिन दस-ग्यारह हजार गाडिया वनाती है। इस तरह की क्राइसलर आदि के और भी अनेक छोटे-मोटे मोटर वनाने के कारखाने वहा है।

गाडियों की खपत कितनी होती है, इसका भी एक उदाहरण लीजिये। हम अमरीका के नवीनतम और सुन्दर हवाई अड्डे डल्लस (टेक्सस) से गुजर रहे थे। १ मार्च का दिन था। रास्ते मे हमे वहा का 'डल्लस टाइम्स हेराल्ड' पढने को दिया गया। उस रोज इतवार का सस्करण था। १८० पृष्ठ का अखवार था। उसमे १२ विभाग थे और अखवार की कीमत केवल १५ सेंट। उसमे यह खवर छपी थी कि १ मार्च १९५९ तक की दसवी लाख मोटर गाडी गत वर्ष से दो सप्ताह पहले वनी। इसमे क्राइसलर कारपोरेशन ने ९३ हजार गाडी वनाई। चालू वर्ष की तवतक की गाडियों की विक्री की सख्या ४६,५१,००० तक पहुच गई थी।

हम लोगो ने हेनरी फोर्ड द्वारा निर्मित ग्रीनफील्ड गाव मे भी चद घटे विताये। यह गाव तो देखने लायक ही है। करीब सत्तर-अस्सी वर्ष पुराने जमाने मे अमरीका मे जैसे गाव होते थे, ठीक उसी हालत मे इसे वनाया गया है। इसे देखकर अमरीका के पुराने जमाने का अन्दाजा दर्शको को हो जाता है। अमरीका मे चीजें और जीवन इतनी तेजी से वदलते जा रहे है कि आज की पीढी को सिर्फ एक पीढी के पहले लोग कैसे रहते थे, इसका अन्दाज लगाना कठिन हो जाता है। पुरानी चीजें, मकानात तोडते जाते है और नये वनाते जाते है। इससे पुरानी चीजो को देखने की उन

सैकडो गाडिया एक अलग अजायबघर मे रखी है। हर तरह की गाडियो के नमूने वहा है और उनके आग्रह से वे सारी गाडिया वहा चालू हालत मे रखी गई है। वहा हर जमाने के रेल-इजन भी है। उसमे भी किस तरह विकास हुआ, इसका अन्दाज आ जाता है। शुरू का उडनखटोला और हवाई जहाज भी वहा रखा हुआ है। जगह-जगह गाइड रखने मुश्किल और महगे भी होते है, इससे मशीने लगी हुई है। बटन दबाते ही रेकार्ड बजने लगेगा और उस जगह जो चीज रखी है, उसकी विशेषता को बयान कर देगा।

नाक्सविल (टेनेसी) मे सबसे पहले हम टेनेसीवेली एडमिनिस्ट्रेशन के हेड क्वार्टर्स गये। पर्सोनेल डिवीजन के असिस्टेंट जनरल मैनेजर डा० जे० एच० डेव्स ने हमे फेडरल एजेसी की कार्य-प्रणालियो के सम्पूर्ण विवरण से परिचय कराया। टेनेसीवेली एडमिनिस्ट्रेशन ने इस क्षेत्र की आमदनी मे १९२९ से १९५९ के दरम्यान ३५४ प्रतिशत की वृद्धि की है, जबकि देश के अन्य भागो मे इसी दरम्यान २५ प्रतिशत की वृद्धि हो सकी है। टी० वी० ए० की स्थापना के पूर्व इसी क्षेत्र के केवल ३ प्रतिशत किसान बिजली का उपयोग कर पाते थे, जबकि अब ९७ प्रतिशत करते है।

शिकागो मे हमने एक छोटी स्टील की फैक्टरी देखी। यह फैक्टरी रोज का ५० टन माल एक पारी मे पैदा करती है। ये तीनो पारिया चला सकते है। पर फिलहाल एक ही चल रही थी। मजदूरो की सख्या ३२५ थी। यहा सिर्फ एक ही मजदूर-यूनियन था और हर मजदूर को उसका मेबर बनना लाजमी था। फैक्टरी के पास जब काम कम हो तब उनको अधिकार है कि वे मजदूरो को कुछ दिनो के लिए काम पर से हटा दे—बिना तनख्वाह दिये। ऐसे लोगो को सरकार की तरफ से करीब ३५ डालर प्रति सप्ताह घरबैठे मजदूरी मिलती है। मजदूरो की मूल पगार १-९२ डालर प्रति घन्टे है। यदि माल का उत्पादन अधिक हुआ तो १ डालर प्रति घटे तक अधिक मिल जाता है। इस कारखाने मे ६५ प्रतिशत मजदूर नीग्रो है व बाकी के 'सफेद' अमरीकी। दो नीग्रो फोरमेन भी है, जिनके नीचे कई 'सफेद' आदमियो को भी काम करना पडता है। एक-सा काम करनेवाले 'सफेद' या 'काले' मजदूरो की मजदूरी मे कोई फर्क नही है। ये

लोग एक सप्ताह मे पाच दिन और प्रति दिन आठ घन्टे काम करते है।

इन मजदूरो के लिए कारखानो की तरफ से रहने के लिए घर आदि देने की कोई व्यवस्था नही है। जब जितने मजदूर चाहिए, मिल जाते है। यहा मजदूरो की कमी नही है, बलिक शिकागो मे तो बेकारी की समस्या बडे परिमाण मे पाई जाती है। यह कारखाना चार वर्ष मे अपनी लगाई हुई पूरी पूजी को नफे के रूप मे वापस प्राप्त कर लेने की उम्मीद रखता है। इस कारखाने मे न तो कोई खास सफाई नजर आती थी, न मजदूरी बचाने के लिए विशेष मशीनीकरण किया गया था। दफ्तर और कारखाने के मकानात भी मामूली से ही बने थे। उनका कहना था कि वे मशीनो को भले ही खाली रख ले, पर मजदूरो को खाली बैठने नही दे सकते। यह उन्हे नही पोसा सकता। हमारे देश मे स्थिति इसके विपरीत पाई जाती है। हमे तो मशीनो का दाम बहुत ज्यादा देना पडता है, जबकि मजदूरी यहा अपेक्षाकृत बहुत कम है।

शिकागो मे म्किल कारपोरेशन नामक मशीन टूल फैक्टरी भी हमने देखी। वहा कुल मजदूर एक हजार है। मजदूरो का कोई यूनियन नही है। उद्योगपति ही उनके हितो की पूरी रक्षा करते आये है। इससे इन्हे अपना यूनियन अलग से बनाने की आवश्यकता प्रतीत नही हुई। मालिको की तरफ से मजदूरो के साथ जन-सम्पर्क स्थापित करने और उसे बनाये रखने के लिए विशेष व्यवस्था है। कई अधिकारी सिर्फ इसी काम के लिए नियुक्त किये गए है। इनका काम ही यह है कि सारे देश की मजदूरी कब-कैसे बढती है, उसका अध्ययन करते रहे और बिना मागे ही, खुद होकर, जब आवश्यक हो, मालिको को राजी करके, मजदूरी बढा देवे। हर मजदूर इन अफसरो के पास अपनी निजी शिकायते लेकर पहुच सकता है और ऐसी शिकायतो को दूर करने का वे भरसक प्रयत्न करते है। इन दिनो ये सप्ताह मे छ दिन और प्रतिदिन नौ घन्टे काम करते थे, यानी सप्ताह मे कुल ४५ घटे हुए। ४० घटो के ऊपर जितनी देर काम हुआ उनकी मजदूरी ड्योढे के भाव से मिलती है। कम-से-कम मजदूरी १-३० डालर प्रति घटे और अधिक-से-अधिक ३-०६ डालर है। फैक्टरी बहुत साफ-सुथरी है। इस तरह के कारखाने अमरीका मे गिने-चुने ही है।

: ९ :

ये अलादीन के चिराग़

बटन दबाते ही जल्दी-से-जल्दी काम हो जाय, इसके लिए नई चीजे और छोटी-छोटी मशीने अमरीका मे निकलती ही रहती है। समय और मजदूरी दोनो को बचाने और साथ-ही-साथ कम-से-कम मेहनत करके अधिक-से-अधिक आराम मिले, इसका प्रयत्न हरदम जारी रहता है। हरेक आदमी इस कोशिश मे रहता है कि अपनी नई सूझ-बूझ से कोई नई चीज का निर्माण करे। यदि वह चल पडी तो उसके पेटेंट से उसकी अच्छी-खासी आमदनी होने लग जाती है।

वहा की खाने-पीने की चीजे बनानेवाली मशीनो के बारे मे तो हम लोगो को काफी जानकारी है ही। हर तरह के खाद्य पदार्थ बन्द डिब्बो मे मिलते है। फल और साग तो मिलते ही है, पर एक बार के पकाये हुए चावल आदि भी ऐसे डिब्बो मे मिलते है। ऐसे चावल को 'दो मिनट मे तैयार चावल' कहते है। असल मे यह बात एकदम सही भी है। डिब्बा खोलकर दो मिनट मे ही, बिजली के चूल्हे पर रखने से खाने लायक चावल बन जाता है। लेकिन वह स्वाद व लज्जत और मिठास इस तरह के पके हुए चावल मे कहा, जो मन्द-मन्द आच पर पके हुए चावल के खाने मे आती है।

जब हम वाशिगटन मे थे तो हमे भी अमरीका के रसोई और खाना पकाने-सम्बन्धी अनुभव लेने की सनक सूझी। होटल मे छोटे रसोईघर के साथ भी कमरे मिलते थे। हमारे कमरे के साथ लगा हुआ एक छोटा-सा कमरा था, जिसमे चूल्हा व रेफ्रीजरेटर वगैरह थे। अपने ही हाथो से उसी कमरे मे खाना पकाने का तय किया। इस काम के लिए सबसे पहला जरूरी काम था सुपरमारकेट (सर्वव्यापी बाजार) मे जाना। इन बाजारो मे खाने-पीने की हरेक चीज तैयार मिलती है। अधिकाश चीजे टिन मे

डिब्बाबन्द की हुई होती है। यहा डवल रोटी, मक्खन, साग-सब्जी, रिफ्रिज-रेटर मे रखी हुई आइसक्रीम सभी कुछ मिल जाता है। इतने बडे बाजार के होते हुए व्यवस्था के लिए आदमी बहुत ही कम होते है। कई छोटी-छोटी पहियोवाली गाड़िया रखी रहती है। जो चीज़ चाहिए, उसे अपने ही हाथ से उसमे रखते जाइये और फिर खुद ही उस गाडी को ठेलकर ठेठ तक ले आइये। वहापर झट से आपका हिसाब कर दिया जायगा। हिसाब भी मशीनो की मदद से तुर्त-फुर्त हो जाता है। इस तरह चटपट बहुत ही कम समय मे तमाम छुट-पुट खरीदी हो जाती है। बनी-बनाई सब्जिया व सूप डिब्बो मे बन्द खानेवालो की इन्तजार मे ही रहते है। सिर्फ गर्म भर करना पडता है। हम उनमे कुछ मसाले और मिला देते थे। चावल तो तुरन्त तैयार हो जाते थे। जितनी देर मे चावल पके उतने मे डवलरोटी काट ली जाती थी। खाने के अन्त मे पिछावरी के लिए बनी-बनाई कई प्रकार की आइसक्रीम मिल ही जाती थी। उन्हे पहले से लाकर रेफ्रीजरेटर मे रख देते थे। इस प्रकार घटो का काम मिनटो मे हो जाता था। इसमे पैसे आधे लगते थे और मजा दूना आता था। रेस्तरा मे खाना खाने जाओ तो खाना परोसने की मजदूरी ही काफी हो जाती है। अपने कमरे मे इच्छानुसार अपनी सुविधानुसार जब चाहते हिन्दुस्तानी तरीके से अचार वगैरह के साथ हम अपनी पेट-पूजा कर लेते थे। हमने हफ्ते भर वाशिगटन मे इसी प्रकार बिताया।

यद्यपि मेरी पत्नी को खाना पकाने का न तो विशेष ज्ञान ही था, न अभ्यास ही। फिर भी वहा तो वह बिना परिश्रम के न जाने किस चिराग की करामात से एक कुशल 'रसोइया' हो गई। थोडी-सी मेहनत से ही अच्छा खाना बनाकर हमे खिलाने लगी। इतना ही नही, हमने भारतीय मेहमानदारी को भी पिछडने नही दिया और अपने दूसरे भारतीय साथियो को भी निमन्त्रित किया और उनको भी इस तरह का खाना खिलाकर बिना किसी तकलीफ के मेजबानी का लुत्फ उठाया।

स्टेशन पर, हवाई जहाज के अड्डो पर, सिनेमा-घरो आदि मे तरह-तरह की छोटी-बडी मशीने लगी रहती है। उनके पास कोई व्यक्ति नहीं होता। निश्चित रकम का सिक्का उसमे डालने से आप चाहे जिस प्रक

का सेडविच एकदम तैयार हालत मे था तरह-तरह के केक मशीन मे से बाहर आ जायगे। इसी तरह से सिगरेट, चाकलेट, पापकार्न आदि चीजे भी तुरन्त निकल सकती है। लेमनेड, आरेज आदि पेय पदार्थ की शीशिया भी बटन दबाने से झट से बाहर आ जाती है।

वहा मजदूरी महगी होने से हर जगह उससे बचने का प्रयत्न करते है। अपने-आप खाना परोस लेने के रेस्तरा और होटल वहा बहुत है। ऐसे होटलो मे खाना अपेक्षाकृत बहुत सस्ता भी मिलता है। 'सेल्फ सर्विस रेस्तरा' के बजाय ऐसे होटल मे, जहा वेटर्स खाना परोसते है, जाय तो उसी चीज का दाम तिगुना-चौगुना हो जाता है।

कपडे धोने की दुकाने, जिन्हे लाडरेट्स कहते है, वहा अनेक है। अपने सारे कपडे लेकर दूकान पर चले जाय तो आधे-पौन घटे मे सारे कपडे मशीन द्वारा धुलकर और सूखकर आपको मिल जायगे। इस्त्री आपको घर मे आकर करनी होगी। इस बीच आप अपना कोई और काम भी करके आ सकते है।

एक बार न्यूयार्क मे, दुनिया के सबसे ऊचे भवन एम्पायर स्टेट बिल्डिग के ऊपर हम लोग गये हुए थे। वहा ग्रामोफोन रेकार्ड बनाने की एक छोटी-सी मशीन रखी हुई थी। बिना किसी की मदद के, आप खुद ही उस मशीन मे गाना गाइये या कोई बात कहिये या घरवालो के नाम चिट्ठी या सदेश कह दीजिये। वह सारा-का-सारा एक रिकार्ड पर लिख-कर दो मिनट मे ही आपको मिल जायगा। आपको तो सिर्फ वहा स्पष्ट भाषा मे लिखी हुई हिदायतो को पालन करते जाना है और सूचित बटन को समय-समय पर दबाते रहना है। एक और बटन दबाते ही उस रिकार्ड को रखने के लिए लिफाफा मिल जायगा। आप टिकट आदि लगाकर वही से अपने घरवालो के नाम यह रेकार्ड-पत्र पोस्ट कर सकते है। इसका दाम भी बहुत मामूली रखा है। कुल दस-बारह मिनट मे यह सारा काम हो जाता है। घर पर बच्चे आदि चिट्ठी पाने की बजाय जब ग्रामोफोन पर यह रेकार्ड लगाकर आपकी आवाज सुनेगे तो उनकी खुशी का अदाज नही लगाया जा सकता।

इसी तरह एक हवाई अड्डे पर अपने-आप फोटो लेने की मशीन लगी
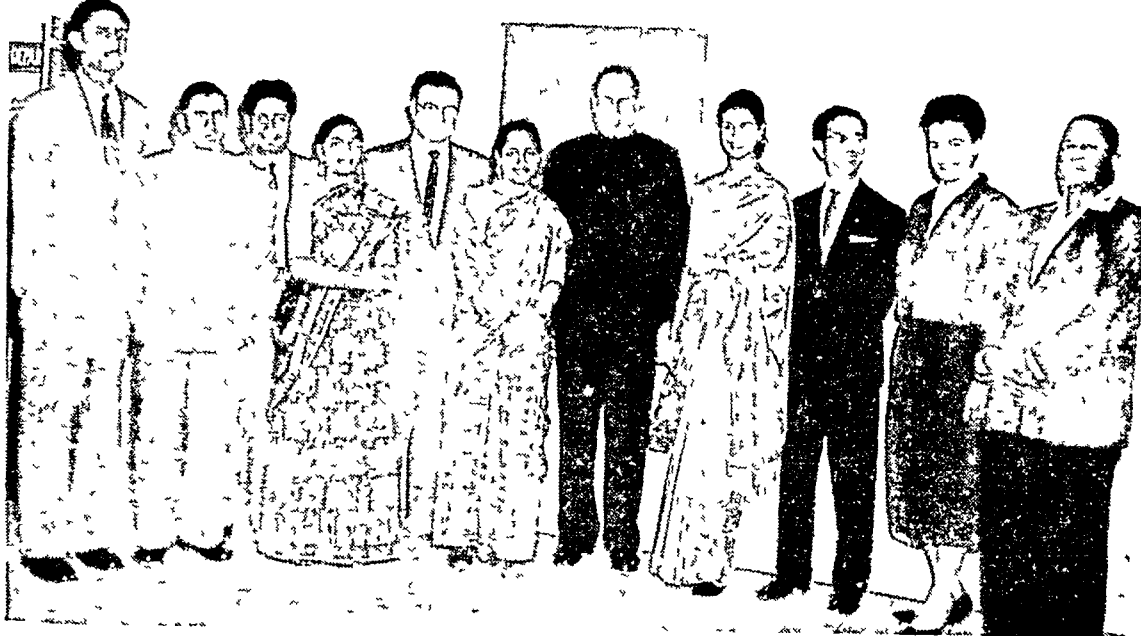
शिष्टमडल अमरीका पहुचा

स्वतत्रता देवी की मूर्ति

'एम्पायर स्टेट बिल्डिग' :
ससार की सबसे ऊची इमारत
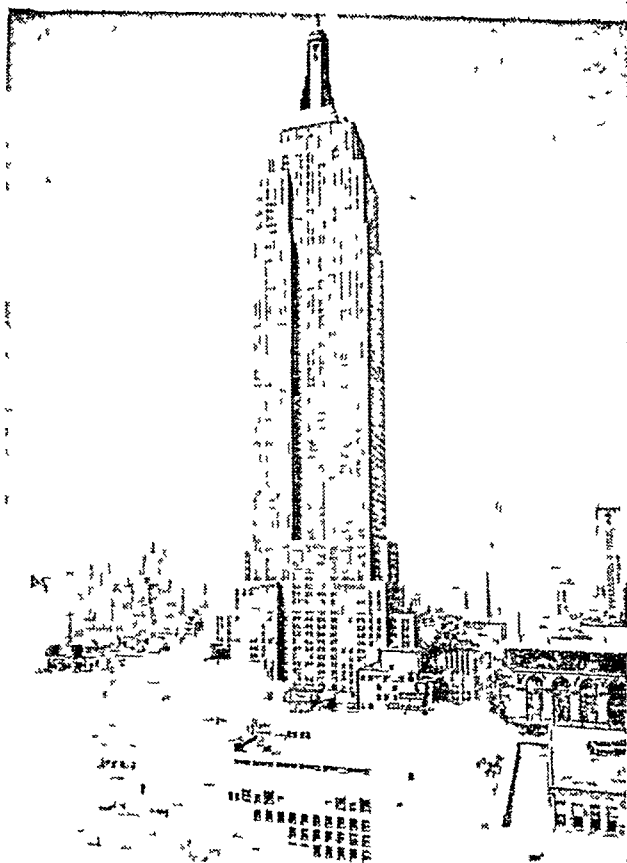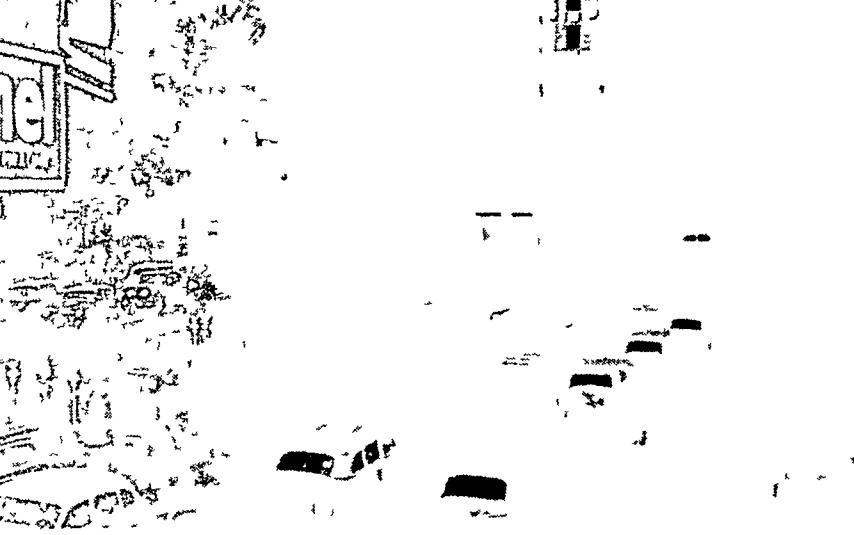
न्यूयार्क का टाइम्स स्क्वायर . रात्रि मे

सयुक्त-राष्ट्र-सघ की जनरल असेम्बली की बैठक का एक दृश्य
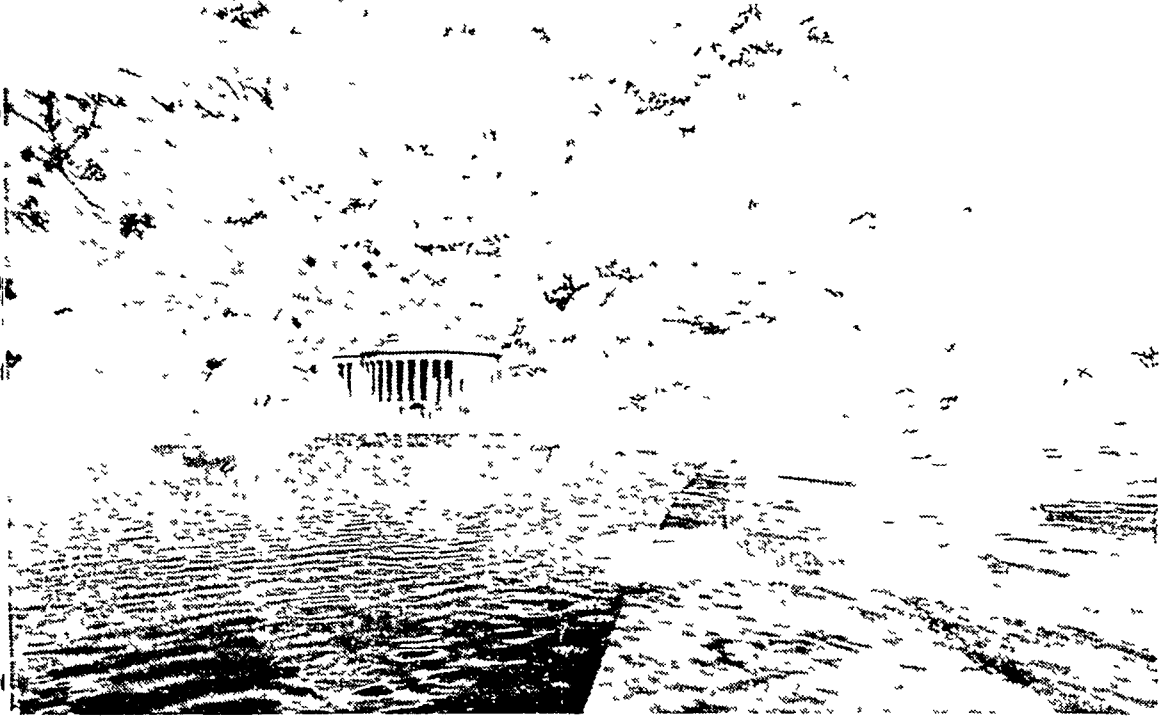
जेफरसन मेमोरियल

ह्वाइट हाउस (राष्ट्रपति भवन)
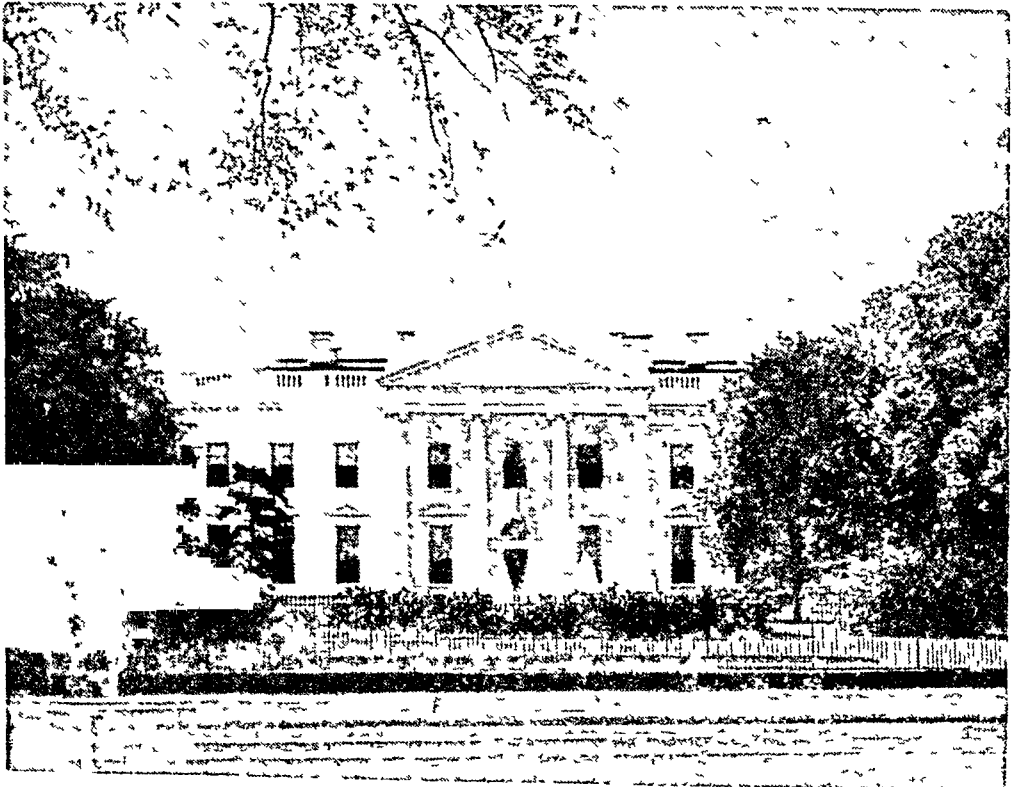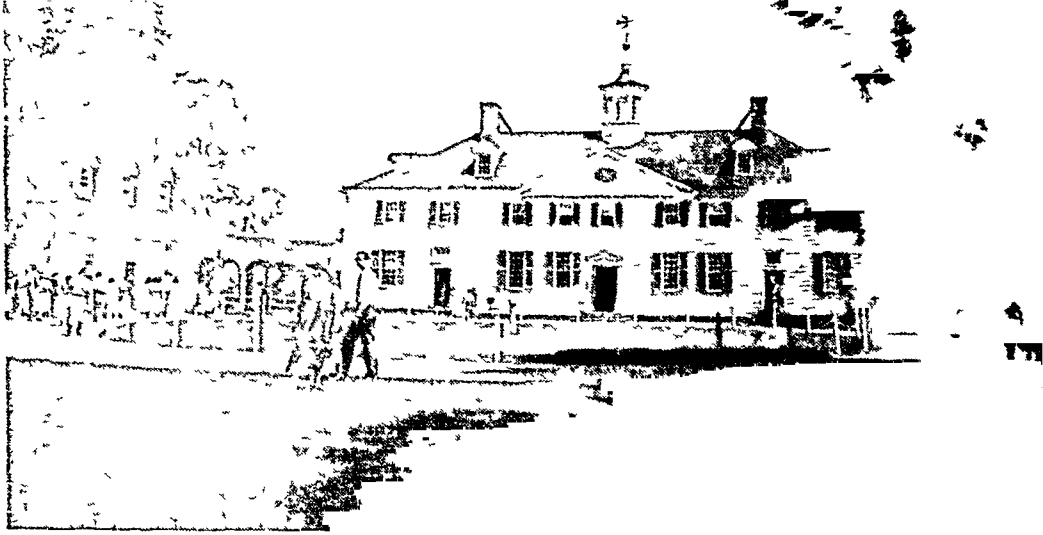
जार्ज वाशिंगटन का पैतृक भवन 'माउंट वर्नन'

एडीसन के 'मेनलोपार्क' का एक कक्ष
एडीसन ने बिजली के लैंप का आविष्कार यहीं किया था

लोम्बार्ड स्ट्रीट, सानफ्रासिस्को
ससार की सबसे अधिक घुमावदार सडक

टेनेसी-वैली का एक दृश्य
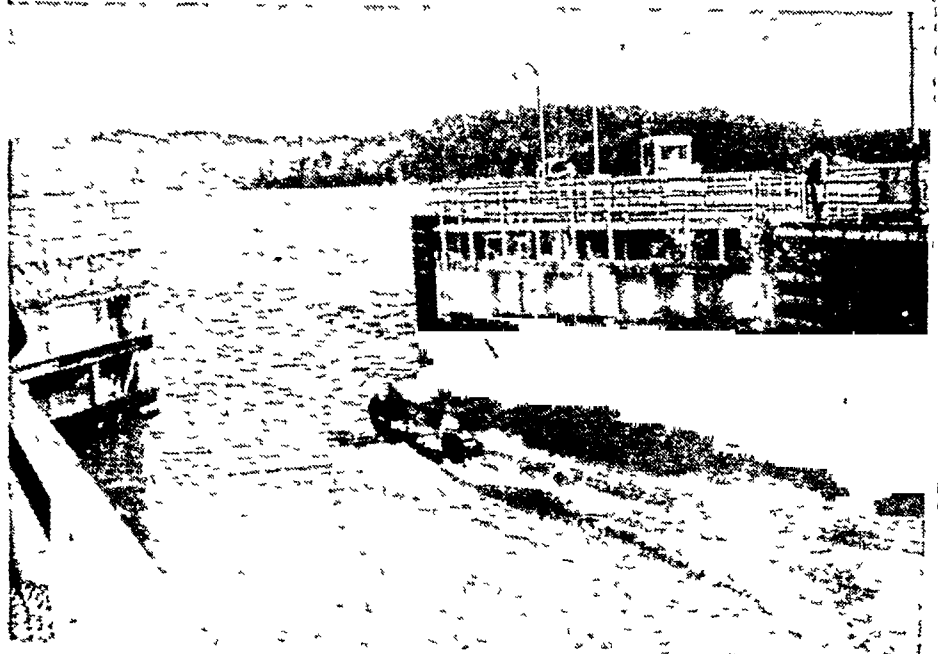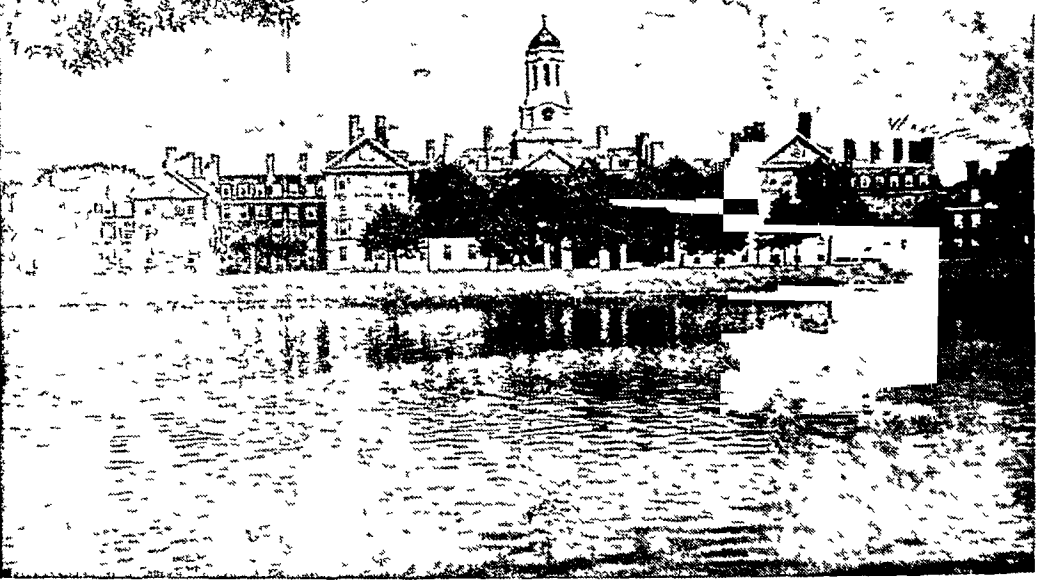
हार्वर्ड विश्वविद्यालय
अमरीका की सबसे पुरानी शिक्षा-संस्था

मिशीगन विश्वविद्यालय का सभा-भवन
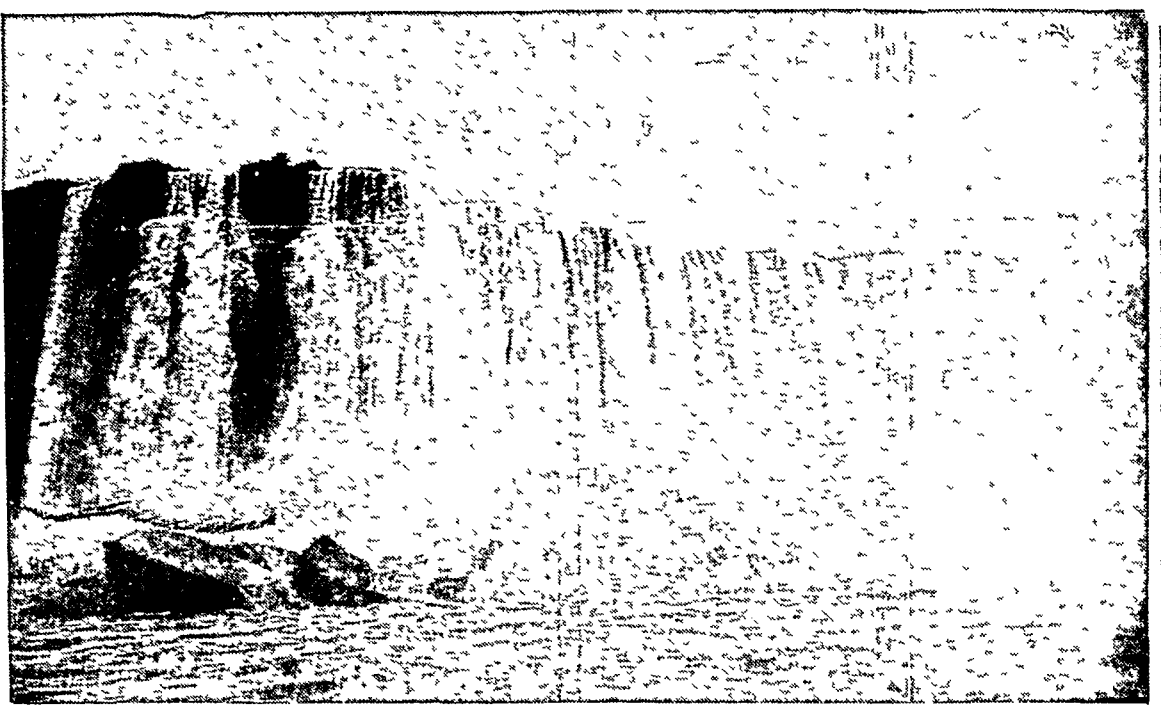
नियाग्रा प्रपात

रेडइडियन सरदार
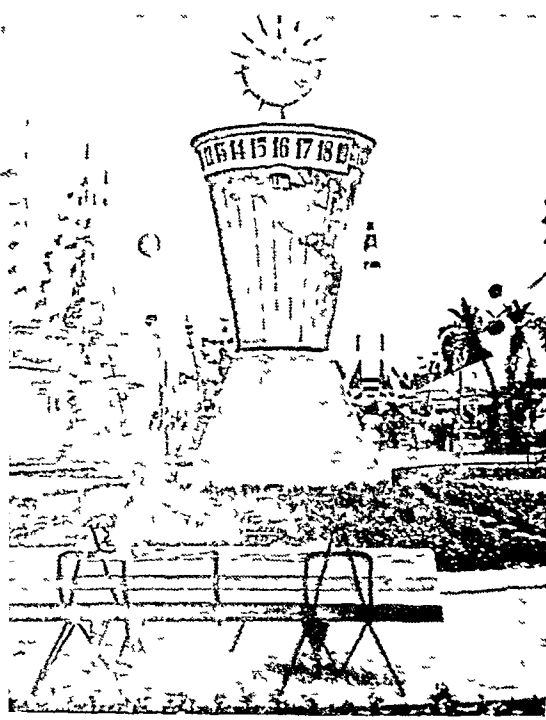
डिसनीलैंड की एक घडी,
जो ससार के हर देश का
समय बताती है

विदाई की भेंट लेखक श्री नेलसन राकफेलर को यरवडा चक्र भेट करते हुए
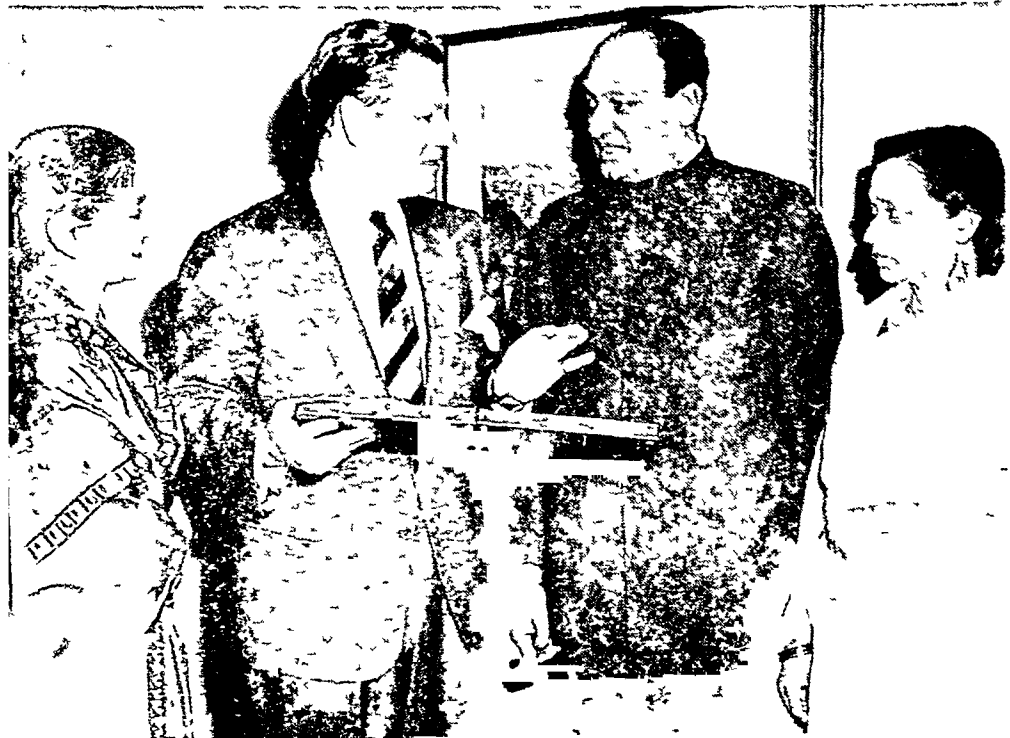
थी। बटन दबाते ही तुरत आपका फोटो तैयार हो जाता है। उसकी धुली हुई प्रति एक छोटे-से फ्रेम मे जडकर दो मिनट मे ही आपको मिल जाती है। हा, ऐसी ली हुई फोटो बहुत स्पष्ट नही आती है।

ऊपर आने-जाने के लिए चलती हुई सीढिया (एसकेलेटर्स) तो आजकल बहुत जगह लग गई है। लेकिन डल्लस मे, जहा अमरीका का सबसे बडा हवाई अड्डा बना है, हमने इससे भी आगे बढी हुई चीज देखी। वहा हवाई अड्डे पर एक जगह से दूसरी जगह जाने मे बहुत ऊचे-नीचे नही जाना पडता है। फिर भी एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाने मे काफी फासला तय करना पडता है। यात्रियो की सुविधा और उनका समय बचाने के लिए वहा चलते हुए रास्ते बना दिये गए हैं। रास्तो के ऊपर रबर की एक सतह लगा दी है, जो अच्छी रफ्तार से लगातार चलती ही रहती है। आप इसपर खडे हो जाय तो अपने-आप वह आपको उस पार पहुचा देगी। यदि आप और जल्दी से पहुचना चाहे तो उसपर चल भी सकते है।

दरवाजे पर पैर रखते ही उसके अपने-आप बन्द हो जाने, खुल जाने का प्रबध तो बहुत-से मकानो मे है। कई जगह हाथ धोने के बाद तौलिये से पोछने की जरूरत न पडे, इसके लिए ऐसी मशीन लगा देते है, जिसमे से गर्म हवा आती है और कुछ ही क्षण मे हाथ सूख जाते हैं। इनमे ऐसी मशीने भी लगी हे, जिनमे बटन दबाने की भी जरूरत नही पडती। आप किसी चीज को न छुए, सिर्फ मशीन के बीच मे अपना हाथ रख दे तो मशीन अपने-आप चालू हो जायगी और निश्चित समय बाद अपने-आप बद भी हो जायगी।

मोटरो की बत्तियो मे भी नये आविष्कार हुए है। शहर के बाहर पूरी रफ्तार से जब गाडिया चलती हे तो रोशनी तेज कर दी जाती है। जब सामने से दूसरी गाडी आती है तो उसकी रोशनी पडते ही इस गाडी की रोशनी अपने-आप बदलकर धीमी हो जाती है। आपको कोई बटन दबाने की जरूरत नही। गाडी की रफ्तार इतनी तेज होती है कि इसके लिए समय भी नही मिलता।

इसी तरह अपने गेरेज पर पहुचने पर उसके दरवाजो पर बत्ती की

रोशनी पडने और चक्को के एक निश्चित स्थान पर पहुचने पर, वे अपने-आप खुल जाते है और मोटर के गेरेज के अदर जाने पर अपने-आप ही बद भी हो जाते है। ड्राइवर तो लोग रखते नही है। इसलिए ऐसा न हो तो वारिश मे या जब वर्फ गिरती रहती है तब गाडी मे से उतरकर बाहर आने और गेरेज का दरवाजा खोलने मे मोटर के मालिक को बडा कष्ट होता है। गेरेज मे ही एक और दरवाजा होता है, जिससे आप भीतर-ही-भीतर अपने मकान मे प्रवेश कर सकते है।

एक जगह ऐसी भी मशीन देखी, जिसपर खडे हो जाइये तो वह मशीन कुछ इस तरह से हिलती है कि आपके पैरो को व आपके सारे शरीर को अपने-आप मसाज कर देवे। बहुत देर तक खडे-खडे या लगातार चलते रहने से पैर दुखने लगते है। इस मशीन की सहायता से खून का दौरा ठीक होकर पैरो को बडा आराम मिलता है।

एक रोज हम लोग 'नेशनल स्टुडेट्स एसोसियेशन ऑफ अमरीका' के हार्वर्ड स्थित दफ्तर मे वैठे हुए थे। एसोसियेशन के मत्री के पास टाइपराइ-टर जैसी एक छोटी-सी मशीन पडी थी, जैसे कोई छोटा टेलीप्रिंटर हो। हम लोग वहा वैठे थे तभी बाहर से एक तार आया। वह अपने-आप मशीन पर टाइप हो गया। 'डेस्कफैक्स वेस्टर्न यूनियन कपनी' के लोग खुद ही, जगह-जगह जाकर जहा तार अधिक आते है, ऐसी मशीने वैठा देते है। दफ्तर मे वैठे-वैठे ही सीधे इस मशीन के द्वारा अमरीका मे कही से भी तार प्राप्त किये जा सकते है या बाहर भेजे भी जा सकते है। इस मशीन का चलन वहा अभी-अभी शुरू हुआ ही है। इससे इसका वहुत प्रचार अभी वहा नही हो पाया है। इस प्रकार समय बचाकर आराम पहुचाना, इन अलादीन के चिरागो का उद्देश्य है, जो अमरीका के जीवन के अनि-वार्य अग हो गये है।

: १०

मजदूर-आंदोलन

अमरीका के मजदूरो की समस्या हमारे यहा से बहुत भिन्न है। वहा उत्पादन की कमी नही है। हर तरह के उद्योग, सख्या और परिमाण मे बढते ही जा रहे है। वेकारी की समस्या करीब-करीब नही है। असल मे देखा जाय तो वहा मजदूरो की कमी है और इसी वजह से मजदूरी के भाव बढते ही चले जाते है। मजदूरी के भाव बढने की वजह से हर वस्तु के दाम बढते है और जीवन अधिकाधिक महगा होता जा रहा है। यह चक्र चलता ही रहता है। मजदूरी बढी और चीजो के दाम बढे। चीजो के दाम बढे तो फिर मजदूरी बढी। न जाने यह स्पर्धा कब और कहा जाकर रुकेगी।

अन्न और धान का उत्पादन भी उनके देश को जितना चाहिए, उससे ज्यादा होता है। हमारी समस्या यह है कि हमारी पूरी जनसख्या को किस तरह पूरा अन्न पहुचाये। उनके सामने समस्या यह है कि अन्न के अधिक उत्पादन का क्या करे?

वहा के मजदूरो का जीवन-स्तर भी हमारे यहा की अपेक्षा बहुत ऊचा है। वहा के एक मजदूर नेता श्री विलियम केम्सले से बातचीत करने का मौका हमे मिला। वह 'इटर नेशनल कानफेडरेशन ऑव फ्री ट्रेड यूनियन्स' के न्यूयार्क दफतर के डायरेक्टर है। इस सस्या मे आने के पूर्व वे डिट्रोइट मे 'यूनाइटेड ऑटोमोबील वर्कर्स यूनियन' मे बडे महत्वपूर्ण कार्यकर्ता थे। उन्होने 'इटरनेशनल कोआपरेशन एडमिनिस्ट्रेशन' मे मजदूरो की शिक्षा के सलाहकार की हैसियत से भी काम किया है। उन्होने कहा कि अमरीका के ट्रेडयूनियन-आदोलन की पृष्ठभूमि बडी उग्र है। १८ वी सदी के अतिम दौर मे जो मजदूर-सगठन थे, वे गुप्त होते थे। १९ वी सदी के अत तक ये सगठन बडे शक्तिशाली हो गये। युद्ध के

दौरान मे अमरीकी मजदूर-सगठनो ने वडा महत्वपूर्ण कार्य किया है। युद्ध-जनित प्रभावो और दूसरे देशो के साथ स्थापित सवधो के कारण अमरीकी मजदूर अपनी अतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियो के प्रति वडा सजग हो गया है। युद्ध के वाद, जव 'अमरीकन फेडरेशन ऑव लेवर' और 'काग्रेस ऑव इडस्ट्रियल आर्गेनाइजेशन' एक सस्था वन गई, तवसे मजदूर-सगठन और भी ज्यादा शक्तिशाली हो गये है। लेकिन ये सभी मजदूर-सगठन सर्वथा निर्दोष नही है। कुछ सगठनो मे भ्रष्टाचार फैला हुआ है। किंतु यह भ्रष्टाचार, वस्तुत , सारे समाज मे फैली आचारहीनता का एक अग मात्र है।

श्री केम्सले ने यह भी वताया कि उनकी सवसे वडी कठिनाई यह है कि वह अपने मजदूरो को यह कैसे समझायें कि वहा के और भारत के मजदूरो के वीच एक अवाध सवध है। जव भारत के मजदूरो को तकलीफ है तो अमरीका के लोगो को उनकी मदद करनी ही चाहिए। लेकिन यह वात और यह नाता आम मजदूरो को समझाना आसान नही। उनका कहना था कि यदि किसी व्यक्ति की स्त्री या वच्चे चुरा लिये जाय तो वह उनको छुडाने के लिए जी-जान से लडता है। यदि किसीका धधा चुरा लिया जाय तव तो उसको पूरी ताकत से लडना ही चाहिए। धधा छूट जाना तो स्त्री और वच्चे चुराये जाने से भी वदतर हालत है, क्योकि धधा नही रहेगा तो अपना और स्त्री, वाल-वच्चो का वह भरण-पोपण नही कर सकता और फिर वे उससे अलग हो ही जायगे। इसलिए उनकी राय मे मजदूरो के यूनियनो को मान्यता मिलनी ही चाहिए। यह उनका जन्मजात अधिकार है। अमरीका की औद्योगिक प्रगति मे इसी प्रश्न को लेकर अधिक-से-अधिक खून वहा है। वहा अधिकाधिक औद्योगीकरण की वजह से हर चीज इतनी ज्यादा यान्त्रिक हो गई है कि ज्यादा-से-ज्यादा उत्पादन पर वडा दवाव रहता है। इसकी वजह से लोगो के दिल-व-दिमाग पर वडा तनाव रहता है।

डेट्रोइट मे हमको जगत्प्रसिद्ध फोर्ड का मोटर का कारखाना देखने का अवसर मिला। उनके यहा ४६ हजार मजदूर काम करते है। इनकी रोज की मजदूरी करीव १२-½ लाख डालर होती है। प्रत्येक घटे की

मजदूरी औसतन करीब डेढ लाख डालर से ऊपर होती है।

डेट्रोइट मे 'यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स यूनियन' के नेताओ से भी मिलने का मौका हमे मिला। इस यूनियन के ११ लाख २५ हजार सदस्य है। फोरमैन, जिसको कि लोगो को नौकरी देने का और हटाने का अधिकार है, को छोडकर, उसके नीचे के लोगो को ही ये अपनी यूनियन मे शामिल करते हे। सिर्फ क्राइसलर कारखाने के क्लर्क ही इस यूनियन मे शामिल है, वरना आम तौर पर क्लर्क-वर्ग के लोग अमरीका मे बहुत कम परिमाण मे सगठित है। इनका ख्याल है कि इन लोगो को सगठित करना बहुत कठिन है, क्योकि उनकी आवश्यकताए कतई भिन्न है।

इस यूनियन के बडे नेता श्री रायरूथर सिटीजनशिप डिपार्टमेट के डाइरेक्टर व ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ० के उपाध्यक्ष श्री वाल्टर रूथर के भाई है। कुछ ही रोज पहले श्री वाल्टर रूथर हिन्दुस्तान आये थे। श्री राय ने कहा कि उनके भाई ने जो देखा उससे उनका मानना है कि भारत को प्रजातात्रिक शासन-पद्धति मे पूरा विश्वास है। हमारे देश को उन्हे हर तरह की आर्थिक मदद देनी चाहिए। उसमे किसी तरह का बधन नही होना चाहिए। प्रकृति उन लोगो की सहायक है और इसलिए उनकी स्थिति दूसरो से अच्छी है। उनका फर्ज हो जाता है कि दूसरो का जीवन-स्तर ऊचा करने मे मदद दे।

चीज बेहतर हो और उसका दाम सस्ता हो, यह सभीके लिए आवश्यक है। यदि मनुष्य के भार को कम कर सके तो क्यो न करे और उसका लाभ देश के और लोगो के साथ मजदूर भी क्यो न बाटे? उनका यूनियन इस विचार का बहुत जोरदार पक्षपाती है। उनका कहना था कि इसीलिए वे लोग सारी दुनिया के निश्शस्त्रीकरण के पक्ष मे है। इस तरह जो बचत होगी, वह स्कूलो व नये कारखाने खोलने, नहरे आदि बनाने मे काम आ सकेगी। वह कहते थे कि एक सप्ताह मे काम करने के घटे कम करने की बजाय, उत्पादन बढे, इसकी तरफ उनका जोर अधिक है।

उन्होने यह भी कहा कि फोर्ड के कारखाने मे इन दिनो बडे परिवर्तन हुए है। वर्तमान नवयुवक फोर्ड अपने पूर्वजो से कम कजरवेटिव है। इनके पिता के दाहिने हाथ श्री हेनरी बेनेट मजदूर-विरोधी और दकियानूसी थे। उन्होने तो यहातक कहा कि श्री बेनेट अनीति से फोर्ड-कपनी के नफे का १० प्रतिशत तक खुद के लिए ले जाते थे। फोर्ड के लडके की कुछ नही चलने देते थे। बडे फोर्ड की मृत्यु के बाद उनकी स्त्री ने श्री बेनेट का सारा भडा फोडा। तबतक श्री बेनेट ही सारी फोर्ड-सस्था पर अपना प्रभुत्व जमाये बैठे थे। लेकिन अब वैसी बात नही रही। सारा काम ठीक से सभला हुआ है।

श्री राय का मानना था कि अमरीका मे मजदूरो की कोई राजनैतिक पार्टी अलग से बनाने की सभावना नही है। वहा के मजदूर उसके लिए तैयार नही है। वे तो कजरवेटिव या लिबरल पार्टी को ही ज्यादा पसद करते है। वहा की डेमोक्रटिक पार्टी, जितना ये चाहते है, उतनी प्रगतिशील नही है। फिर भी उनके मतलब के लिए काफी है। वह कहते थे कि डेमोक्रेटिक पार्टी पर दक्षिण के लोगो का बहुत असर है, वह उचित नही। दक्षिण के लोग जनता मे समानता के अधिकार के मामलो को लेकर बहुत पिछडे हुए है। कई दूसरे पिछडे हुए मामलो मे दक्षिण के ये डेमोक्रेटिक लोग भी रिपब्लिकनो के साथ अपना मत देते है। वे लोग अपनी यूनियन के सदस्यो को चुनाव के समय, नीचे की सतह पर, अपनी पसदगी की पार्टी को अपना मत देवें, इसके लिए प्रोत्साहित करते है।

वे लोग यह दावा करते है कि उनका सगठन और आदोलन आम

जनता की भलाई के लिए है। वे मानते हैं कि अच्छा वेतन और अधिक काम दोनो साथ-साथ चलने चाहिए। यूनियन और मालिक दोनो के विशेषज्ञ साथ मिलकर तय करते है कि हर आदमी को कितना काम करना आवश्यक है। उस हिसाब से काम लिया जाता है। ये लोग मजदूरो के कम या खराब काम करने के पक्ष मे नही है।

उनके देश मे वर्कर्स कौसिल या इस तरह की कमेटी नही है, जो कि मजदूरो की तरफ से व्यवस्थापको के साथ बैठकर व्यवस्था करने मे हिस्सा ले। इसके लिए वहा के मजदूरो मे कुछ माग भी नही है। वे लोग अपने कारखाने की नीति क्या हो, इसका निर्णय करने या व्यवस्था मे सीधा हिस्सा लेने के इच्छुक नही है। उन लोगो का ज्यादा ध्यान तो अपनी मजदूरी करने की हालत सुधारने, छुट्टिया अधिक मिलने, अधिक सुविधाए प्राप्त करने मे लगा रहता है। यदि उत्पादन कम होगा तो आदमियो को काम करना ही पडेगा। यह सिद्धात उनको भी मान्य हो गया है। इसलिए कितने आदमी कम किये गए, इस बारे मे अब उन्हे विशेष दिलचस्पी नही रही है।

जिन आदमियो को थोडे समय के लिए हटाया जाता है, उनको बेकारी के दिनो मे अपने वेतन का ६५ प्रतिशत, एक खास कोष मे से, मिलता रहता है। हर व्यक्ति काम करने के हर घटे की मजदूरी का ५ प्रतिशत इस कोष में जमा करता है। करीब ४० प्रतिशत सरकार के बेकारी दूर करने के कोष मे से आता है।

यत्रीकरण की वजह से अमरीका के उत्पादन मे करीब ढाई प्रतिशत की वृद्धि हर साल होती है। इसी हिसाब से करीब उतनी ही उनकी मजदूरी बढती है।

ए० एफ० एल० सी० आई० ओ० के मजदूर नेता श्री हैरी पोलक ने हमे मजदूर-आदोलन का कुछ दूसरा ही चित्र दिया। उन्होने कहा कि उनके यहा का मजदूर-आदोलन बडा जानदार, सगठित और शक्तिशाली है। उसमे का भ्रष्टाचार उन्होने बहुत-कुछ मिटा दिया है। अब उनका ध्यान खास करके क्लर्कवर्ग के लोगो को सगठित करने मे है। वे लोग किसी पार्टी के साथ जुडे हुए नही हैं। वे पार्टियो के बारे मे व उनके प्रत्येक नुमाइदे के बारे मे, उनके वचनो व उनके कार्यो के उपर से अपनी राय बनाते

है। उनके मजदूरो मे वर्ग-भेद की भावना अब नही है। उद्योगपतियो को अब वे अपना पडोसी मानते है। वे लोग वहा की पार्लामेट मे जाने को बहुत उत्सुक नही हे। वहा के मजदूर अब अपनी अतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियो के प्रति अधिक जागरूक हो रहे है। उनकी राय अब दूसरे देशो को आर्थिक मदद देने के पक्ष मे हो रही है। यदि अमरीका अपनी वैज्ञानिक उन्नति के कारण थोडी ही लागत मे अधिक उत्पादन करने मे समर्थ हो गया है तो उसका फर्ज है कि पिछडे हुए देशो के विकास मे और अधिक सहयोग दे।

श्री पोलक हाल ही मे भारत के दौरे से लौटे थे। भारत के सबध मे उन्होने कहा कि यहा प्रजातात्रिक ढग से योजनाए बनाई व कार्यान्वित की जा रही है। यह प्रयोग बडा सराहनीय है। अमरीका का मजदूर सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए और विशेषत रग के आधार पर बरते जानेवाले भेद-भावो को दूर करने के लिए चलाये गए आदोलनो मे आगे बढकर हिस्सा लेता रहा है। सगठित मजदूर-वर्ग ने आमतौर पर डेमोक्रेटिक पार्टी को अपना समर्थन दिया है। किंतु उसने हर प्रश्न को उसके अपने गुणो के अनुसार देखा-परखा है। यह सभव नही प्रतीत होता कि अमरीकी मजदूर कोई अपनी विशेष राजनैतिक पार्टी बना लेगा, क्योकि इस देश मे, कोई सीधी और साफ वर्ग-चेतना नही है। इसके अलावा बिना किसी अलग पार्टी के भी वहा का मजदूर अपनी सारी समस्याए हल करवा लेने मे समर्थ है।

जब हमने उनसे मालिक-मजदूर के मिले-जुले प्रबध के बारे मे उनकी राय पूछी, तो उन्होने कहा कि उनके देश मे इस तरह के प्रबध के पक्ष को समर्थन प्राप्त नही है। किंतु लाभ के वितरण के प्रयोगो को कुछ सफलता मिली है। हा, भारत के लिए ऐसी योजनाए उचित हो सकती है। अमरीका का मजदूर इस तरह की योजनाओ के प्रति आशकित है, क्योकि पहले ऐसा प्रबध मालिक लोग उनके वेतन की दरे कम करने के लिए ही किया करते थे। उनके सामने एक बडी समस्या यह आ खडी हुई है कि आम मजदूर जीवन के अन्य पहलुओ की ओर बहुत-कुछ उदासीन रहता है। ए० एफ० एल० सी० आई० ओ० इस स्थिति को सुधारने के लिए मजदूर-शिक्षा और जन-सेवा के कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

शिकागो मे इनलेड स्टील कपनी की मजदूर-यूनियन के नेताओ से भी

हम मिले। यह अमरीका का तीसरा सबसे बडा कारखाना माना जाता है। इस क्षेत्र मे लोहे के कारखानो मे काम करनेवाले १ लाख ५५ हजार मजदूर इस यूनियन के सदस्य है। उन लोगो को यह परवा नही है कि उनकी यूनियन को उनकी कपनी मान्यता दे या न दे। उनके यहा यूनियन के खिलाफ बहुत कम लोग हैं। उनकी सभा मे बहुत कम लोग आते है। करीब एक या दो प्रतिशत सदस्य भी मीटिग मे मुश्किल से आते है। हा, जब किसी बात को लेकर असतोष फैल जाता है तब उपस्थिति एकदम बढ जाती है। कपनी के नौकरो से जो कट्राक्ट होते है, वे सारे यूनियन की मार्फत ही होते है।

करीब सौ-सवा सौ मील की दूरी से लोग रोज काम करने आते हैं। इन-लैंड स्टील मे करीब १५,५०० मजदूर हैं, जिनमे करीब ७५ प्रतिशत लोगो के पास अपनी खुद की मोटरे है। इनकी मागो मे मुख्य माग होती है अधिक कमाई व काम की सुविधाए। वे चाहते है कि सप्ताह मे सिर्फ ४० घटे ही काम करे। उनकी मान्यता है कि धीरे-धीरे काम के घटे कम होकर ३५ से ३० घटे तक ही रह जाने चाहिए। यदि मजदूरी भी साथ-ही-साथ कम हो तो शायद कपनी भी उस प्रस्ताव को मान ले। लेकिन इस बात पर उनमे मतभेद है। ये लोग भी यत्रीकरण के विरोधी नही है, लेकिन चाहते है कि उसका फायदा सबको मिले। उनका मानना है कि अमरीका के लोगो की जेब मे यदि पैसे हो तो आवश्यकता हो या न हो वे चीजे जरूर खरीदते रहेगे। बहुत बार देखा-देखी भी चीजे खरीद लेते है।

उनकी यूनियन का शुल्क पाच डालर प्रति माह है। मजदूरो से यह जमा करना आसान काम नही है। जब हम वहा थे उस साल उनकी यूनियन ने करीब ६८० शिकायते अपने सदस्यो की तरफ से मालिको के सामने रक्खी थी। आरबिट्रेशन का निर्णय मिलने मे करीब दस माह लग जाते है। करीब ४० प्रतिशत शिकायतो का फैसला मजदूरो के पक्ष मे होता है। इस बारे मे राष्ट्रीय अनुपात मजदूरो के पक्ष मे सिर्फ १५ प्रतिशत का ही है। इससे यह जाहिर होता है कि उनकी यूनियन काफी सगठित है और जिम्मेदार भी। अपने सदस्यो की माग या शिकायत के औचित्य को समझ-कर ही वे उसके लिए सघर्ष करती है।

११ :

नीग्रो और उनकी समस्या

भारत मे अमरीका की रग-नीति के सबध मे बडी गलतफहमी फैली हुई है। हम सिर्फ अखबारी प्रचार के कारण, लिटिल रॉक या छुटपुट हुई हिसात्मक कार्यवाहियो के आधार पर ही सारे देश के बारे मे अपनी धारणा बना लेते है। हमने अपने दो महीनो के प्रवास मे एक भी हिसात्मक घटना न देखी, न सुनी ही। इस कथन का यह तात्पर्य नही है कि समस्या है ही नही। बल्कि सत्य तो यह है कि समस्या उससे कही ज्यादा गहरी और उलझी हुई है, जितनी कि हम यहा उसे समझते है। इस रग की समस्या का स्वरूप कुछ इतना गहन हो गया है कि इसे समूल नष्ट होने मे काफी समय लगेगा। हम इतना अवश्य कहेगे कि इस दिशा मे भी बडी प्रगति हुई है। हम अनेक नीग्रो नेताओ से भी मिले। उन्होने भी यही राय जाहिर की थी। सुप्रीम कोर्ट के अनेक निर्णयो और जनमत ने अनेक राज्यो को अपना रवैया बदलने को मजबूर किया है। अनेक गिरजाघरो ने भी अपनी जिम्मेदारी महसूस की है और भेद-भाव के विरोध मे वे काफी बुलदी से आवाज उठाने लगे है।

अमरीका की रग-समस्या हमारी अपनी अछूत-समस्या से बहुत मिलती-जुलती है। किंतु इनमे भी एक मौलिक अतर तो है ही। हमारी समस्या केवल सामाजिक और धार्मिक स्तरो पर रही है। देश के सरकारी कानून सब वर्गो के लिए एक-से ही रहे है। अमरीका के अनेक प्रातो के बहुत-से कानून भेद-भाव के आधार पर ही निर्मित है।

वाशिगटन मे सिविल राइट्स कमीशन के स्टाफ डायरेक्टर श्री गोर्डन टिफनी से मिलने का सुअवसर हमे मिला था। उन्होने इस छ सदस्यीय कमीशन के कार्यो के सबध मे हमे बताया। ये सारे सदस्य वहा के राष्ट्र-पति द्वारा नियुक्त किये जाते है। किसी एक ही पार्टी को तीन से

ज्यादा का प्रतिनिधत्व नही मिलता है। अमरीका का कोई भी नागरिक, जिसके विरुद्ध रग, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता के आधार पर किसी भी किस्म का अन्याय या भेदभाव हुआ हो, या जो अपने मताधिकार के सबध मे कुछ कहना चाहता हो, इस कमीशन को अपनी शिकायत पहुचा सकता है। कमीशन का मुख्य काम ही यह है कि इस बात की जानकारी हासिल करे कि न्याय का सरक्षण हरेक को समान रूप से प्राप्त है या नही। अभी कुछ दिनो से मकानो के सवध मे वरते जानेवाले भेद-भाव का मसला भी कमीशन ने अपने हाथ मे लिया है। श्री गोर्डन ने विश्वास प्रकट किया कि देश से सारे भेद-भाव शीघ्रता से समाप्त होते जा रहे हैं। इस ओर देश की अनेक सामाजिक, धार्मिक सस्थाओ और राजनैतिक दलो ने जो योग दान दिया है, वह वडा उत्साहवर्द्धक है।

हमारे अमरीका के दौरे मे न्यू आर्लियन्स जाने का कार्यक्रम खास इस दृष्टि से रखा गया था कि अमरीका की जो नीग्रो-समस्या है, उसके बारे मे हम व्यक्तिगत रूप से जानकारी हासिल कर सके। न्यू आर्लियन्स अमरीका के एकदम दक्षिण मे स्थित वदरगाह है और नीग्रो-समस्या यहा और इसके इर्द-गिर्द अपेक्षाकृत अधिक है। चूकि हम लोग अमरीका मे यात्री होकर नही, वल्कि वहा की युवक-सस्था के मेहमान होकर पहुचे थे, इसलिए हमारे मेजवानो को स्वाभाविक तौर से यह चिता थी कि हमारे रग की वजह से नीग्रो समझकर कही हमारा अपमान न हो। जब हम दक्षिण की ओर जाने लगे तब उन्होने पहले से हमे सूचित कर दिया था कि गलती से हम लोगो को किसी होटल मे ठहरने, खाने-पीने या बस मे चढने से मना कर दिया जाय तो हम बुरा न माने।

हमे अपने सारे अमरीकी दौरे मे ऐसी दुर्घटना का सामना कही नही करना पडा। हमारे साथ साडी पहने भारतीय महिलाए भी थी, इसलिए भी किसी तरह की गलतफहमी की सभावना नही थी।

न्यू आर्लियन्स मे एक दिन हमने डिलार्ड यूनिवर्सिटी, जो कि सारी दुनिया की नीग्रो यूनिवर्सिटियो मे प्रसिद्ध है, देखी। वहा के समाजशास्त्र के नामी प्राध्यापक डा० डी० सी० थाम्पसन ने हमे बताया कि अमरीका के दो-तिहाई नीग्रो दक्षिण मे रहते है। १९२० मे करीब ९७ प्रतिशत नीग्रो

प्लाटेशस मे काम करते थे। तबसे आज तक बहुत-से नीग्रो उत्तर मे जाकर बस गये है। फिर भी उत्तर मे नीग्रो की बस्ती बहुत कम होने से वहा नीग्रो-समस्या कोई खास समस्या नही है और इसलिए वहा उस बारे मे कुछ खास कानून भी नही बने।

सन् १९५४ के बाद गोरो की तरफ से दक्षिण मे नीग्रो लोगो पर करीब ४०० हिंसा की घटनाए हुई। अब जमाना आ गया है कि दक्षिण के गोरो ने कम-से-कम नीग्रो की कठिनाइया सुनना और समझना तो शुरू कर दिया है। साथ-ही-साथ बहुत-से गोरो का, जो कि नीग्रो से गुलामो के तौर पर काम लेने के आदी हो गये थे, विरोध भी बढा है। १९५४ के बाद ही दक्षिण के अलग-अलग प्रातो मे करीब २०० से भी अधिक कानून बने है, जिन्होने गोरो और नीग्रो के भेद-भाव को और भी मजबूत किया है। इसके बावजूद डा०थाम्पसन, जोकि खुद एक प्रबुद्ध नीग्रो है,का मानना था कि आज अमरीका मे नीग्रो की इतनी इज्जत हुई है, जितनी पहले कभी नही थी। उत्तर के प्रदेशो मे नीग्रो की बस्ती ज्यादा न होने से वहा इस समस्या ने इतना उग्र रूप नही धारण किया। वहा के लोगो की सहानुभूति नीग्रो के लिए अधिक रही है। उन्हीके खास प्रयत्नो से सेग्रीगेशन (अतर कायम रखने का कानून) का अत करने के लिए फेडरल सरकार ने कानून पास किया। इस कानून का असर देशभर मे पड रहा है। इस समस्या के धीरे-धीरे हल करने मे उसकी पूरी मदद मिल रही है।

डिलार्ड यूनिवर्सिटी मे ९५० विद्यार्थी है, जिनमे ६० प्रतिशत लडकिया है। अभी तक इस यूनिवर्सिटी मे सिर्फ नीगो ही आते थे, लेकिन इस वर्ष पहली बार दो-तीन गोरे भी भर्ती हुए हे।

न्यू आर्लियन्स मे गोरो की भी एक अलग यूनिवर्सिटी हे—टुलेन। वहा भी हम लोगो ने आधा दिन बिताया। वहा का वातावरण कोई विशेप नही लगा। हमे जितने उत्साह और सहानुभूति से डिलार्ड यूनिवर्सिटी मे बुलाया गया वैसी कोई बात हमे टुलेन यूनिवर्सिटी मे नही लगी। डिलार्ड मे तो हमसे वहा के ऊचे-से-ऊचे प्राध्यापको ने बडी गभीरतापूर्वक नीग्रो-समस्या पर चर्चा की। हमारे सारे सवालो का जवाब दिया। साथ ही वहा के विद्यार्थियो ने भी भारत के बारे मे अनेक सवाल पूछे। हमको विद्यार्थियो से मिल-

कर उनसे अपने विचार आदान-प्रदान करने का अवसर मिला। इस तरह का कोई प्रयत्न करने की आवश्यकता ही टुलेनवालो को प्रतीत नही हुई। उनको शायद अपनी सफेद चमडी का रौब रहा होगा। ऐसा अनुभव अमरीका मे हमे और कही नही मिला। डिलार्डवालो को हमसे ज्यादा निकटता अनुभव हुई, ऐसा प्रतीत हुआ। हमे भी उनके प्रति अधिक सद्भावना रही।

जब हम अमरीका के उत्तर मे मसाचुसेट्स प्रान्त के बोस्टन शहर मे आये, तो वहा के प्रातीय 'कमीशन अगेस्ट डिस्क्रिमिनेशन' से मिलने का भी अवसर मिला। यह प्रातीय सरकार द्वारा बनाई हुई सस्था है। हमे यह जानकर खुशी हुई कि इस कमीशन के सभापति श्री केनसिंगटन, जो कि खुद एक नीग्रो नवयुवक है, हमारी अतर्राष्ट्रीय सस्था 'वर्ल्ड असेंबली आव यूथ' के सदस्य रह चुके है। वह उसकी सिंगापुर मे हुई कान्फ्रेंस मे प्रतिनिधि के रूप मे भाग भी ले चुके है। वहा से लौटते समय भारत भी पधारे थे। शुरू मे हम लोगो ने कमीशन की मीटिंग मे दर्शक के रूप मे हिस्सा लिया। बाद मे उनसे चर्चा भी हुई। वहा की प्रातीय सरकार ने यह कानून बनाया है कि कोई भी मालिक, किसीको अपने कारखाने मे काम देने के पहले, उससे उसके धर्म, जाति और रग के बारे मे नही पूछ सकता। नौकरी पर रखने के बाद वह जो चाहे पूछ सकता है। तनख्वाह के बढाने मे इन बातो के आधार पर किसी तरह का फर्क नही किया जा सकता। हमारी उपस्थिति मे जब कमीशन के सामने यह सवाल आया कि सरकार के सुरक्षा-विभाग के लिए भी यह शर्त लागू है या नही तो कमीशन ने तय किया कि उसके लिए भी यह शर्त लागू होनी चाहिए। इस प्रात मे इस तरह का कोई विज्ञापन अखबारो मे नही छप सकता कि सिर्फ गोरे ही नौकरी के लिए आवेदन-पत्र भेजें। इस कमीशन को पूरा कानूनी अख्तियार है और अपने निर्णयो को ये कानून के द्वारा मनवा सकते है। लेकिन इनके तेरह वर्ष के जीवन-काल मे इनको कभी भी कचहरी मे जाने की आवश्यकता नही पडी, चूकि इनके पास कानूनी अधिकार है, इनकी बात मालिक व मजदूर दोनो ही आसानी से मान लेते है।

दूसरा सवाल कमीशन के सामने एक नीग्रो लडकी का आया। इसने

शिकायत की थी कि एक कारखाने मे उसके प्रति भेद-भाव किया गया। इसलिए उसने वहा से इस्तीफा दे दिया था और कमीशन के पास शिकायत की थी। कमीशन को उसकी शिकायत जची और उन्होने कारखाने के व्यवस्थापको का ध्यान इसकी ओर खीचा। उन्होने अपनी गलती मजूर की और इस तरह का भेद-भाव जिस मैनेजर ने किया था, उसको हटाने का तय किया।

रग को लेकर छोटी-से-छोटी बात मे भी कही भेद-भाव किया जाय तो हरेक व्यक्ति को सीधे इस कमीशन के पास अपनी शिकायत लेकर पहुचने का अधिकार है। यह कमीशन सीधे मालिको से या गलती करनेवाले अन्य लोगो से सपर्क स्थापित कर, ऐसे मामलो को बिना किसी विशेष कठिनाई के सुलझा लेता है। कानूनी अधिकार उनके पास है, इसकी जानकारी ही इस समस्या को हल करने मे काफी मददगार साबित हुई है।

इस प्रात मे धर्म और रग के अलावा उम्र को लेकर भी किसी तरह का भेदभाव नही किया जा सकता। हर कारखाने का मालिक चाहता है कि उसको मजबूत, फुर्तीले नौजवान काम करने को मिले। फिर ज्यादा उम्रवाले अधेड व वृद्ध लोगो का काम कैसे चले ? जब यह समस्या उनके सामने आई तो अत मे जाकर उनको तय करना पडा कि उम्र का भी भेद-भाव नही किया जा सकता।

कमीशन के सदस्यो का मानना था कि दक्षिण मे जो बच्चो की शिक्षा होती है, उसमे यदि गोरो और नीग्रो की पढाई साथ-साथ हो सके तो यह समस्या धीरे-धीरे आसानी से हल हो जायगी। उत्तर के शहरो मे कही-कही नीग्रो को खास-खास क्षेत्रो मे घर बनाने की इजाजत नही थी। अब यह इजाजत मिल रही है कि वे जहा चाहे अपना घर बना ले। वे मानते है कि इस तरह के कानूनो से सारी समस्या तो हल नही हो सकती, लेकिन इसका शैक्षणिक और भावनात्मक महत्व बहुत है। इसके बगैर असली प्रगति होने मे कई तरह की रुकावटे आती है।

न्यूयार्क स्टेट की भेद-भाव-निरोधक समिति से भी हम मिले। उसके सभापति श्री कार्टर भी एक नीग्रो है। वह बडे विद्वान और साधु पुरुष लगे। उन्होने भारत की नीतियो की बड़ी सराहना की और कहा

कि सघर्षो से भरी हुई दुनिया में भारत का स्थान बहुत ऊचा है। उन्होने कहा कि मानव-जाति का इतिहास तो भारत, चीन और अफ्रीका मे लिखा जा रहा है। दास-प्रथा के प्रश्न पर विचार करते हुए श्री कार्टर ने कहा, "अमरीका के नैतिक, आत्मिक और बौद्धिक नेता मानव के नैतिक मूल्याकन की दिशा मे बहुत पीछे रह गये है। किंतु स्थिति अब सुधार पर है।"

सयुक्त राष्ट्रसघ का प्रधान कार्यालय यहा होने के कारण दुनिया के हर भाग से हर जाति, वर्ग, रग और वर्ग के लोग यहा आते हैं, इसलिए नीग्रो-समस्या के हल की दिशा मे बडा प्रभाव पडा है। स्वय नीग्रो-जाति खुद भी बहुत जागृत हो गई है और एक आत्मिक और नैतिक जागरण के युग का दौर शुरू हो गया है। अमरीकी सरकार भी नीग्रो गायक खिलाडी और सास्कृतिक प्रतिनिधियो को दुनिया के दूसरे देशो मे भेज रही है। यह सब कदम सही रास्ते की ओर उठ रहे है।

श्री कार्टर ने यह भी कहा, "अमरीका का नैतिक नेतृत्व कमजोर होने का यह भी कारण हुआ कि वह मजदूरो को कम वेतन देने और गोरो को अधिक सम्मान देने के सिद्धातो को मान्यता देता है। हमारे विद्वानो और विश्वविद्यालयो ने भी इस सिद्धात को मान लिया था। यह हमारी कमजोरी थी। परिस्थिति सुधर रही है। हमारे यहा की नैतिक व आध्यात्मिक प्रगति बहुत धीमी है। फिर भी मार्क्सवाद के लिए यहा कोई गुजाइश नही। बडे-बडे बैरिस्टर व वकीलो ने कहा है कि सुप्रीम-कोर्ट ने भेद-भाव के खिलाफ जो कानून बनाये है, वे अमरीका के विधान के अनुसार सही नही हैं। उनका मानना है कि यह फैसला सिर्फ कानून पर आधारित नही है। इसपर राजनैतिक कारणो का अधिक असर पडा है और यह अमरीका की सरकार की नीति पर आधारित है।"

हमे डिलार्ड यूनिवर्सिटी मे तथा न्यूयार्क स्टेट की भेद-भाव-निरोधक समिति के सभापति श्री कार्टर ने भी जोर देकर कहा कि अमरीका के नीग्रो महात्मा गाधी के बहुत आभारी और अनुगृहीत है। उनके विचारो का रेवरेंड मार्टिन लूथर किग व अन्य नीग्रो नेताओ पर बहुत असर पडा है। इसी वजह से उनका आदोलन अहिंसा के जरिए सफलता की तरफ अग्रसर हो रहा हैं। इसका मुख्य लाभ नीग्रो-जाति के लिए यह हुआ कि उनका

खुद का आध्यात्मिक और नैतिक पुनरुद्धार हो रहा है, उनमे आत्म-विश्वास का सचार हो रहा है।

जब हम अमरीका मे थे, मोटर बनाने के कारखानो की राजधानी डेट्रोइट मे करीब बीस हजार गोरे व नीग्रो बेकार थे। वहा की फेयर प्रैक्टीसेज कमेटी (किसीके प्रति अन्याय न हो यह देखनेवाली समिति) यह देखती है कि मजदूर और उनके यूनियन मे जातीयता और रग के आधार पर किसी तरह का भेद-भाव न हो। वे लोग हर तरह के भेद-भाव का बडे जोर से मुकाबला करते है। डेट्रोइट मे करीब पद्रह वर्ष पहले जातीय दगे हुए थे। इस बारे मे मजदूर-यूनियन के और मजदूरो के तगडे विचारो की वजह से इन दगो का वहा के लोगो पर विशेष प्रभाव नही पडा और दगे जोर नही पकड सके।

एनआरबर यूनिवर्सिटी के सचालक-मडल से जब हम मिले तब उन्होने नीग्रो-समस्या के बारे मे हमें बताया कि यद्यपि इस बारे मे सुप्रीम कोर्ट का निर्णय स्पष्ट है फिर भी उनकी समझ से अभी भी भेद-भाव बहुत हद तक कायम है। उनके प्रात मिशिगन मे भी कुछ हद तक यह बाकी है। लेकिन धीरे-धीरे कम हो रहा है। नीग्रो और गोरे डाक्टरो, अध्यापको, वकीलो, व पढे-लिखे लोगो मे इस तरह के भेद-भाव बहुत कम रह गये है। यह सवाल तो विशेषकर अशिक्षित गरीब नीग्रो के लिए रह गया है। करीब डेढ करोड नीग्रो मे से दस लाख ऐसे रह गये होगे, जोकि गोरो मे मिल-जुल नही पाये है।

मेरा व्यक्तिगत ख्याल है कि अमरीका मे नीग्रो-समस्या धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, हल होती जा रही है। वहा अधिकतर गोरो ने भी यह मान लिया है कि मनुष्य-मनुष्य के बीच इस तरह के भेद-भाव करना ठीक नही। उत्तर मे रहनेवाले अमरीकियो का मूलभूत दृष्टिकोण व्यक्तिगत स्वतत्रता के जोरो से पक्ष मे होने की वजह से उन लोगो ने जल्दी ही यह बात ग्रहण कर ली है कि उनको नीग्रो के साथ भेद-भाव का या पशुओ जैसा व्यवहार नही करना चाहिए। दक्षिण मे जरूर ऐसे बहुत-से गोरे है, जोकि सिद्धात के रूप मे भेद-भाव को कायम रखने के जोरदार समर्थक है। वे मानते है कि यह अन्तर तो भगवान का बनाया हुआ है और इसका

कायम रहना मनुष्य-जाति के हित मे है । हमारे यहा के सनातनी विचार-वाले लोगो की भाति ही वे भी है । जिस तरह हमारे यहा की हरिजन-समस्या ने विकट रूप धारण कर लिया था, उसी तरह उनके यहा भी यह समस्या है । इसका ऐतिहासिक कारण भी है । शुरू-शुरू मे उन लोगो को सस्ते और मेहनती मजदूर चाहिए थे । मेहनत करके दक्षिण अमरीका और अफ्रीका से उन लोगो ने नीग्रो को लाकर अमरीका मे बसाया और उनसे काम कराने के आदी हो गये । हमारे यहा हरिजनो और अछूतो को कानून से पूरी स्वतत्रता और अधिकार मिल गये है, फिर भी समस्या का पूरा हल नही हुआ है और समाज मे भेद-भाव मौजूद है । अमरीका की हालत भी कुछ-कुछ उसी तरह की समझनी चाहिए ।

अमरीका के बौद्धिक वर्ग मे तो मानसिक क्राति हो गई है । उसका बाहरी स्वरूप कानून के रूप मे आ गया है । अब धीरे-धीरे यह दैनिक जीवन मे भी व्याप्त हो जायगा, इसमे मुझे कोई शक नही । अमरीका की नीग्रो-समस्या को हम लोग जो महत्व देते है, उसकी जितनी चर्चा करते है, उसका उतना बडा और महत्व का स्वरूप मुझे नही लगता । यह सामाजिक परिवर्तन है, जोकि समय के अनुसार बदलता है, लेकिन इसकी गति हमेशा धीमी ही रहेगी ।

: १२ :

सामाजिक जीवन में सेवा-भावना

अमरीका मे जहा-जहा भी हम लोग गये, एक चीज हमे खासतौर से दिखाई दी। लोग आमतौर पर वडे सज्जन और भले है। किसीकी भी तकलीफ मे मदद करने के लिए वे तैयार रहते है। यद्यपि उनको सारे काम अपने हाथो ही करने पडते है, फिर भी समाज-सेवा के लिए भी खुशी से तैयार रहते है। जीवन इतना व्यस्त होता है कि रात-दिन मशीन की तरह उनका कार्यक्रम बना रहता है। उसमे से यदि थोडा समय मिल गया तो किसी भी तरह की समाज-सेवा करने मे समय विताने की उनकी ख्वाहिश रहती है। उनको खाली वैठना या विना किसी काम-काज के रहना सुहाता ही नही। मशीन के समान कुछ-न-कुछ करते रहने का उनका स्वभाव ही हो गया है।

हरेक राष्ट्र की और वहा के निवासियो की अपनी-अपनी विशेषताए होती है। यह अमरीका के लोगो के स्वभाव की खासियत कही जा सकती है। मानो उनके स्वभाव व समय का राष्ट्रीयकरण ही हो गया हो। वे या तो समय का पूरा-पूरा उपयोग करके कमाई करते है, क्योकि उससे देश का धन बढता है, या खाली समय को समाज-सेवा मे लगाकर उसे राष्ट्रार्पण कर देते है। किसी भी हालत मे सब लोग मेहनत वहुत करते है, इसमे सदेह नही। इसीलिए वहा इतनी विपुलता आ सकी है।

सान्फ्रासिस्को मे हम लोग 'इटरनेशनल हास्पिटेलिटी सेंटर' के मेहमान थे। इस केन्द्र के सात सौ व्यक्तिगत सदस्य है और हर सदस्य पाच डालर सालाना वतौर फीस के देता है। व्यापारिक सस्थाए भी पचास डालर प्रति वर्ष देकर इस केन्द्र की सदस्य बनती है। दूसरी सस्थाए दस से पन्द्रह डालर देकर सदस्य वनती है। इसका सालाना बजट करीब-करीव तेरह हजार डालर का है।

साल मे एक बार इस संस्था के लोग नगरनिवासियो के पास पैसा इकट्ठा करने की अपील लेकर पहुचते है। हम जब वहा थे उस वर्ष इस तरह की अपील द्वारा उन लोगो ने करीब ४५०० डालर इकट्ठा किये। इस काम के लिए करीब छ सौ स्वयसेवक उनको मिल गए थे।

आखिर लोग इस केन्द्र के सदस्य क्यो बनते है? उनको इससे लाभ क्या है? उनका काम तो यह है कि जब विदेश के लोग सान्फ्रासिस्को मे आते है तो ये लोग अपनी-अपनी गाडी लेकर केन्द्र पर चले आते है और विदेशियो को सारा शहर अच्छी तरह घुमा-फिराकर दिखाते है। विदेशी लोगो पर उनके शहर और देश का अच्छे-से-अच्छा असर पडे, इसकी वे पूरी कोशिश करते है। वे विदेशियो को अपने घरो मे भी अपना रहन-सहन दिखाने के लिए ले जाते है। मौका होने पर चाय-पानी, अल्पाहार की व्यवस्था भी शौक से करते है। थियेटर, सिनेमा आदि का भी प्रबन्ध करते है। इस तरह की सेवा करने मे उनको आनद मिलता है। इसलिए सेवा करने के लिए खुद फीस देकर ऐसी सस्थाओ के वे सदस्य बनते है। विदेशी लोगो से परिचय करने मे और उनके बारे मे अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त करने मे इनको एक प्रकार का आत्म-सतोष मिलता है।

यह सस्थाए आम टूरिस्टो के लिए नही बनी है। जो लोग किसी कार्य-विशेष से वहा जाते है या किसी सस्था या सरकार की मार्फत या आदान-प्रदान के सिलसिले मे वहा पहुचते है, उन्हीका खास तौर से ख्याल रखा जाता है।

इन लोगो को सरकार की तरफ से कोई मदद नही मिलती। ये किसी तरह की सरकारी मदद लेना पसद भी नही करते है। इनका कहना है कि यह तो जनता का कार्यक्रम है और जनता को ही इसका भार उठाना चाहिए। लोगो को अपनी ताकत पर ही निर्भर रहकर इसे चलाना चाहिए। सरकार से मदद लेकर उससे ये किसी प्रकार बधना भी नही चाहते और समझते है कि उनकी भावना की सही तृप्ति इसीमे है कि वे खुद इसका भार वहन करे।

साधारणत व्यापारी-वर्ग के लोग या उनकी स्त्रिया खुद ड्राइवर बनकर स्वय-सेवा के रूप मे अपनी सेवाए देती है। छुट्टियो के दिनो मे तो व्यापारी लोग प्राय स्वय यह काम करते है। पैसा खर्च करने मे तो इनको विशेष कठिनाई नही होती है। मोटर होती ही है। उसे चलाना भी करीब-करीब हरेक को आता ही है। पर हा, समय देते है और व्यक्तिगत रूप से शारीरिक कष्ट उठाने को तैयार रहते है, यह वेशक तारीफ के लायक वात है।

केद्र के डाइरेक्टर के पास ऐसे सारे सदस्यो के नाम, पते और टेली-फोन नवर लिखे होते है। हरेक सदस्य के प्रिय विषय और जिन देशो के लोगो को वह अधिक पसद करता है, इसकी सूची रहती है। सप्ताह के कौन-से दिन और कौन-सा समय उसको अधिक अनुकूल होता है, यह भी दर्ज रहता है। वाहर का कोई दल पहुचनेवाला हो तो पहले ही फोन करके तय कर लेते है कि कव और कौन, किसके लिए आयेगा। ऐसे 'ड्राइवरो' के आते ही उनको मेहमानो का सक्षिप्त परिचय, जो टाइप किया हुआ तैयार रहता है, वह दे देते है। आपस मे एक दूसरे को मिला देते हे और रवाना कर देते है। यदि चार-पाच दल एक साथ जानेवाले हो तब भी दस-पद्रह मिनट मे ही यह सारी रस्म पूरी हो जाती है। सारे 'ड्राइवर' लोग नियत समय पर ही आ पहुचते है। सभी लोग समय का वडा ख्याल रखकर उसकी पूरी पावदी

रखते है। अपनी लापरवाही से दूसरो का समय वरवाद न हो, इसका बडा ख्याल रखते हे।

पैसा जमा करने के लिए साल मे एकाध वार 'डिनर डान्स' का आयोजन करने से काफी पैसा इकट्ठा हो जाता है। पच्चीस-पच्चीस डालर देकर भी अनेक दपती या जोडे ऐसे कार्यक्रमो मे भाग लेने को उत्सुक रहते है।

डेट्रोइट शहर मे सामाजिक सेवा करनेवाली सारी सस्थाओ का एक वडा सुदर आयोजन दिखाई दिया। वहा की करीव-करीव सारी ऐसी सस्थाए, जिनकी सख्या करीव १९३ है, एक समिति के अतर्गत शामिल हो गई है। इनमे से १२३ सस्थाए तो पूरी तरह से जनता द्वारा चलाई जाती हैं। सत्तर ऐसी है, जिनको सरकार की तरफ से मदद भी मिलती है। इन सवने मिलकर तय किया कि वे लोग वार-वार लोगो के पास पैसा मागने नही जायगे। यह न उनके लिए ठीक है और न चदा देनेवालो के लिए ही। इसलिए इन सवने मिलकर यह तय किया कि वे साल मे सवकी तरफ से मिल-जुलकर एक ही वार चदा इकट्ठा करेंगे। योजना मे शामिल हुई कोई भी सस्था अपने लिए अलग से चदा इकट्ठा नही कर सकती।

यह चदा साल भर मे एक वार लगातार तीन सप्ताह तक वडे जोर-शोर से और पूरी ताकत लगाकर इकट्ठा किया जाता है। करीव साठ हजार कार्यकर्ता और स्वयसेवक इसके पीछे लग जाते है। वे शहर के एक-एक घर मे पहुच जाते है। इस साल उन्होने आदोलन के जरिए १ करोड ६० लाख डालर इकट्ठा किया। इतनी रकम जमा करने मे व्यवस्था के लिए कुल खर्च करीव ३ प्रतिशत आया। वाद मे यह चदा सदस्य-सस्थाओ मे पूर्व-निश्चित अनुपात के अनुसार वाट दिया जाता है। कई सस्थाओ ने अपने काम के लिए मिल-जुलकर कर्मचारी भी रख लिये हैं। इसने खर्च कम होता है और काम अधिक। कार्य मे एक तरह की निश्चितता और दक्षता भी आ जाती है, क्योकि इस तरह से अधिक वेतन देकर वे अधिक योग्य और अनुभवी व्यक्ति को ऐसे काम सौंप सकते हैं। वे लोग यह वात अलवत्ता मानते है कि किसी सस्था का काम सुचारु रूप से चलाने के लिए वाकायदा दफ्तर, हिसाव-किताव व कागजी खाना-पूरी वरावर होनी चाहिए। इस काम के लिए वे सवैतनिक मत्री का होना आवश्यक समझने

है। उसको मदद देने के लिए फिर जो लोग इकट्ठे हो जाते है, वे अवैतनिक काम करते है।

एक बात और भी अच्छी लगी। ऐसे सवैतनिक कार्यकर्ता को दूसरे लोग हीन समझकर नौकर की तरह हुक्म देकर काम नही लेते। उसकी भी इज्जत औरो के समान ही होती है। समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति एक दूसरे के ऊपर असर व दबाव डालकर अधिक चन्दा इकट्ठा करवा देते है। उसी तरह एक ही सस्था के लोग अपने साथियो पर भी दबाव डालने मे नही हिचकिचाते।

सब सस्थाओ द्वारा मिलकर वर्ष मे एक ही बार चदा इकट्ठा करने की कल्पना मुझे तो बहुत अच्छी लगी। अपने देश मे बबई, कलकत्ता, दिल्ली आदि बडे शहरो मे रहनेवाले लोगो को भी यह योजना उचित लगेगी। हम लोगो को भी कोशिश करके इस तरह की कोई सस्था कायम कर लेनी चाहिए, जिससे अच्छे काम करनेवाली सार्वजनिक सस्थाओ को भी और चदा देनेवालो को भी बहुत आसानी हो जाय। अलग-अलग चदा इकट्ठा करने की मेहनत और खर्च बचे। चदा देनेवालो का समय भी बचे। जो भी कुछ उनको देना है, वह बहुत खुशी से दे सके। किसीको इकार करने की आवश्यकता ही न पडे।

डेट्रोइट की 'युनाइटेड कम्यूनिटी सर्विस' नाम की सस्था भी ऐसी ही सस्थाओ मे से एक है। इसके सदस्यो को विदेशो से आये हुए मेहमानो का अपने शहर मे स्वागत करने और उनपर खर्च करने मे एक विशेष गर्व अनुभव होता है, सुख भी मिलता है। सत्तर वर्षीय वृद्धा मिस फ्लोरेस कैसेडी, जिन पर हमारी देख-भाल का दायित्व था, इसी सस्था की सचालक है। यह खुद एक कमाल की महिला है। बहुत ही व्यवस्थित और एक-एक मिनट का हिसाब रखनेवाली, लेकिन साथ ही बडी तेज मिजाज की और तय हुए कार्यक्रम पर सबको बराबर कायम रखने-वाली महिला है। हर चीज पहले से लिखकर सबको दे देती है और उसी हिसाब से चलने के लिए सबको बाध्य करती है। कार्यक्रम मे किसी हालत मे फर्क नही हो सकता। वह खुद इस उम्र मे भी बहुत मेहनत करती है। इसीमे अपने जीवन की सफलता मानती है। सेवा करते-करते

उनका प्रभाव भी कई क्षेत्रो मे बहुत हो गया है। बडे-बडे व्यक्तियो के सपर्क मे वह आती रहती है और मेहमानो का बहुत-सा काम तो टेलीफोन से ही तुरत-फुरत करा देती हैं। हम कहते, "हमको अपने मित्र से मिलना है। हम टेलीफोन करके उनके साथ कार्यक्रम बना लेगे।" वह कहती, "अरे, तुम क्या करोगे? लाओ, मैं तुम्हारा इतजाम कर दू।" और वह तुरत कर भी देती। पर हा, यह सब उनके पहले से बनाये हुए कार्यक्रम मे खलल डाले बगैर हो तो ही हो सकता था, नही तो वह किसीकी भी चलने दे, ऐसी महिला नही थी। कोई बीमार पड जाय तो उसकी वह पूरी व्यवस्था करेगी। निश्चित कार्यक्रम से छुट्टी भी उसको तभी मिल सकती थी, अन्यथा हर्गिज नही। हमारे साथ खुद वह हर जगह जाती और सारी चीजे खुद एक अनुभवी मार्ग-दर्शक की भाति बडे उत्साह से हमे समझाती।

डेट्रोइट मे फोर्ड का मोटर का कारखाना, फोर्ड नगरी तथा वहा का म्यूजियम, जिनके सबध मे पहले बताया जा चुका है, उन सबका वर्णन मिस केसेडी ने इतनी अच्छी तरह किया कि जैसे वह वही की कोई विशेष गाइड हो।

हमारे साथ जाते-जाते कई बार बुढिया इतनी थक जाती थी कि जब हमसे अलग होती तो अकेली धीरे-धीरे डगमगाती हुई जाती थी। तब हम लोगो को उसपर दया आ जाती थी। पर अगले दिन फिर वह अपने काम पर मुस्तैदी से हाजिर हो जाती थी। इसी सेवा के बल पर उसकी इतनी ताकत हो गई थी कि वह टेलीफोन से ही बहुत-सा चदा इकट्ठा कर लेती थी।

मैंने ऊपर दो खास सस्थाओ और शहरो के उदाहरण दिये। लेकिन इस तरह की सस्थाए और लोग अमरीका मे हर जगह पाये जाते हैं। उनके पास धन की तो कमी है नही और सहृदयता भी कूट-कूटकर भरी होती है। अपने रहन-सहन और जीवन के तरीको पर उनको गर्व है। वे चाहते हैं कि विदेशी लोग उनको पूरी तरह समझे और उनकी तारीफ करे।

इस सिलसिले मे अब एक बडी नामी व्यापारिक कपनी 'बरोज एड वेलकम' के बारे मे कुछ बताना चाहूगा। सन १८८० मे दो गरीब अमरीकी औषधि-निर्माता इगलैंड मे इकट्ठे हुए और उन्होने इस कपनी को जन्म दिया। सबने पहले टिकिया के रूप मे दवा का वितरण इन्होने ही शुरू

किया था। बरो के मरने के बाद वेलकम ने सारा काम खुद सम्हाल लिया। यह व्यक्ति बडा परोपकारी था। इसकी स्त्री इसको छोडकर चली गई। साथ मे इसके लडके को भी लेती गई। इसलिए वेलकम ने, जिसको सर हेनरी के नाम से सारी दुनिया जानती है, अपनी मृत्यु से पूर्व इस पूरी कपनी का एक फाउडेशन बना दिया। आज इस कपनी की पूरी कमाई धर्मादे या अनुसधान मे अथवा कपनी को बढाने मे काम आती है। पूरी तरह धर्मादे के लिए चलनेवाली इस कपनी का काम बडे सुचारु रूप से चलता है। इसकी कमाई भी बढ रही है। कपनी के डाइरेक्टर बहुत ध्यानपूर्वक और मेहनत से काम करते है। बिक्री-विभाग पर हमेशा बडा दबाव रहता है, क्योकि जबतक वे बिक्री नही बढाते, इस विभाग के कर्मचारियो का वेतन नही बढता। यह तो एक उदाहरण है। वहा के धर्मार्थ ट्रस्टो की सख्या कोई बीसियो हजार मे होगी।

बातो-ही-बातो मे अमरीकी मित्रो से ही यह भी पता चला कि वहा के डाक्टर आसानी से कब्जे मे नही आते। वे किसी दवा की सिफारिश घूस खाकर या किसी और वजह से नही करते। बिना इसके किये भी उनकी आय काफी होती है। हा, खुशामद करके उनसे अपना काम भले ही निकलवा लिया जाय या उनको बेईमान बनानेतरीका एक तका यह हो सकता है कि अपनी कपनी के बहुत-से शेयर उनको बेच दिये जाय। तब तो कपनी की उन्नति मे उनका स्वार्थ भी निहित हो जाता है। फिर वे जरूर चाहेगे कि उपरोक्त कपनी अधिक नफा कमाये।

शिकागो मे एक शाम को हम लोगो का कोई विशेष कार्यक्रम नही था। हम जो चाहे करने के लिए आजाद थे। हम सभी लोगो ने वहा एक सर्कस मे जाने का तय किया। सर्कस एक बहुत बडे पक्के मकान मे हो रहा था। चूकि हमे देर हो गई थी, हम लोग जल्दी-जल्दी टिकट लेकर अपनी जगह पहुचना चाहते थे। हमारी जगह बताने के लिए वहा बहुत-से लोग एक विशेष प्रकार की आकर्षक टोपी पहने हुए उपस्थित थे। वे हर तरह से हमारी मदद करने को तैयार थे। हमको जो सीटे मिली थी, वे बहुत खराब थी। हमने वहा के भाई से कहा तो उसने हमको विदेशी देखकर दूसरी अच्छी जगह दे दी। बडी

नम्रता से यह भी कहा कि कोई और दिक्कत हो तो उन्हे बताये। जैसाकि वहा रिवाज है, इस तरह का काम करनेवाले के लिए हमने कुछ टिप निकालकर देना चाहा। लेकिन हमे आश्चर्य हुआ जब उसने बडी मीठी अजीब हँसी के साथ उसे लेने से इन्कार कर दिया। उसकी हँसी बोल रही थी कि वह यह काम पेशे या कमाई की दृष्टि मे नही कर रहा है। हमे उसके बारे मे जानने की अधिक उत्सुकता हुई तो पता चला कि वह सारा मकान और सर्कस 'फ्री मेसन्स' नाम की सस्था की सपत्ति है। 'मेडीनाह टेंपल आडिटोरियम सर्कस' के नाम से यह सस्था काम करती है। इस सर्कस की सारी कमाई वे अच्छे कामो के लिए खर्च करते है, खास करके गरीब बच्चो को अस्पताल मे भेजकर उनका इलाज कराने मे। फ्री मेसन्स सस्था के बाईस हजार सदस्य है। हर सदस्य पाच डालर प्रतिवर्ष सहायता-शुल्क देता है। ये सब सदस्य अच्छे घरो के है। कुछ तो खुद व्यापारी और कुछ बडे-बडे ओहदो पर नौकरी करनेवाले लोग होते है। सेवा करने की दृष्टि से ही वे इस सस्था के सदस्य बनते है। उनको यह लाजिमी है कि महीने मे कम-से-कम दो-तीन बार जब भी सस्था का कोई काम हो तो उसमे अपना समय बिना किसी मुआवजे के दे। हर गुरुवार को इन सबकी सभा होती है। खेल खतम होने पर उन्हीमे से एक फ्री मेसन ने हम लोगो को हमारे अड्डे पर पहुचा भी दिया।

सान्फ्रान्सिस्को मे हमे एक पत्रकार एक पार्टी मे मिल गया। यह छ वर्ष पहले हालैंड से आकर यहा बसा था। इसके व्यक्तिगत जीवन के बारे मे बात चल पडी तो वह बडी दिलचस्प निकली। यह अपने देश हालैंड से जब सान्फ्रान्सिस्को पहुचा था तो इसकी जेब मे सिर्फ ७५ सैंट थे। पाठक समझ सकते है कि एक परदेशी को, जेब मे बिना किसी पैसे के, एक नये स्थान मे कितनी कठिनाई हो सकती है। लेकिन इसे कोई विशेप दिक्कत नही हुई, खासकर इसलिए कि अमरीका मे किसी भी तरह के काम को करने में बुराई या हलकापन नही मानते। कोई काम वहा ओछा नही। सब कामो की समान कद्र है। यदि आप कोई छोटा काम भी करे तो उससे आपकी इज्जत पर कोई असर नही होता। इसने धीरे-धीरे छोटे-मोटे काम करके वहा के समाज मे अपने लिए स्थान बना लिया। फिर एक पत्र मे एक स्तम्भ लिखने

का काम ले लिया। जब हगरी मे बडी क्राति हुई तब इसको एक नई कल्पना सूझी। इसने अपने स्तभ के द्वारा हगरी के शरणार्थियो को मदद देने के लिए एक आम अपील छाप दी। अगले २४ घटे मे इसके दफ्तर मे करीब ५०० टेलीफोन आये। लोगो ने अपनी तरफ से ऐसे शरणार्थियो को अपने घर मे रखने, काम-धधा देने तथा हर तरह की मदद देने की तैयारी बताई। तुरत ही सारा इतजाम हो गया और हवाई जहाज शरणार्थियो को हगरी से सान्फ्रासिस्को ले आया। वहा आने पर उनको अलग-अलग घरो मे बाट दिया गया। एक सप्ताह मे ही इनमे से करीब ९८ प्रतिशत लोगो को काम भी मिल गया। उनमे से अनेको ने तो साफ-सफाई का काम करना पसद किया। आनेवालो मे एक वकील था, लेकिन उसने भी वकालत करने की बजाय भगी का काम पसद किया। अब तो ये लोग इतना कमाने लगे है कि इनमे से ७५ प्रतिशत लोग तो आय का काफी भाग बचाकर घर पैसा भेजने लगे हैं। एक बार जो यहा का नागरिक हो गया तो फिर 'सोशल सेक्युरिटी' या 'अनएम्प्लायमेट बेनीफिट' मे कोई भेद-भाव नही किया जाता है। ये लोग पहले तो अपने देश वापस लौटना चाहते थे, लेकिन अब यह बात नही रही। किसीने उनका नाजायज फायदा नही उठाया और न उनसे अपना मतलब साधने की कोशिश की। इससे वे खुश है और वही रहना चाहते हैं।

इस प्रकार इस भाई ने अपने एक स्तभ के द्वारा करीब ३०० हगरी-वासियो को अमरीका मे लाकर उनके लिए काम-धधे की व्यवस्था की और उन्हे सुख से बसा दिया। इससे इसकी खुद की इज्जत भी बढी और अखबार मे स्थान भी अच्छा हो गया। इसी बीच वहा के एक बडे धनवान की बेटी से इसकी दोस्ती हो गई। वह लडकी इससे शादी करने को तैयार हो गई। तबतक उसके पास अपना कोई ठौर-ठिकाना नही था। कुछ खास कमाई भी नही थी। वह एक विदेशी था, फिर भी बेटी की इच्छा के कारण बाप ने खुशी से इजाजत दे दी। उसने इतना ही कहा कि "बेटी जैसी तुम्हारी इच्छा। तुम लोग कुछ पैसा चाहो तो मैं दे दू। बाकी तुम जानो।" लेकिन इन्होने उनसे पैसा लेना उचित नही समझा। दोनो ने तय किया कि खुद मेहनत करके अपने पैरो पर खडा होने मे ही अधिक आनद है। उसीसे उनके स्वाभिमान की रक्षा भी हो सकती है। शुरू-शुरू मे उनको अवश्य

कठिनाई हुई, मेहनत भी ज्यादा करनी पडी, शरीरिक सुख-साधनो की भी कमी रही, फिर भी वे खुश थे। धीरे-धीरे उनकी स्थिति बहुत सुधर गई । जब हम वहा गये तब वे अपना खुद का छोटा-सा नया घर बनाने मे व्यस्त थे। बहुत-सा मकान का काम तो वे खुद अपने ही हाथो से, शाम-सबेरे खाली समय मे, करते। हगरी से आये शरणार्थियो मे से एक व्यक्ति को उन्होने भी अपने घर मे स्थान दिया है। वह इन्हीके साथ रहता और खाता-पीता है। घर की गृहणी ही उसके लिए भी अपने ही हाथो से खाना पकाती है । वह भी बडी मेहनत से इनको अपने मकान बनाने मे मदद करता है ।

इस उदाहरण से वहा के जीवन के बारे मे ज्ञात होता है कि विदेशी लोगो के लिए भी वहा अच्छी सद्भावना है । उनको अपने जीवन मे सम्मिलित करने मे उनको किसी तरह का सकोच नही है। आदमी मेहनती सूझ-बूझवाला और करतबगार हो तो उसकी वहा पूरी पूछ होती है । वह अपने लिए वहा के समाज मे तुरत स्थान बना सकता है ।

इन सब बातो से अमरीका के आम जीवन की इस बात की ओर ध्यान आकर्षित होता है कि वहा हर छोटे-से-छोटे आदमी को, यदि उसमें कुछ काबलियत हो तो काम करके सफलतापूर्वक आगे बढने का, और बडे-से-बडा आदमी बनने का पूरा मौका मिलता है । हर व्यक्ति के लिए हर तरह के साधन और मौके उपस्थित हे । जो भी चाहे उसका फायदा उठा सकता है। इस तरह से फायदा उठाकर रोज ही सैकडो-हजारो लोग बराबर आगे आते हैं । रोज नये-नये व्यापार और उद्योग खुलते है । नये-नये लोग उनमे आते है । उनमे तीव्र प्रतियोगिता होने की वजह से चीजो की सफाई, अच्छाई और उपयोगिता बढती है । वहा के हिसाब से उनके दाम भी कम रहने की तरफ रुख रहता है। रोज नई-नई चीजो का आविष्कार होता ही रहता है । शारीरिक सुख किस तरह बढे और जीवन मे आराम कैसे अधिक पहुचे, इसके लिए छोटे-बडे आविष्कार होते रहते है ।

आज के अमरीका के नैतिक, व्यापारिक, औद्योगिक या शैक्षणिक क्षेत्र मे सफल व्यक्तियो को देखे तो हमे पता चलेगा कि उनमे से बहुतो ने अपना जीवन एक साधारण व्यक्ति की हैसियत से शुरू किया था। इस तरह की समानता का एक कारण यह भी हो सकता हैं कि अमरीका मे

जो लोग शुरू मे आकर वसे, वे लोग यूरोप के उच्चवर्गीय लोगो से सताये हुए थे। उनके अत्याचार से बचने के लिए वे वहा से भागकर आये और इस नये देश मे बसे। इसलिए इन लोगो की भावना वर्ग और धार्मिक भेद-भाव के खिलाफ रही। इन्होने शुरू से कोशिश रखी कि इन भेदो की वजह से किसीके ऊपर अत्याचार न हो। उनके लिए यह गर्व करने लायक बात है कि उन्होने वर्ग-भेद को अपने जीवन मे घुसने नही दिया।

हम लोग इतनी कोशिश करते है, फिर भी हमारे यहा से ऊच-नीच तथा छोटे-बडे की भावना अभी भी बहुत प्रमाण मे कायम है। हमारे धार्मिक ग्रथ कहते है, ऋषि-मुनियो ने सिखाया है, गाधीजी ने पूरी कोशिश कर ली, फिर भी हमारे समाज से यह अतर दूर नही हुआ है। छोटा काम करने-वाले को हम हीन निगाह से देखते है। पैसेवालो का चरित्र अच्छा न हो, तब भी उनकी समाज मे प्रतिष्ठा होती है। अमरीका धनवानो का देश होकर भी, समाजवादी देश न होने पर भी, इस बीमारी से बच सका, इसके लिए वहा के लोग बधाई के पात्र है।

: १३ :

जिनके हम मेहमान थे

शिकागो पहुचकर हमे बहुत खुशी हुई, जब हमे यह पता चला कि वहा हमे श्री और श्रीमती बोबको के परिवार के घर मे रहने का मौका मिलेगा। अमरीका का जीवन ही ऐसा है कि वहा के लोग हर तरह की मदद कर सकते है, लेकिन अपने घर मे किसीको टिकाना उनके लिए आसान बात नही। उनके मकान मे इतनी जगह ही नही होती। सब काम हाथ से करने की वजह से उनके पास इतना समय और सुविधा भी नही होती। उनके कुटुब मे तीन दिन रहकर हमे बहुत अच्छा लगा। अमरीका के कौटुबिक जीवन के बारे मे अधिक जानकारी मिल सकी।

यह एक उच्च मध्यवर्गीय अमरीकी परिवार कहा जा सकता है। उसके पास खुद का एक अच्छा-सा दोमजिला मकान था। वैसे मकान खुद का था, लेकिन जैसा कि अमरीका मे आमतौर पर प्रचलित है, उनका मकान भी कर्ज लेकर बनाया हुआ था। इसलिए रहन रखा हुआ था। घर की लागत करीब २३५०० डालर थी, जिसमे से १० हजार तो शुरू मे ही नकद देना पडा। बाकी १५० डालर हर महीने के हिसाब से चुकाते हे।

श्री बोबको एक अनुसधान-फाउडेशन मे इजीनियर हैं। १५ हजार डालर सालाना तनख्वाह पाते हैं। इसके अलावा और कोई कमाई नही है। तीन बच्चे है। बडी लडकी डोरोथी पद्रह वर्ष की थी। दूसरा लडका, बिल बारह वर्ष का और तीसरा, कैनेथ ग्यारह वर्ष का था। दोनो लडके सुबह पहले अखबार बेचने जाते। साल मे करीब दो-दो सौ डालर खुद की कमाई कर लेते थे। एक-एक अखबार ८० से १०० पृष्ठ का होता है। उनके बोझ का तो कोई अदाज ही नही। अखबारवाले उनको एक हाथ-गाडी देते है। अखबार उनके घर पर ही पहुचा जाते हैं। प्रत्येक लडके को अखबारवालो की तरफ से १५-१५ डालर हर महीने मिलते हैं। ग्राहको से त्योहारो पर

टिप आदि भी मिल जाती है। लडकी फुरसत के समय पास-पडोस के परिवारो मे बच्चो की देख-भाल के लिए चली जाती है। उसे इस तरह के फुटकर कामो के लिए एक घटे का ५० सेट या ढाई रुपया मिल जाता है। सब बच्चे अपनी मा को घरके काम-काज मे पूरी मदद करते है। मा घर का पूरा काम करते हुए सामाजिक सस्थाओ मे भी रस लेती है।

श्री बोबको ने बारह वर्ष पहले ४५० डालर प्रति मास पर इसी कपनी मे नौकरी शुरू की थी। अच्छा काम करने की वजह से साधारण लोगो की अपेक्षा उनको काफी अधिक तरक्की मिली। इनके खर्च का मोटा हिसाब इस प्रकार है—

२० डालर प्रति मास सपत्ति-कर।

१८० डालर आय-कर के लिए कपनी स्वय काट लेती है।

६० डालर, यानी पगार का ५ प्रतिशत, रिटायरमेट-फड मे जाता है।

५० डालर बच्चो की पढाई।

७५ डालर तीन बच्चो की आगे की पढाई के लिए जमा करवाते जाते है।

१०० डालर किसी दुर्घटना या आकस्मिक बडे खर्च के लिए बैक मे जमा कराते है।

शेष २०० डालर खाने-पीने की वस्तुओ, बीमा, मोटर-खर्च आदि मे लगते हैं।

इससे पाठको को अमरीका के एक खाते-पीते उच्च मध्यमवर्गीय परिवार के रहन-सहन के बारे मे कुछ कल्पना आवेगी, उनके जीवन का कुछ चित्र पाठको के सामने खडा हो सकेगा।

उन लोगो का जीवन-स्तर इतना महगा क्यो हो जाता है, इस बारे मे सान्फ्रासिस्को के हमारे एक पत्रकार मित्र ने अच्छे उदाहरण दिये। उसने कहा कि जबतक उनकी मोटर का 'थर्ड पार्टी इश्योरेस' नही हो जाता तबतक वह अपनी गाडी को छूने मे भी कापते हैं। यदि भूल-चूक से कही कोई टक्कर कर बैठा तो अदालत जितना भी हर्जाना देने के लिए कहे उतना सामनेवाले व्यक्ति को देने के लिए बाध्य होना पडता है। हर्जाना सामनेवाले की स्थिति पर निर्भर रहता है। यदि वह लखपती या करोडपति है, जैसा कि वहा अनेक लोग होते है, तो हर्जाना भी लाखो और करोडो मे देना

पडता है। मामूली चोट लग जाने पर भी, यानी हाथ-पाव टूट जाने पर भी, वडा हर्जाना देना पडता है। हमारे यहा जिस तरह 'थर्ड पार्टी इश्योरेस' गाडी के वीमे के साथ अपने-आप कानूनन हो जाता है, उस तरह अमरीका मे नही है। इस तरह का दड इनपर हो जाय तो इनका पूरा जीवन बरबाद हो सकता है। यदि ये तुरत हर्जाना न भर सके तो महीना वध जाता है। फिर उम्रभर उसे चुकाते रहना पडता है।

इसलिए जिस तरह अमरीका के जीवन मे मोटर होना एक विलासिता नही, बल्कि आवश्यकता हो गई है, उसी तरह उसका वीमा कराना भी आवश्यक हो गया है। उनके खुद के पास ही एक छोटी गाडी है, जिसको उन्होने तीन लाख डालर के लिए 'थर्ड पार्टी इश्योरेस' करा रखा है। गाडी की टूट-फूट और खुद को चोट लगे तो उसका भी दो हजार डालर का वीमा अलग से है। इन सबका प्रीमियम ये लोग १५० डालर सालाना भरते हैं। इस तरह से यह एक दिखाई न देनेवाला, पर आवश्यक, खर्च करना पडता है।

इसी तरह से और चीजो का भी बीमा कराना आवश्यक हो जाता है। चूकि इनके पास बचत की पूजी नही होती, इसलिए कोई आफत या तकलीफ अचानक आ जाय तो उसे सहन करने की ताकत उनमे नही होती। हर सभावित विपत्ति का इतजाम इनको पहले से करके रखना पडता है। मोटर के १५० डालर के बीमे के अलावा उन्होने अपने स्वास्थ्य का, हर व्यक्ति का करीब १०० डालर, आग और चोरी का ५० डालर और मॉरगेज इश्योरेस का ८० डालर प्रीमियम के हिसाव से वीमा रखा था। जिंदगी का बीमा इसके अलावा है। इस तरह एक मामूली मध्यम श्रेणी के परिवार को वीमे को दो हजार रुपये से ज्यादा का खर्च आ जाता हे।

वीमारी मे भी वहुत ज्यादा खर्च होता है। दवा-दारू व अस्पताल की सेवा बहुत ही महगी है। सिर्फ अस्पताल मे कमरे का भाडा ३० से ३५ डालर रोज होता है। डाक्टर व नर्स की फीस, दवा-दारू, खाने-पीने का खर्च इसके अलावा होता है। इसीलिए जव हम लोग अमरीका पहुचे तो हमारी देख-रेख करनेवालो ने पहली चीज की थी हम सव लोगो के

स्वास्थ्य का बीमा करवाना।

अभी-अभी मेरे पास श्रीमती बोबको का पत्र आया, जिसमे उन्होंने अपने विदेशी अतिथियो के बारे मे दिलचस्प वर्णन किया गया है। वह लिखती है कि "इस वर्ष हम लोग बहुत अधिक व्यस्त रहे। हमको अपने विदेशी मेहमानो के प्रति इतनी दिलचस्पी उत्पन्न हो गई है कि आप लोगो के जाने के बाद हमारे यहा स्पेन, इटली, अबीसीनिया, बेलजियम, तुर्की, फिलीपाइन्स, वेनीजूला, पेरू, मेक्सिको आदि कई देशो के मेहमान आकर रह गये है। भारत से भी दो-एक मेहमान आये थे।

"हमे इन मेहमानो के द्वारा बहुत-कुछ सीखने को मिला है और इस वजह से हमने अपनी दूसरी बहुत-सी प्रवृत्तिया कम कर दी है।

"हमारे घर का अगला हिस्सा अब हमेशा के लिए मेहमानो का कमरा बन गया है।

"हमारे नये अनुभव की वजह से अखबारो मे जो नित्य नई खबरे छपती है उनका हमारे लिए अब अधिक महत्व हो गया है। अब नये दृष्टिकोण से हम उसका अर्थ देख व समझ पाते है। हमारे मित्रो की समस्याए हमारे लिए प्रत्यक्ष अर्थभरी हो गई है। अब हम ऐसी स्थिति मे आ गये है कि हमारी काग्रेस को और हमारे राजनैतिक नेताओ को हम अन्तर्राष्ट्रीय मामलो के बारे मे अपनी राय लिख सकें।

"आपने महात्मा गाधी की लिखी हुई किसी किताब के बारे मे मुझे कहा था। मुझे श्री नेहरू के विचारो को जानने की भी बहुत इच्छा है। क्या उनके बारे मे कुछ किताबे भेज सकेंगे? हमारी पत्र-पत्रिकाए खबरे तो बहुत छापती है, लेकिन क्या वे सब खबरे सही ही होती है?"

अमरीका के दौरे मे हम लोगो को वहा के एक अच्छे किसान-परिवार से भी परिचय करने का मौका मिला। नेब्रास्का प्रान्त मे दनवार नाम का गाव गेहू की फसल के लिए प्रसिद्ध है। वैसे यह सारा प्रदेश ही खेती-प्रधान है। जिस किसान के घर हम गये, उसका नाम अर्नाल्ड रीने था और उसकी पत्नी का लारेना। पुरुष ४३ वर्ष का हृष्ट-पुष्ट जवान और स्त्री ४० वर्ष की थी। इनके चार लड़के थे। दो जुडवा १४-१४ वर्ष के, एक १३ वर्ष का और छोटा १२ वर्ष का था। इनका खेत ४७० एकड का था। इसमे १२०

एकड मे मकई, ८० मे गेहू, ५० मे बाजरा, ३० मे ज्वार और ४० मे घास पैदा करते है। करीब १५० एकड जमीन मकान, जानवरो का अहाता और रास्तो आदि के लिए खाली छोडी गई है।

पूरी खेती ये लोग खुद अपने हाथो से करते है। ट्रैक्टरो की सहायता से मिया-बीवी और बच्चे सब काम मे जुटे रहते है। सबके-सब बहुत मेहनत करते है। इतनी बडी खेती और इतना बडा काम होते हुए भी कोई नौकर नही—न घर मे और न खेत मे ही। कभी बहुत जरूरत पडी तो साल मे दो-चार दिनो के लिए एकाध मजदूर भाडे पर रख लेते है। अपने ट्रैक्टरो की मामूली दुरुस्ती भी अपने खेत मे बने हुए वर्कशाप मे ये खुद ही कर लेते हे।

इसके अलावा खेत पर करीब सौ जानवर भी पाले हुए है। तीन-चार जानवर तो दूध के लिए, बाकी का मास काम मे आता है। करीब एक हजार मुर्गिया और सौ सुअर भी हे। जानवरो को पालकर, और बडा करके बेच देते है। उसकी भी कमाई होती है। इन सबके लिए भी आवश्यक काम खुद अपने हाथो से कर लेते है।

साल मे एक ही फसल होती है। सिचाई की कोई व्यवस्था नही है। बारिश और जो बर्फ गिरती है, उसीपर निर्भर रहते हे। पैदावार अदला-बदली करके लेते है। अपने उपयोग के लिए दूध और साग-सब्जी भी खेत पर पैदा कर लेते हे। मजदूरी महगी है। करीब सवा से डेढ डालर प्रति घटे के हिसाब से देनी पडती है। इसलिए ये लोग नौकर नही रखना चाहते।

इनका खुद का एक बहुत अच्छा पक्का मकान खेत मे ही बना हुआ है। दो सोने के कमरे है। रेडियो, टेलिविजन सेट लगा है। रसोई मे बिजली के सब उपकरण मौजूद है। नई मोटर पास मे है। चारो बच्चे स्कूल मे जाते है। बाप ही इनको मोटर से स्कूल मे छोड आता है। घर मे ठण्डे और गर्म पानी आदि की सब व्यवस्था मौजूद है। इस तरह अमरीका का एक किसान रहता है। इनकी स्थिति इतनी अच्छी इसलिए हो सकी कि इन्होने और इनके बाप-दादो ने अक्ल से काम लिया। साथ-ही-साथ बहुत कडी मेहनत भी की। कुछ प्रकृति ने भी साथ दिया।

इसकी कुछ व्यक्तिगत कहानी से भी पाठको को परिचित कराऊ । इसका हाल जानने से वहा के लोगो की समस्याओ की कुछ कल्पना पाठको को होगी । इसकी सारी जमीन इसके पिता के स्वामित्व की है । खेत पर हुई कमाई का आधा हिस्सा यह अपने पिता को भाडे के रूप मे देता है । हम जब वहा थे उससे पहले वर्ष निवल आय करीब ६ हजार डालर की हुई । कभी-कभी नुकसान भी होता है । इसमे से एक हजार डालर आयकर मे जाता है । करीब दो तीन हजार डालर बचते है । बैंक मे पैसा रखना उसे पसन्द नही । अपने साधनो को सुधारने मे पैसा लगाता रहता है । उसके बच्चे भी बडा काम करते है और खेत पर खुश है । कहते है कि वे भी बडे होकर खेत पर ही रहेगे और किसान का जीवन बितायेगे ।

इसके पिता ने दूसरे किसानो से १९१४ मे करीब १५० एकड जमीन मोल ली थी । फिर १९२९ मे ८० एकड जमीन और ले ली । सन् १९३१ मे फिर ८० एकड और १९४६ मे पुन १६० एकड बढा ली । जमीन की कीमत करीब २०० डालर प्रति एकड है । चारे आदि के लिए ६ प्रतिशत व्याज से रकम उधार मिल जाती है । यद्यपि खेती से कमाई ज्यादा नही है, फिर भी वह सुखी है । हवा-पानी अच्छा है । जीवन तुलनात्मक दृष्टि से सस्ता है । लालच और बुरे कामो के प्रति आकर्षण नही है । दूसरे किसान पडौस मे ही एकाध मील दूर पर घर बनाकर इसी तरह खेतो मे रहते है । ये किसान बहुत भले है । अथितियो का खूब सत्कार करते है । हमारा भी इन्होने बडे प्रेम से स्वागत किया । खूब खातिरदारी की । हम लोग शाकाहारी थे, फिर भी न जाने कितने पकवान बनाये थे । कहते थे कि हम उनके सम्माननीय अतिथि है । ऐसे लोग कब-कब यहा पधारते है ।

बडे आदर से घूम-फिरकर हम लोगो को खेत, जानवर आदि बताये । चारो लडको के जुम्मे मुख्यत जानवरो की देख-रेख थी । उनको चारा-पानी देना इत्यादि वे खुद ही बडे उत्साह से कर रहे थे । हमे घुमाते हुए काम भी करते जाते थे । उसका पिता उसके साथ नही रहता । जमीन का मालिक वह है, इसलिए या तो लडका अपने बाप से जमीन खरीद ले, नही तो उसको भाडा चुकाता रहे, यह वहा की व्यवस्था है ।

इस प्रदेश के मुख्य शहरो मे बहुत ही बडे-बडे पक्के गोदाम बने है

जिनमे लाखो-करोडो मन गेहू रखने की व्यवस्था सरकार की तरफ से है । बाजार-भाव से ज्यादा निर्धारित, दाम देकर सरकार गेहू खरीद लेती है और उसे सभालने व बेचने की व्यवस्था करती है । ये लोग चाहे तो खुद भी सीधे व्यापारियो को बेच सकते है । अब तो तीसरी पच-वर्षीय योजना मे हमारे देश मे भी अमरीका से इतना गेहू आवेगा कि इसी तरह की व्यवस्था हमे भी करनी पडेगी । जगह-जगह बडे-बडे गोदाम दिखाई देगे, जिनमे मशीने लगी होगी, जिनकी सहायता से गेहू भीतर या बाहर लाया जा सकेगा ।

: १४ :

अमरीका के रेड इंडियन

अमरीका के आदिवासियो से, जिन्हे रेड इडियन कहा जाता है, मिलकर भारत के 'इडियन्स' को बडी प्रसन्नता हुई। अमरीका के भूखड के दक्षिण-मध्य मे एरीज़ोना प्रान्त मे इन लोगो की बस्ती अधिक है। हम लोग हवाई जहाज से अलबुकर्क उतरे। वहा हमारा स्वागत करने के लिए विडोरॉक से श्री ढिल्लन प्लटेरो और उनके कई साथी पहुच गये थे। ढिल्लन से हमारा पहले का परिचय था, क्योकि दिल्ली कान्फ्रेस मे अमरीका की तरफ से वह भी आये हुए थे। वहा जाने से पहले हमे पता नही था कि अपने क्षेत्र मे वह कितने महत्व का स्थान रखते है। ३५-३६ बरस के नौजवान होगे। फिर भी वहा की जातीय कौंसिल के उप-सभापति थे। उस पूरे क्षेत्र मे उनकी बडी कद्र थी। रेड इडियन्स मे सबसे बडी और प्रगतिशील जाति नवाहो के नाम से प्रसिद्ध है। इनका मुख्य केन्द्र विडो-रॉक है।

अलबुकर्क से अपनी मोटर को खुद चलाकर, ढिल्लन हम सबको कोई १५० मील, विडोरॉक ले गये। रास्ते मे उन्होने हमे कई स्कूल आदि दिखाये, जो कि उस क्षेत्र मे अभी-अभी खुले है। अमरीका का यह क्षेत्र अपेक्षाकृत बहुत पिछडा हुआ और गरीब है। वहा की परिस्थितिया हमसे कुछ मिलती-जुलती है। उस क्षेत्र मे रास्ते बहुत कम है। बहुत जगह अभी तक कच्चे रास्तो से गुजरना पडता है। स्कूल भी बहुत कम है। अब ढिल्लन और उनके साथियो के प्रयत्न से नये-नये स्कूल खुल रहे है। स्कूलो मे शिक्षको, पैसो व अन्य सुविधाओ की कमी है। एक स्कूल मे तो पानी इतना दुर्लभ है कि वहा महीने मे सिर्फ एक बार एक हजार गैलन पीने का पानी आता है। उसीमे से बच्चो आदि को नपा-तुला पानी दिया जाता है। यहा छोटी-छोटी बस्तिया दूर-दूर फैली

हुई है। इस स्कूल मे कुल ७० विद्यार्थी दूर-दूर से रोज पढने आते है। इस जाति के बडे-बूढे लोग अभी भी अपने बच्चो को स्कूलो मे भेजना पसद नही करते। कहते है कि इससे लडके शौकीन हो जायगे, बिगड जायगे और फिर मेहनत-मजदूरी नही करेंगे।

आदिवासियो के बारे मे हमारी और वहा की सरकारो के सामने कई समस्याए समान है। वहा भी पुराने लोगो को आधुनिक शिक्षण और आधुनिक साधनो का प्रवेश अच्छा नही लगता है। उनको डर है कि उनके बच्चे इसकी वजह से अपनी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परपरा को कही भूल न जाय और अपने पूर्वजो के घरो को छोडकर कही और शहरो मे न जा बसें।

लोगो मे गरीबी तो थी, लेकिन साथ ही फुर्सत भी ज्यादा थी। हमारा सत्कार भी उन्होने जितना किया उतना और किसीने नही किया। बडे प्रेम से उन्होने हमारी हर तरह से खातिरदारी की। एक रोज तो उन्होने अपनी जाति के मालकी के तीनो छोटे हवाई जहाज, जिसमे तीन-तीन, चार-चार आदमी बैठ सकते थे, हमारे हवाले कर दिये। उनमे बैठकर उन्होने अपना सारा प्रदेश एक दिन मे ही हमे दिखा दिया। यह सारी आव-भगत और खर्चा उन्होने अपनी जाति की कौंसिल की तरफ से किया।

से बहुत धनवान भी हो गये है। इन वर्षो मे इनके क्षेत्र मे तेल और ऐटमी औजार व हथियार बनाने के लिए मुख्य वस्तु यूरेनियम काफी मात्रा मे प्राप्त हुए है। इसके लिए जगह-जगह खुदाई चल रही है और प्रदेश के जगलो और पहाडो के बीच मे तेल निकालने की नई-नई फैक्टरिया बिठाई जा रही है। इन दोनो चीजो की वजह से, जहातक मेरा ख्याल है, इस जाति को प्रतिदिन रायल्टी के रूप मे ३७ हजार डालर की कमाई सघीय सरकार द्वारा प्राप्त होती है। इसलिए ये लोग हवाई जहाज आदि भी रख सकते है और नई-नई सडको और स्कूलो आदि का निर्माण करने मे व्यस्त है।

जिन दिनो हम लोग वहा पहुचे थे, वहा की जातीय कौसिल का चुनाव हो रहा था। उसमे हमारे मित्र ढिल्लन भी एक उम्मीदवार थे। उनको अपने चुनाव की कोई परवा नही थी। वह तो दिनभर हमारे साथ ही भटकते रहे। चुनाव बिल्कुल सीधे-सादे तरीके का था, जैसा कि अपने यहा होता है। बहुत-से मतदाता हमारे यहा की तरह ही अशिक्षित व गरीब है। अनेक व्यक्तियो को यह भी समझाकर बताना पड रहा था कि मत किस तरह देना चाहिए।

उन्होने अपने हवाई जहाजो के द्वारा अमरीका के बडे ही सुन्दर प्राकृतिक स्थल व जगत-प्रसिद्ध ग्रेड केनियन की सैर भी हमे करवाई। बडा सुहावना दिन था। ग्रेड केनियन के ऊपर हवाई जहाज से जब हमने चक्कर लगाया तो वहा का दृश्य बहुत ही देखने लायक व लुभावना था। घने जगलो के बीच बडे पहाडो को काटती हुई नदी दूर तक चली जाती है। ऊपर से नीचे तक, बडे अजीब ढग से, हजारो फुट की गहराई तक, सारा-का-सारा पहाड कटा हुआ है। नदी नीचे से बहती है, मानो प्रकृति से खेलती हुई, कठोर पहाडो को भी इधर-से-उधर तक चीरती हुई निकल जाती है। इसके चारो तरफ बहुत ही सुन्दर राष्ट्रीय बाग लगा दिया गया है। अमरीका के दर्शनीय प्राकृतिक स्थलो मे इसका सबसे ऊचा स्थान है। हवाई जहाजो को हमारे लिए खासतौर वहा उतारा गया और उपवन के उच्च अधिकारी दो बडी मोटरो को लेकर हमे लेने आ गये। उन्हे बाग मे ले जाकर जमीन पर से भी ग्रेड केनियन की अतुलनीय

शोभा का दर्शन हमे कराया ।

हिन्दुस्तान मे बैठे-बैठे हम यह कल्पना भी नही कर सकते थे कि अमरीका मे भी इतने पिछडे हुए प्रदेश और लोग है । उनके सामने भी हमारी ही भाति बच्चो और प्रौढ-शिक्षण की समस्याए है । हम तो जब अमरीका के बारे मे सोचते है तो न्यूयार्क और वाशिगटन, उनकी गगनचुबी अट्टालिकाए, हॉलीवुड मे बनी फिल्म द्वारा वताई जानेवाली जिन्दगी के वारे मे सोचते है । वहा लोगो की भी अपनी वडी समस्याए है । उन लोगो मे भी समाज-सुधार की आवश्यकता है, इसको हम भूल जाते है । स्वाभाविक रूप से उनका ध्यान और दिलचस्पी उनके अपने लोगो की उन्नति करने की तरफ लगी हो तो उसमे हमे आश्चर्य नही होना चाहिए ।

१५ :

डिसनीलैंड

अमरीका जाकर 'डिसनीलैंड' न देखना, भारत आकर किसीका ताजमहल न देखने जैसा है। वह एक जागृत स्वप्न है। लॉस एजेलस से कुछ ही दूर एनीहम नाम की जगह पर, १६० एकड जमीन पर यह स्थित है। हॉलीवुड की तरह ही यह भी दुनियाभर मे मशहूर है। हॉलीवुड का तो नाम ही ज्यादा है। स्टूडियो मे दाखिल होने पर दिलचस्पी कायम रखने जैसी विशेष कोई चीज नही। सेट्स अवश्य काफी विस्तृत और खर्चीले होते है। इसके विपरीत डिसनीलैंड एक दिलचस्प अजायबघर है। बडे हो या बच्चे, सबकी दिलचस्पी का सामान डिसनीलैंड मे भरा पडा है। डिसनीलैंड मे दाखिल होते ही लोग समय व भूगोल को भूल जाते है। कई महाद्वीपो की नदिया वहा बहती हैं। वहा मेक्सिको है तो हवाई भी है। विशालकाय आॅल्प्स भी खडे दीखते है। वर्तमान से भूत और भूत से भविष्य मे पहुचने मे देर नही लगती। यह भी कहा जा सकता है कि डिसनीलैंड मे पहुचकर वक्त ही रुक जाता है।

सचमुच डिसनीलैंड वाल्ट डिसनी की प्रतिभा की उच्चतम देन है, वाल्ट डिसनी ने सूक्ष्म कल्पना को इतने सुन्दर ढग से साकार किया है कि कल्पना वास्तविकता मे परिणत हो गई है। सत्य को कल्पना से रगना बहुत बडे कलाकार का काम है, किन्तु कल्पना को सजीव बनाना और भी मुश्किल है। वाल्ट डिसनी ने बडी पटुता से इसका सम्पादन किया है। मन-बहलाव और दिलचस्पी के इतने साधन इकट्ठे कर दिये हैं कि बडे व बच्चे आसानी से कई दिन व्यतीत कर सकते है। हमारे पास वक्त की कमी थी। एक ही रोज मे सबकुछ देखना असम्भव था। अत कुछ ही चीजे देख पाये।

डिसनीलैंड पाच हिस्सो मे विभक्त है—एडवेचरलैंड, फेटसीलैंड,

फ्रटयिरलैंड, टुमॉरोलैंड और मेन स्ट्रीट, यू एस ए । डिसनीलैंड की सरहद पर पहुचकर दर्शको को अनुमान नही हो पाता कि अन्दर क्या-क्या चमत्कार हो सकते है । बाहर करीब १२,००० मोटरे खडी करने के लिए जगह बनी हुई है । नियमित रूप से दिन भर बसे लॉस एजेलस के हर हिस्से से बराबर वहा आती रहती है । प्रवेश-द्वार छोटे-से स्टेशन के रूप मे बना है । यहीपर से पुराने ढग की रेल, जो कुछ ऊचाई पर चलती है, पूरे बाग का चक्कर लगाती है । इस रेल मे बैठकर दर्शकगण इस कला-मदिर की परिक्रमा करते है । बाग की विविधता का कुछ-कुछ अनुमान भी लग जाता है ।

पाठक पूछेगे डिसनीलैंड मे आखिर ऐसी कौन-सी खासियत है ? डिसनीलैंड क्या है, यही एक जटिल प्रश्न है । उसे एक विचित्र मेला कहा जाय या अजायबघर ? दुनिया की बडी नाट्यशाला कहा जाय या मनोरम दृश्यो का समूह ? दर्शक विचार मे पड जाते है ।

वास्तव मे डिसनीलैंड एक माया नगरी है । इसकी कल्पना वाल्ट डिसनी के मस्तिष्क मे बीस साल तक करवटे बदलती रही । १९५२ मे जाकर कही नक्शे बनने शुरू हुए । १९५४ मे जमीन खरीदी गई । १४ महीने के अन्दर ही ८,५०,००,००० डालर खर्च करके वीराने मे आश्चर्यजनक आबादी पैदा कर दी गई । यह एक चतुर शिल्पी का कमाल था ।

हम लोगो ने रेलगाडी से डिसनीलैंड का पूरा चक्कर लगा लिया । उसके बाद पैदल ही आगे बढे तो मेन स्ट्रीट पर पहुच गये । यह १८९० मे जैसे अमरीकी शहर हुआ करते थे, उस आधार पर बनाया गया था । हमे ऐसा लगा कि हम एच जी वेल्स की 'टाइम मशीन' पर बैठकर वास्तव मे सन् १८९० मे पहुच गये हैं । पुराने ढग की बग्घी पर भी बैठकर यहा का चक्कर लगाया जा सकता है, किन्तु पैदल का मजा कुछ और ही होता है । टाउन हॉल, पोस्ट आफिस और फायर हाउस से गुजरते हुए हम आगे बढे तो सामने से आग बुझाने का इजन आता देखा । खास तरह पैदा किये गए छोटे कद के घोडे उसे चला रहे थे । विविध प्रकार की खान-पान की दुकाने लगी हुई थी । छोटी-छोटी बारीकियो का ख्याल रखा गया था । हम वास्तव मे पुराने जमाने मे पहुच गये थे ।

पुराने जमाने को पीछे छोडते हुए हम आगे बढे तो मुख्य चौराहे 'प्लाजा' पर पहुच गये । यही से टुमारोलैड, फेटसीलैड, फ्रटियरलैड और एडवेचरलैड को रास्ते जाते है । हमने टुमारोलैड का निरीक्षण करने का तय किया । कल की दुनिया का प्रतिनिधित्व करनेवाली कौन-सी चीज हो सकती हे ? एक विशाल 'स्पेस रॉकेट' ! हम टिकट लेकर अन्दर चले गये । अन्दर एक बडा 'प्लेनेटोरियम' था । मशीनो की मदद से ऐसा लगा कि रॉकेट अब चद्रमा की तरफ जाने को तैयार हुआ है । धूप और छाह, प्रकाश और अधेरे की मदद से ऐसा लगता था कि हम तेजी से चद्रमा की तरफ लपके जा रहे है । एक व्यक्ति बराबर रफ्तार, दूरी और स्थान के परिवर्तन के बारे मे बताता जा रहा था । आवाज करनेवाली मशीने खूब जोरो से चल रही थी और प्लेनेटोरियम जोरो से हिल रहा था । पाच-सात मिनट तक इसी प्रकार चलता रहा । उसके बाद आवाजे धीमी पडने लगी । हिलना कम होता गया और हम वापस पृथ्वी पर आ गये । हमारी यह चद्रमा की सैर काफी दिलचस्प रही । यद्यपि रॉकेट एक इच भी अपनी जगह से नही हिला, फिर भी असली सैर का-सा पूरा मजा आ गया । रॉकेट से निकलकर हम आगे बढे तो एक अजायबघर मे भविष्य मे बननेवाली चीजे सजी हुई थी । हमने कौतूहलभरी नजर से उन चीजो का निरीक्षण किया ।

फेटसीलैड मे ड्राब्रिज के ऊपर से प्रवेश करते है, जो एक ७० फुट ऊचे किले का हिस्सा हे । इस किले के एक कमरे मे सुप्त सुन्दरी पूरी मध्ययुगीन भव्यता के साथ सोई है । आगे बढने पर कहानी की पुस्तको के पात्र देखने को मिलते हे, जैसे, मिकी माउस, डोनाल्ड डक इत्यादि । वाल्ट डिसनी ने इन पात्रो को मूर्तरूप दिया हे । ये कार्टून फिल्मी दुनिया को बहुत बडी देन है । बच्चो के दिल-बहलाव के लिए तो यह बहुत दिलचस्प चीज है । इनपर छोटे-छोटे कार्टून तो सैकडो बन चुके है । कई पूरी लबी फिल्मे भी बन चुकी है । हा तो, आपको अगर इन पात्रो से मिलना हो तो टिकट लेकर माइनिंग कार्ट पर बैठ जाइये । आप विद्युत-शक्ति के सहारे अपने-आप एक गुफा मे पहुच जायगे । टेढे-मेढे रास्तो से जाते हुए आपकी मुलाकात सात बौनो से हो जायगी । फिर यकायक

शैतान और बदमाश कुबडी (विकेड विच) सामने आ जायगी। आप सहम जायगे, कही आपको छू न ले, क्योकि अग-सचालित करती हुई वह आपकी ओर बढेगी। फिर स्नोव्हाइट से मुलाकात होगी। इस तरह अन्दर-ही-अन्दर खूब घूम-फिरकर आप बाहर आ जायगे। गाडी चलाने का चक्र आपके हाथ मे होते हुए भी गाडी पर आपका काबू नही रहता। अन्दर कही अधेरा है, कही प्रकाश। अजीब-अजीब आवाजे सुनने को मिलती है। कौतूहल, भय और दिलचस्पी का अजीब मिश्रण हो जाता है यहा। इस प्रकार से और भी कई आश्चर्य-चकित करनेवाली गुफाए है। 'एलिस इन वडरलेड-वाक थ्रू' भी देखने लायक है।

फेटसीलैंड मे 'मि० टोड ड्राइव थ्रू', 'मास्ट्रो दि व्हेल' 'वाटर स्लाइड', 'फ्लाइग एलीफट', 'एरियल राइड', 'दि मॅड हटर्स टी पार्टी', 'दि डोनाल्ड डॅक बप्स, 'वाइल्ड लाइफ सर्कस ट्रेन', 'केसी जूनियर' आदि सारी जगहे मन को लुभानेवाली और दिल को प्रसन्न करनेवाली है।

फ्रटियरलैंड पहुचने के लिए एक पुराने किले से गुजरना पडता है। पास मे डेवी क्राकेट का अजायबघर है। फ्रटियरमेन साबर की खाल के कपडे और कुनस्किन की टोपिया पहने दीखते है। बडी आलीशान बग्घियो मे बैठकर आप रगीन रेगिस्तान मे से गुजरेगे, जिसमे दीखेगे रेड इडियन, काउ बाय, पालतू ढोर, घोडे इत्यादि। ऐसा लगता है, मानो ये सब सचमुच के ही है। एक जगह झोपडी मे आग लगी हुई थी, जो बिजली की मदद से बिल्कुल वास्तविक थी। कुछ आदमियो व जानवरो के पुतले धीरे-धीरे हिल रहे थे और हमे उनके सचमुच के होने का आभास हो जाता था। खास तरह से निर्मित एकसौ पाच फुट लबा पानी मे चलनेवाला 'दि मार्क ट्वेन' जहाज मानो अमरीका की किसी विशेष नदी मे से चलता है, और न्यू ऑरलियन्स, नॉचेज व मोबाइल के कुछ भागो से गुजरता है।

एडवेचरलैंड मे पहुचकर दक्षिणी समुद्रतट पर पहुचने का आनन्द आ जाता है। यहा नारियल के पेड और हरियाली मन को मुग्ध कर लेती है। एक टेहिटियन गाव का निर्माण किया है, जिसमे बाजार लगा है। यही पर पाच एकड के अन्दर पानी के झरने और प्रपात है, जो दुनिया की

विभिन्न नदियो के आधार पर बनाये गए हैं। इसकी छटा बहुत ही मन-मोहक है। इच्छा होती थी कि बस देखते ही रहे। एक ट्रेन पर बैठकर इसका चक्कर लगाया जा सकता है। हमे यह इतना अच्छा लगा कि हमने इसके दो चक्कर लगाये।

बनावटी देहात के पास ही चक्करदार नदी थी। एक मोटर-बोट मे बैठाकर दर्शको को उसके चारो ओर ले जाया जाता है। दुनिया मे अलग-अलग जगहो पर होनेवाले वृक्ष और पौधे किनारो पर दीखते है। हाथी, बाघ और अन्य जानवर आपकी तरफ घूरते हुए दिखाई देगे। पानी मे प्लास्टिक और तार के बने मगरमच्छ और जल-हाथी थे। वे आखे घुमाते है, आपकी नाव की तरफ भागते है, मुह भी खोलते है। अनायास हमारे मुह से चीख निकल जाती, खासकर स्त्रियो के। नाव चलानेवाले के पास एक बन्दूक थी, जिसमे झूठमूठ के कारतूस थे। वह मगरमच्छ पर बन्दूक चला देता और नाव आगे बढ जाती। यह सब कुछ ऐसा लगता था मानो सचमुच मे ही घट रहा हो। उस समय हम थोडे सहम जाते थे। हा, बाद मे तो खूब हँसते थे।

निस्सदेह डिसनीलैंड मानव-मस्तिष्क की एक अनूठी कृति है।

स्थानीय टीम भी बहुत अच्छा खेल रही थी, इसलिए खूब उत्साह से बार-बार तालिया बजाई जा रही थी। लोग व्यवस्थित ढग से तालिया बजाये, इसकी व्यवस्था रहती है।। एक बैड रहता है और दोनो टीमो की तरफ से दस-बारह, नाच-नाचकर तालिया बजाने और उत्साह बढाने-वाली लडकिया रहती है। अपनी टीम की तरफ से गोल होते ही बडी फुर्ती से बैंड बज उठता है। ये लडकिया भी तालिया बजा-बजाकर उछलने, कूदने और नाचने लगती हैं। यह सकेत मिलते ही सारे स्टेडियम के लोग भी उसमे शामिल हो जाते है। कुछ ही क्षणो मे यह शोर-गुल एकदम रोक दिया जाता है, जिससे खेल की प्रगति मे बाधा न हो।

यह खेल एक छोटे-से लकडी के बने प्लेटफार्म पर गेद से खेला जाता है। गेद हाथ से ही फेकते रहते हैं। उसे करीब दस फुट ऊचाई पर बनी हुई छोटी-सी जाली मे डाल देने से गोल हो जाता है। जब गेद एक खिलाडी के पास जाती है तब साधारणत जबतक गोल नही हो जाता उसी-के साथियो के पास रहती है। कोई जरा-सी गलती करे तो पैनल्टी। गेद को गोल मे डालते हुए रोके तो दो पैनल्टी। दोनो टीमो की तरफ से एक-एक शिक्षक होता है। वही अपनी-अपनी टीम के खिलाडी के बारे मे सब कुछ निश्चय करता है।

दनादन गोल हो रहे थे। केरोलीना जीत रही थी। स्थानीय टीम अपने से तगडी टीम के सामने खेलते हुए भी उससे बेहतर खेल रही थी। आधे समय तक केरोलीन ने ३७ गोल किये और मैरीलैंड ने २५। खेल के समाप्त होने मे ६ मिनट शेष रह गये थे। गोल ५१ और ३६ हो गये थे। इस समय तक केरोलीना ने बहुत मौके खोये, कई पैनेल्टी के मौके भी बिगाडे। मैरीलैंड ने एक के बाद एक कई गोल कर दिये। सामने की टीम घबरा गई। सारे दर्शक एकतरफा शोर मचा रहे थे। इसी बीच केरो-लीना के एक खिलाडी ने फाउल किया और रेफ्री से झगडने लगा। उस खिलाडी को खेल से निकाल दिया गया। इसमे ऑफसाइड नही होती। बॉल बाहर भी बहुत कम जाती है, क्योकि बाहर जाने पर हाथ मे आया हुआ मौका निकल जाने का डर रहता है। समय कम रह गया था और मैरीलैंड गोल-पर-गोल करने लगी। हर गोल पर १५

जब पूरे दिन इस मौके की प्रतीक्षा मे बैठे रहो। इसके विपरीत है बेसबॉल का खेल। दफ्तर का सारा काम करके, जल्दी खाना खाकर, रात को दो घटे, जैसे सिनेमा जाते है उसी तरह खेल देखने जा सकते है। खेल प्राय क्रिकेट के सिद्धान्त पर ही खेला जाता है, यद्यपि दोनो मे जमीन आसमान का फर्क है। क्रिकेट के समान ही इसमे एक तरफ से एक आदमी गेद फेकता है और दूसरी तरफ से डडे की मदद से दूसरा आदमी उसे जोरो से मारने की कोशिश करता है। इसमे भी गेद को मारकर 'रन' लेते है। बाकी खेल की गहराई मे जाय तो बहुत अन्तर है। खेल की सूक्ष्म बारीकियो को समझने लगने पर खेल देखने का आनन्द कई गुना बढ जाता है।

मैं खुद ही क्रिकेट का प्रशसक रहा हू। मुझे खुद को भी क्रिकेट खेलने का शौक रहा। मैं अपने स्कूल मे क्रिकेट की टीम का कप्तान भी था। लेकिन बेसबॉल का खेल देखकर मै सचमुच बहुत प्रभावित हुआ। मेरी यह राय बन गई है कि हमे धीरे-धीरे क्रिकेट की जगह बेसबॉल को अपनाना चाहिए। शुरू-शुरू मे जरूर कठिनाई होगी, जैसी कि हर नये काम के शुरू करने मे होती है, लेकिन यदि हम दूर-दृष्टि से देखे तो बेसबॉल के आ जाने से हमारे नवयुवको की खेल-कूद की दुनिया मे बेहतरीन क्राति होगी।

न-किसी रूप मे वहा के फिल्म-उद्योग पर ही निर्भर है। सिनेमा-उद्योग से सम्बन्धित कई तरह के छोटे-मोटे उद्योग भी वहा वडे विशाल पैमाने पर फैले हुए है। वाद्य-यन्त्र वनाना और उनसे सवधित पुस्तके छापने का भी वहा एक वडा केन्द्र हो गया है। रेडियो व टेलीविजन के लिए कार्यक्रम वनाना और ग्रामोफोन के रेकार्ड वनाने का काम वहा खूव होता है। आज-कल तो हॉलीवुड स्त्रियो की वेशभूषा मे नये-नये फेशन और परिवर्तन लाने का एक मुख्य केन्द्र वन गया है।

हॉलीवुड मे कुल इक्कीस स्टूडियो है। इसमे पेरामाउट स्टूडियो सवसे प्रसिद्ध है। हम लोगो को प्रयत्न करने पर ही उसमे जाने की इजाजत मिल सकी। स्टूडियो मे जाने के वाद पहले तो हमने सारा स्टूडियो घूम-फिरकर देखा। जगह-जगह छोटे-मोटे दृश्य लगे हुए थे। कही देहात का दृश्य वनाया गया था तो कही रेड इडियनो के उत्सव की तैयारिया हो रही थी। घुमा-फिराकर हमे एक वडे कमरे के अन्दर ले जाया गया, जहा प्रसिद्ध अभिनेत्री सोफिया लोरेन अभिनेता एथनी क्विन के साथ काम कर रही थी। एक कैरेवान का दृश्य था। वाहर जोर की वारिश हो रही थी। एथनी क्विन भीगकर एकदम तर-बतर हो गया था। कैरेवान का डव्वा छोटा था। उसमे सामान इतना अधिक भरा हुआ था कि आदमियो के लिए उठने-वैठने की जगह वहुत कम थी। सोफिया लोरेन को, जो वाहर भीग रही थी, वह वडी मुश्किल से भीतर लेने की कोशिश कर रहा था। कैरेवान भी अन्दर कई जगह से चू रहा था। यही एक छोटा-सा दृश्य था, जिसे कई वार लेना पड़ा। स्टूडियो तो स्टूडियो ही ठहरा! चाहे हॉलीवुड का हो चाहे हिन्दुस्तान का, चाहे छोटा हो या वडा। नाम तो वडा सुन रखा था, लेकिन जाकर देखने पर ऊची दूकान पर फीके पकवान नजर आये, कोई विशेष आकर्षण की चीज वहा नही दिखाई दी। उस समय किसी वडे दृश्य का शूटिग नही हो रहा था। शायद वैसा कोई दृश्य होता तो देखने मे अधिक आकर्षक लगता। थोडी ही देर मे हमारा जी ऊव गया। स्टूडियो के अन्दर घुटन व गर्मी से जी घवरा गया और इच्छा होने लगी कि जल्दी ही वाहर निकल चले। पेरामाउण्ड स्टूडियो के मालिक, जिसने इसे शुरू मे वनाया था,

उसके पौत्र ने सारा स्टूडियो हमारे साथ खुद घूमाकर दिखाया और सिनेमा तारको से भी मिलाया।

जब सोफिया लोरेन और एथनी क्विन से हमारा परिचय कराया गया तो वे दोनो ही बडे प्रेम से मिले। दोनो ने हमारे साथ बडी खुशी से अपनी तस्वीरे खिचवाई। बाल-अभिनेत्री मार्गरेट ओब्रीयन भी वही पास मे बैठी थी। उससे भी हम मिले। वह बहुत ही शर्मीली नजर आई। ऐसा प्रतीत नही होता था कि हम लोग प्रसिद्ध अभिनेत्रियो से मिल रहे है। इन लोगो के नाम इतने मशहूर हो जाते है कि लोग इनको धीरे-धीरे दूसरी दुनिया से जमीन पर उतरकर आया हुआ चाद ही समझने लगते है। हमारे दिमागो मे इन लोगो के बारे मे अजीब-अजीब चित्र बनते जाते है। हम यह भूल जाते है कि ये लोग भी हमारे ही समान गोश्त और पोश्त के बने इसान है, जिन्होने एक विशेष कला मे निपुणता हासिल की है। पर इनसे मिलने के बाद दिमाग मे जो इस तरह की गलत धारणाए बनी हुई थी, वे अपने-आप दूर हो गई। बहुत दिनो से हॉलीवुड देखने और वहा के नामी अभिनेताओ से मिलने की जो लालसा थी, उसकी कुछ अशो मे पूर्ति हुई।

हॉलीवुड के फिल्म-निर्माताओ के पास पैसे की कमी नही है। वे बढिया-से-बढिया सेट बना सकते है। देश के सर्वश्रेष्ठ फोटो लेनेवाले तकनीकी माहिर उनको प्राप्त है। इन सब सुविधाओ के साथ-साथ वहा लोग मेहनती भी है। इसलिए दुनिया की अच्छी-से-अच्छी फिल्मे वहा तैयार होती है।

फिल्म की शूटिग डायरेक्टर जार्ज कुकर कर रहे थे। हमे उनसे भी थोडी बात-चीत करने का मौका मिला। वह भारत के प्रति बहुत आकर्षित है। इसी वजह से वह स्वत भारत आये थे और उनकी बहुत इच्छा थी कि उनकी फिल्म 'भवानी-जकशन' भारत मे बनाई जाय। इसके लिए उन्होने पहले से तैयारी भी कर ली थी, लेकिन किसी वजह से भारत सरकार ने इनको इस फिल्म को बनाने की इजाजत नही दी। इसका उन्हे बडा अफसोस रहा। वह इस बारे मे भारत सरकार की नीति से खुश नही थे और उन्हे समझ मे भी नही आया कि उन्हे इजाजत क्यो नही दी गई। बाद मे उन्होने इस फिल्म को पाकिस्तान मे जाकर बनाया। फिल्म की कहानी मे

भारत के प्रति कुछ अपमानजनक बात होती तो उसे शायद दूर किया जा सकता था। सहानुभूतिपूर्वक विचार करके और आपस मे सहृदयता से बाते करके इस तरह के मतभेद आसानी से दूर किये जा सकते हैं। यदि हॉली-वुड के फिल्म-निर्माता व निर्देशक भारत मे आकर फिल्मे बनायें तो यह हिन्दुस्तान के फायदे की चीज होगी। हमारे देश का प्रचार भी होगा और विदेशी पूजी भी यहा आयेगी। हा, हमे इस बात का जरूर ध्यान रखना चाहिए कि वे हमारे देश के लोगो का और हमारे जीवन का गलत दिग्दर्शन न करने पावे।

: १८ :

नियाग्रा प्रपात व वापसी

नियाग्रा प्रपात के इर्द-गिर्द इसी नाम का एक शहर ही बस गया है, जिसकी आवादी लगभग एक लाख है। इसका एक हिस्सा अमरीका के न्यूयार्क-स्टेट मे है और बाकी का हिस्सा कनाडा मे है। नियाग्रा प्रपात अब धीरे-धीरे एक छोटा-मोटा औद्योगिक केन्द्र वनता जा रहा हे। इन झरनो से विद्युत-शक्ति पैदा होती है, जो उत्तरी अमरीका मे सबसे ज्यादा परिमाण मे है। यहा से उत्पन्न विजली तमाम न्यूयार्क व पेनसिलवेनिया स्टेट्स के कल-कारखानो व घरेलू उपयोग के लिए पर्याप्त होती है। साथ ही कनाडा के ओटारियो प्रात को भी यही से विजली पहुचाई जाती है।

यहा कागज और कागज से वनी चीजो की फैक्टरिया अधिक है। कार-बन, ग्रेफाइट, एब्रेजिव, स्टोरेज, वेकरी और खाद्य-सामग्री के कारखाने भी वडी सख्या मे लगाये गए है।

फादर लूई हेनप्री सम्भवत इतिहास के प्रथम व्यक्ति है, जिन्होने सन् १६७८ मे नियाग्रा प्रपात का दर्शन किया। धीरे-धीरे इस प्रदेश का विकास होता गया और इन सुन्दर झरनो के प्रति वहा के लोगो का आकर्षण वढता गया। सन् १८१९ मे अमरीका और कनाडा ने जब नियाग्रा नदी को अपने दोनो देशो के वीच की सीमा-रेखा निश्चित किया तब इसका महत्व और भी वढ गया।

नियाग्रा नदी के ऊपर पहला पुल १८४८ के करीब प्रपात से एक मील नीचे की तरफ वनाया गया। अब उसी नदी पर वारहवा पुल १९४१ मे वना हे। लोग इसे शौक से 'रेनवो' (इद्रधनुष) पुल कहते है। विद्युत-शक्ति पैदा करने का काम सन् १८५२ मे शुरु हुआ और नियाग्रा प्रपात के गाव मे सवसे पहले सन् १८८१ मे विजली आई। विद्युत-शक्ति पैदा करने का परिमाण वढता ही गया और आज दुनिया मे यह प्रपात जल-विद्युत-शक्ति

बनाने का बडा साधन बन गया है।

नियागा प्रपात अमरीका और कनाडा के मध्य मे स्थित होने की वजह से अमरीका से कनाडा आने-जानेवालो के लिए एक तरह का प्रवेशद्वार (गेटवे) बन गया है।

इन प्रपातो की वजह से यह प्रदेश, नैसर्गिक सौंदर्य मे दुनिया मे एक अनूठा स्थान रखता है। इन झरनो को देखने के लिए दुनिया के हर प्रदेश से बडी-बडी सख्या मे प्रवासी लोग नित्य प्रति आते ही रहते हैं। अमरीका मे जिन लोगो की नई-नई शादिया होती है, उनके लिए तो यही स्थान नन्दन कानन के समान है। प्रथम मिलन की चन्द राते प्रेमी-युगल यहा के सुरम्य वातावरण मे मेह की फुहारो मे भीगकर बिताना चाहते है। यहा आकर दुनिया की सारी चिन्ताओ को भूलकर, अपने सुदीर्घ भावी जीवन को एक दूसरे की सगति मे सफलतापूर्वक बिताने की पक्की बुनियाद इसी प्रपात की साक्षी मे रखी जाती है।

भारत से अमरीका जाने के पहले ही नियाग्रा प्रपात की प्रसिद्धि हममे से सभी लोगो ने बहुत-कुछ सुन रखी थी। सभीको वहा जाने का अतीव उत्साह भी था। इसलिए जब अमरीका के साथियो ने हमसे पूछा कि आप अमरीका मे क्या-क्या देखना चाहेगे तो हमने सहज ही नियाग्रा प्रपात का नाम भी सूचित किया। हमे यह जानकर बडी खुशी हुई कि जो कार्यक्रम उन्होने हमारे लिए बनाया था, उसमे नियाग्रा प्रपात की सैर को वे भूले नही थे।

हमारा पूरा प्रतिनिधि-मण्डल डेट्रोइट से हवाई जहाज से रवाना होकर बफेलो हवाई अड्डे पर पहुचा। वहा पूर्व-योजना के अनुसार हमे लेने के लिए एक खासी बडी मोटर आ गई थी। उसका चालक अच्छा-खासा तजुर्बेकार गाइड भी था। बफेलो से नियाग्रा प्रपात जाते समय रास्ते भर वह आस-पास के प्रदेश का परिचय भी कराता जाता था। बीच-बीच मे गप्पो के गोले छोडता हुआ वह हम लोगो का मन-बहलाव भी कर रहा था। जाते-जाते रास्ते मे हम लोग एक खूब लम्बे बगीचे के पास से गुजरे। हमे उस बगीचे मे कोई विशेषता नही दिखाई दी। समूचा बाग एक मामूली-सी दीवार से घिरा हुआ था।

अमरीकी झरना १६७ फुट ऊचा और करीव १४०० फुट चौडा है, लेकिन इसमे जो पानी गिरता है, उसका परिमाण अपेक्षाकृत कम है।

कनाडा की तरफ झरनो के इर्द-गिर्द खूव सुदर वाग-वगीचे लगा दिये गए है। यात्री लोग वडे शौक से झरनो के आस-पास इन वगीचो मे घूमते है। फोटो लेनेवालो को तो मनचाही मुराद मिल जाती है। झरनो को भिन्न-भिन्न रुखो से देखने के लिए विशेप स्थान वने हुए हे, ताकि उसके हर पहलू को, हर रुख से देखकर उसका पूरा आनद लूटा जा सके। एक जगह लिफ्ट मे वैठाकर नीचे ले जाया जाता हे। वहा आपको वरसाती कोट और रवर के लवे जूते पहनाकर झरनो के नीचे की तरफ ले जाया जायगा। आपकी आखो के सामने से झरनो का पानी खूव जोरो से और वहुत नजदीक से गिरता दिखाई देगा। ठड के दिन हो तो बीच-बीच मे वर्फ के वडे-वडे खड जोरो से आवाज करते हुए एक के वाद एक गिरते रहते है। जहा से आप यह दृश्य देखते है, वहा पानी की फुहार उडती ही रहती हे। यदि आप वरसाती न पहने हो तो एकदम भीग जाय।

शाम को इन झरनो पर, खास करके कनाडा की तरफ के, झरनो पर, विजली की रग-बिरगी वत्तियो का प्रकाश डाला जाता है। उस समय के दृश्य की कल्पना से ही मन मुग्ध हो जाता है, लेकिन हम इस दृश्य को देखने से वचित ही रहे, क्योकि समय की कुजी हमारे हाथ मे नही थी। हमारा सारा समय पहले से वधा हुआ था इसलिए हमे शाम का दृश्य देखे विना ही लौट आना पडा।

वहा का दृश्य हमे इतना अच्छा लगा था कि शाम को रग-विरगे प्रकाश मे उस दृश्य को देखने का आकर्पण हम रोक नही सके। इसलिए जव हमारे प्रतिनिधि-मडल की यात्रा पूरी हो गई तव हमने कनाडा जाने से पहले फिर से एक वार वहा जाने का तय किया। इस वार हम लोगो ने कनाडा की तरफ, जल-प्रपात के पास ही वने हुए एक सुदर होटल मे पूरी रात विताई। इस होटल से भी इस प्रपात का सुदर दृश्य दिखाई देता है। होटल की सवसे ऊची मजिल पर एक रेस्तरा वना हुआ है। इसमे वडी भीड लगी रहती है। हमने भी नियाग्रा के मनोरम दृश्य को देखते हुए वहा खाना खाया।

वहा आने का पूर्ण आनन्द अब मिला। बीच-बीच मे कुहरा छा जाता था और पूरा दृश्य ढक जाता था, पर थोडी देर मे खुल भी जाता था। इस आखमिचौनी के खेल को देखते हुए कितनी रात होगई, इसका हमे ज़रा भी भान नही रहा।

नियाग्रा नदी के उत्तरी किनारे पर एक बडे जोर का भवर है। यह भी जगत्प्रसिद्ध है। यहा पानी का प्रवाह इतने जोर का है कि नदी ने चट्टान को काटकर अपने लिए एक गोल रास्ता बना लिया है। दुनिया की किसी भी नदी मे इतनी तेज गति से पानी नही गुजरता। नदी बल खाकर अर्ध-चद्राकार रूप में यहा से मोड लेती है। इस घुमाव पर पानी इतने जोर-शोर के साथ गरजते हुए बहता है कि वह दृश्य भी बडा आकर्षक हो गया है। इस भवर के ऊपर रस्सो का दोलन-पुल नदी के आर-पार बना दिया गया है। इसपर एक डब्बे मे बैठकर लोग नदी के आर-पार जाते है। रास्ते मे भवर का दृश्य खूब अच्छी तरह दिखाई देता है।

अमरीका की सीमा के बाहर कनाडा मे पैर रखते ही पता चल जाता है कि हम अमरीका से बाहर आ गये है। यद्यपि यह देश अमरीका से एकदम लगा हुआ है, फिर भी वहा की अपेक्षा यहा के लोग गरीब है। हा, भारत की तुलना मे तो जरूर मालदार है। इतने नजदीक होते हुए भी अमरीका व उनके देश मे इतना अतर होगा, इसकी कल्पना नही की जा सकती थी। कनाडा मे पहुचकर ज्योही वहा के होटल मे गये, हमे एकदम परिवर्तन दिखाई दिया। कुछ जाने-पहचाने रीति-रिवाज व व्यवहार वहा दीख पडे। वहा बटलर व बैरे अपनी खास पोशाक मे बडी नम्रता से पेश

लोग शामिल हुए तब कनाडा के एक प्रतिष्ठित व्यापारी से हमारी दोस्ती हो गई थी। उसने हमारी बडी खातिर की, अपनी गाडी भेजकर हमे सारा शहर घुमाकर दिखलाया और अपने घर पर बुलाकर हमारा आतिथ्य-सत्कार भी किया। श्री जी डसरोसियर्स बडे भले आदमी थे। लेकिन वहा के जीवन की व्यस्तता की वजह से शहर की सैर के समय वह खुद हमारे साथ नही आ सके। हमारे यहा इस तरह के विदेशी मेहमान आव तो हम खुद उनके साथ जाकर उनको अपना शहर आदि बताना पसद करते है, लेकिन इसके लिए उनके पास समय कहा ? इस कारण उन्होने इस बात का इत्मिनान कर लिया था कि जो ड्राइवर हमे दिया गया, वह बहुत होशियार हो। ड्राइवर ही ने सारा शहर हमे अच्छी तरह से घुमाकर दिखा दिया और जब हम उनके घर पर गये तब वहा भी वह हर तरह से अपने मालिक की मदद कर रहा था। अपने मालिक के साथ हम लोगो की तस्वीरे आदि भी उसीने, अपने मालिक के कहने पर, उतारी। चाय, नाश्ता वगैरह पेश करने मे भी उसकी काफी मदद रही। और साथ ही चायपान मे भी उसने हमारा हाथ बटाया।

उसीने हमे बताया कि कुछ ही दिनो बाद २६ जून, १९५९ को इगलैंड की महारानी एलिजाबेथ तथा अमरीका के प्रेसिडेट आइजनहोवर द्वारा सेट लारेस के वृहत् जलमार्ग का उद्घाटन हो रहा है। यह २३०० मील लबा जलमार्ग सेट लारेस झील को अतलातिक महासागर से मिलता है। इस जलमार्ग से बडे-बडे जहाज, जिन्हे पहले घूमकर कनाडा जाना पडता था, अब पाचो झीलो मे होकर अतलातिक तक पहुच सकते है। इससे कनाडा और अमरीका का सहयोग और अधिक बढेगा और इन दोनो देशो की मित्रता सुदृढ होगी। इसपर जो बिजलीघर है, उससे १८८०,००० किलोवाट बिजली तैयार होगी, जिससे कनाडा मे विकास की कई योजनाए सफलतापूर्वक आगे बढ सकेगी।

कनाडा के इस प्रवास मे हम लोग मोटर से काफी घूमे। नियाग्रा प्रपात से मोट्रियल तक मोटर से ही गये थे। गुजरते समय हमे बराबर यह प्रतीत हो रहा था कि हर तरह से अमरीका और वहा के प्रदेश मे बडा अतर है। उनके रहन-सहन के अलावा उनके मकानात, वेशभूषा आदि भी

भिन्न है। औद्योगीकरण अपेक्षाकृत बहुत कम है और खेती अधिक पैमाने पर होती है। उसका असर वहा के लोगो के रोजमर्रा के जीवन पर और दृष्टिकोण पर पडना स्वभाविक है। इसी वजह से दोनो देशो के बीच इतना अधिक अतर दिखाई देता है। वहा के एक टैक्सी ड्राइवर ने अपने रोजमर्रा के जीवन का किस्सा सुनाया। वह पाठको के लिए रोचक होगा। वहा एक नई टैक्सी के लिए करीब ७००० डालर खर्च करना पडता है। ३००० डालर तो गाडी की कीमत होती है। इसके अलावा ३५०० डालर के करीब पगडी का अलग से देना पडता है। टैक्सी चलाने का अनुमति-पत्र लेने के लिए काले बाजार मे यह कीमत देनी पडती है। बाकी करीब ३०० डालर टैक्सी के मीटर और रेडियो आदि का होता है। यह ड्राइवर डायमड कपनी का नौकर था। इसकी कपनी इस तरह की १७०० टैक्सिया चलाती है। हर टैक्सी मे टेलीफोन लगा रहता है और वह हर समय अपने अड्डे से बाते करता रहता है। वह इस समय कहा है, कहा से कहा की सवारी उसे मिली है, यह खबर वह बराबर अपने अड्डे पर देता रहता है। अड्डे से भी उसे सूचना मिलती रहती है कि यदि वह खाली हो तो उसे कहा जाना चाहिए। दिनभर मे जो कमाई होती है, उसका ४०% और जो बख्शीश मिलती है वह, ड्राइवर की कमाई है। हर ड्राइवर एक घटे मे करीब १ डालर कमा लेता है। प्रतिदिन करीब १४-१५ घटे काम करता है। उसने कहा कि कम-से-कम १८० डालर प्रति माह की कमाई तो होनी ही चाहिए, नही तो वह अपने कुटुब के रोजमर्रा का खर्च भी ठीक से नहीं चला सकता। टैक्सिया २४ घटे चलती है। एक पाली होती है सुबह ७ बजे से शाम को ५ बजे तक और दूसरी होती है शाम के ५ बजे से सुबह ७ बजे तक। रात को टैक्सियाँ कम चलती है।

हम लोग कनाडा मे कुल तीन-चार दिन रहे, फिर लदन होते हुए हमने घर की राह ली। कनाडा मे रहते हुए हमे ऐसा लगता रहा कि हम इगलैड के ही किसी एक प्रदेश मे रह रहे है। भारत मे अग्रेजो ने जिस तरह का वातावरण पैदा किया था, उसी तरह का परिचित वातावरण कनाडा मे दिखाई दिया। हा, अपेक्षाकृत कनाडा मे धन-धान्य और जीवन-स्तर काफी ऊचा है।

इस तरह करीब तीन महीने अमरीका और कनाडा मे बिताकर हम लोग घर लौट रहे थे। अतलातिक महासागर के पार की दुनिया का यह हमारा पहला अनुभव था। हमारा वहा रहना-सहना, लोगो से मिलना और अनेक सुदर-सुदर स्थानो को देखना, यह सारा अनुभव बहुत समृद्ध रहा। जीवन मे आगे चलकर यह बडा उपयोगी साबित होगा, इसमे कोई सदेह नही। अमरीका मे आने से पहले हमारे सामने उस देश का जो चित्र था उसमे कई बाते सही निकली, कई बाते गलत। अधिक बाते कमोबेश ठीक ही निकली। यह मेरी खुशनसीबी है कि अपनी आखो से ये सारी चीजे देखने का महत्वपूर्ण और सुखकर सुअवसर मिला।

मित्रो के सहयोग से इतने थोडे समय मे अधिक-से-अधिक जितना देखा जा सकता था, उसे देखने का हमे मौका मिला। उसके लिए 'याक' और अन्य तमाम साथियो के हम बहुत ही आभारी है।

: परिशिष्ट :

'इंटरनेशनल चेम्बर ऑव कामर्स' का १७ वां जलसा

हमारे युवक-प्रतिनिधि-मडल की औपचारिक यात्रा समाप्त होने के कुछ ही दिनो बाद वाशिगटन मे 'इटरनेशनल चेम्बर ऑव कामर्स' का १७ वा जलसा होने जा रहा था। उसकी भारतीय कमेटी ने मुझे भी इस काग्रेस का, भारत की ओर से, एक प्रतिनिधि बना लिया। इस कारण इसके जलसे मे भाग लेने का मौका मिल गया।

इस काग्रेस का मुख्य विषय था—"व्यापारियो को आधुनिक युग की चुनौती—राष्ट्रीय तथा अतर्राष्ट्रीय मामलो मे उनके दायित्व।" विषय बहुत ही सोच-समझकर, समयानुकूल रखा गया था और बडा उपयुक्त रहा। आज की दुनिया मे व्यापारियो की जिम्मेदारी बढती जा रही है। उनका क्षेत्र सिर्फ व्यापार करना और पैसा कमाना ही नही रह गया है, बल्कि उनकी प्रवृत्तियो का प्रभाव दुनिया के राजनैतिक क्षेत्रो मे पडता है और दुनिया मे हर कही बसनेवाले लोगो पर उसकी प्रतिक्रिया होती है। इस विषय पर आइ सी सी के सभापति जी श्री ई जी डेस्टेज ने शुरू मे बडा सुन्दर भाषण दिया और सारी कान्फ्रेस के लिए एक धारा निश्चित कर दी।

इस काग्रेस मे भाग लेने के लिए दुनिया के हर हिस्से से विशिष्ट व्यक्ति आये थे। बडे-बडे उद्योगो के प्रेसिडेट और मैनेजिग डाइरेक्टर थे। अपने-अपने देश के सबधित सरकारो के प्रतिनिधि थे और बैको, बीमा-कपनियो आदि के उच्च-से-उच्च अधिकारी भी सम्मिलित हुए थे। जर्मनी के क्रप सगठन के श्री कार्ल, ड्यूस्च बैक के डाइरेक्टर डा० पॉल, ग्रेट ब्रिटेन के इटरनेशनल चेम्बर ऑव शिपिग के चेयरमैन सर स्केलटन,

लिवरपूल स्टीमशिप ओनर्स असोसियेशन के चेयरमैन श्री रिगबी, इम्पीरियल केमिकल इडस्ट्रीज़ (न्यूयार्क) के प्रेसिडेट श्री गॅविन, लॉइड्स वैक के डिप्टी चैयरमैन सर जेरेमी रेजमन, ब्रिस्टल मार्यस कपनी के सीनियर वाइस प्रेसिडेट श्री ब्रिस्टॉल, रेडियो कॉरपोरेशन ऑव अमरीका, फर्स्ट नेशनल सिटी वैक ऑव न्यूयार्क व चेज मैनहट्टन वैक सस्थाओ के वाइस प्रेसिडेट, नेशनल बैक ऑव वाशिगटन के प्रेसिडेट, इस तरह बडे-से-बडे व्यापारी और औद्योगिक सस्थाओ के सभापति सैकडो की सख्या मे वहा उपस्थित थे।

भारत से 'फेडरेशन ऑव इडियन चेम्बर्स ऑव कार्मस' के सभापति श्री मदनमोहन रुइया हमारे नेता थे। श्री के पी गोयनका, श्री भरत राम, सिंदिया के श्री कुमाना, मुकन्द आयर्न एड स्टील वर्क्स के श्री वीरेन शाह आदि मिलकर कुल पद्रह प्रतिनिधि थे।

आइ सी सी के नेताओ और प्रतिनिधियो के अलावा, जिन्होने विशेष भाषण दिये उनमे श्री लुई स्ट्रॉस, अमरीका के वाणिज्य मत्री, श्री पॉल हॉफमैन, यू एन स्पेशल फड फॉर इकनोमिक डेवलपमेट के मैनेजिग डाइरेक्टर, श्री हेनरी लूस, 'टाइम' अखवार के मुख्य सपादक; सर डेनिस रावर्टसन, केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के राजनीति व अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, इन्टरनेशनल मॉनीटेरी फड के मैनेजिग डाइरेक्टर श्री जॉकवसन आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस काग्रेस को अमरीकी सरकार की पूरी मान्यता थी। अमरीका के तत्कालीन प्रेसिडेट श्री आइसनहोवर ने स्वय आकर अपना सदेश सुनाया। उन्होने अपने सदेश मे कहा कि आज व्यापारी और उद्योगपतियो के सामने सवसे बडी चुनौती है। आई सी सी जिस खुले बाजार की नीति का पक्षपाती है, वह नीति सफलतापूर्वक, दुनिया मे प्रचलित अन्य किसी भी नीति की बनिस्वत, अधिक उत्पादन करने मे समर्थ हे, इसे दुनिया को बता देना होगा। उन्होने आगे कहा कि अनेक देशो के बीच व्यापारिक सबध स्थापित होने से व्यापार के साथ ही आपस मे शान्ति और दोस्ताना सबध कायम हो जाता है। उनके भाषण के बाद ही, इस बार एक नई योजना की गई। अमरीका के सीनेट के पाच सदस्य और पार्लमेंट के छ सदस्यो

को पहले से निमन्त्रित करके एक साथ बुला लिया गया था । वे वहा की राजनीति मे अपने-अपने क्षेत्र के नामी नेता थे, जो कि अलग-अलग पार्टी के नुमाइन्दे थे । उन लोगो से प्रतिनिधियो ने खुलकर प्रश्न पूछे। उन्होने बडी सफाई से, बिना किसी सकोच के, सारे सवालो के जवाब दिये । उनमे कई प्रश्नो पर मतभेद था । उसको छिपाने की उन्होने कोई कोशिश नही की । जिसको जो उचित लगा, उसने वही स्पष्ट रूप से कहा । यह ख्याल नही किया कि सारी दुनिया के उद्योगपति इकट्ठे है तो उनके सामने अपने देश के आपसी मतभेदो को क्यो प्रकट करे ।

नये-नये राष्ट्र उद्योगो मे प्रगति कर चुके है । ऐसे राष्ट्रो के साथ किस तरह मिल-जुलकर काम कर सकते है, इसके बारे मे श्री भरतराम ने हमारी ओर से अपने विचार प्रस्तुत किये । उन्होने कहा कि जो देश अपनी पूजी पिछडे हुए देशो मे लगाते है, उनकी सरकारो को चाहिए कि वे अपने व्यापारियो को बढावा दें और उनकी पूजी के ऊपर लगाये हुए करो मे कमी करें ।

सिंदिया के श्री कुमाना और श्री झवेरी ने भी विचार प्रकट किये । उनके भाषणो का सार यह था कि हमारे विदेश जानेवाले जहाजो मे व यूरोपीय कम्पनियों के जहाजो मे किसी तरह का भेदभाव नही होना चाहिए ।

सम्मेलन के अन्य महत्व के विषय, जिनपर उपयोगी चर्चा हुई, निम्नलिखित थे ।

१ विश्वव्यापी-विक्रय—उच्चस्तरीय व्यवस्थापकीय उत्तरदायित्व

२ विकासशील राष्ट्र—साझेदारी मे अगला कदम

३. मुद्रा की स्थिरता और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता मे व्यापारी-वर्ग का दायित्व

४ राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय कार्यो मे व्यापारी-वर्ग का उत्तरदायित्व

मे टोकियो मे हुये आइ सी सी के १५वे जलसे मे भी उपस्थित रहने का अवसर मिला था। तब भी मुझे लगा और वाशिगटन मे मेरी धारणा और भी पक्की हुई कि हमारे देश के उच्चस्तर के व्यापारी और उद्योग-पतियो को स्वय आगे आकर इस सम्मेलन मे अधिक हिस्सा लेना चाहिए। अपने आदमियो के भरोसे न रहकर अधिक सख्या मे वे स्वय जाय, जिससे इस कान्फ्रेस मे वे अच्छा योगदान कर सके और हमारे देश का नाम ऊपर उठा सके। इतना ही नही, उससे अनेक प्रकार का व्यापारिक लाभ भी हमारे देश को और यहा के उद्योगपतियो को मिल सकता है। विदेशी सरकार से भी हमे सुविधाए चाहिए तो इसमे ये सम्मेलन सहायक हो सकते है। आज जबकि हमारा देश अधिकाधिक उत्पादन मे लगा है और विदेशो से सपर्क स्थापित करके नये-नये उद्यो। बढा रहा है, ऐसे अवसर पर बडे-बडे उद्योगपतियो का ऐसी सभाओ मे जाना बहुत जरूरी है। भारत सरकार को भी चाहिए कि जिस तरह अन्य देशो की सरकारे अपने यहा के 'चेम्बर्स ऑव कामर्स' और उनके फेडरेशन की राय को महत्व देती है, उसी तरह से उद्योगिक क्षेत्रो मे यहा भी दिया जाय और उनके भी नुमाइन्दो को आई. सी सी. मे भाग लेकर अपने देश की औद्योगिक प्रगति मे लाभ पहुचाना चाहिए।

सम्मेलन के साथ-साथ प्रतिनिधियो ने एक लबा-चौडा कार्यक्रम बना दिया था। प्रतिनिधियो की स्त्रियो के लिए अलग कार्यक्रम था। जिनकी जिसमे रुचि हो वहा उनको ले जाने का व्यवस्थित प्रबध था। पार्टिया और स्वागत-भोज तो रोज होते ही थे। अलग-अलग देशो के दूतावासो की तरफ से भी स्वागत का आयोजन किया जाता था। एक रोज शाम को अमरीका के कामर्स और स्टेट डिपार्टमेट की तरफ से सब प्रतिनिधियो के स्वागत-समारोह एव भोज का आयोजन किया गया था। स्त्रियो के कार्यक्रम मे एक दिन उन सबको श्रीमती ड्वाइट आइजनहोवर ने ह्वाइट हाउस मे निमत्रित किया था। इस तरह २० अप्रैल से २५ अप्रैल तक छ दिन का यह सम्मेलन बहुत व्यस्त और उपयोगी साबित हुआ।

चर्चाओ के बीच सेक्रेटरी ईजमेन ने बताया कि पिछले चालीस सालो मे जबसे 'इटरनेशनल चेबर ऑव कॉमर्स' ने सर्वप्रथम यह काम अपने

हाथ मे लिया है कि वह विश्व के आर्थिक ममलो पर व्यापारी वर्ग की तरफ से बोले, तबसे समाज का राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक ढाचा बिल्कुल बदल गया है। पहले की अपेक्षा अब राज्य सरकारो ने अधिक व्यापक जिम्मेदारिया और शासन-शक्ति को अपने हाथ मे ले लिया है, विशेष तौर पर जीवनस्तर बढाने, बेरोजगारो को रोजगार देने के स्तर को बढाने और समाज-कल्याण एव आर्थिक विकास के मामलो मे।

इस मौके पर काग्रेस का जमा होना विश्व के व्यापारी वर्ग के लिए बहुत ही महत्व का विषय था कि वह अपनी जिम्मेदारियो का लेखा-जोखा ले ले और भावी निर्णय लेने के लिए भूमिका तैयार कर ले। सम्मेलन ने व्यापारी-वर्ग के सामने विश्वव्यापी परिवर्तनो के कारण, चाहे वे भले हो या बुरे, जो चुनौती है, उसे बहरहाल स्वीकार करने पर जोर दिया। उसकी पहली जिम्मेदारी उसके अपने कारोबार के प्रति है, पर इसके साथ-ही-साथ उसका एक व्यापक कर्तव्य सुख-समृद्धि के सर्जक, एव मुक्त-व्यापार की अर्थ-व्यवस्था की सरपरस्ती करने का भी है, जो हमारे स्वतत्र समाज का आधार है।

ये उत्तरदायित्व कैसे पूरे किये जा सकते हे, अपने कर्तव्य को सफलता से एव विशेष दूरदर्शिता से पूरा करने के लिए वह क्या कर सकता है, इन्ही दृष्टिकोणो को ध्यान मे रखकर समस्या के खास पहलुओं पर विचार किया गया।

व्यापार-क्षेत्र को बढाने के लिए जो अधिक-से-अधिक ज़ोर दिया जा रहा है, उसे देखते हुए व्यापारी-वर्ग के लिए किन-किन मूलभून आवश्यकताओ और मापदडो की जरूरत है, ताकि वह अपना विज्ञापन-क्षेत्र बढा सके, यह बात खास तौर से विदेशी मडियो के दृष्टिकोण से कही गई थी और इसपर बडी उपयोगी चर्चा हुई। बहस का खास मुद्दा यही था कि सफल व्यापार के लिए व्यापारी मडियो का क्या महत्व है और आर्थिक कल्याण को कैसे बढाया जा सकता है।

आर्थिक स्थिरता और मुद्रा के मुक्त विनिमय मे व्यापारी-वर्ग के अलावा अन्य कोई भी वर्ग अधिक महत्वपूर्ण नही है। भले ही आशिक रूप से हो, पर मुद्रा की स्थिति कमजोर या मजबूत कर

देना भी उसकी एक वडी जिम्मेदारी है। जाने या अनजाने, व्यापार को चलाने के तरीको के कारण या अपनी सरकार पर डाले हुए दवाव के कारण वह मुद्रास्फीति को पैदा कर देता है, जो कभी-कभी कुछ समय के लिए उसके हक मे लाभदायक होती है।

काग्रेस के सामने यही प्रश्न था कि किस प्रकार उन उद्देश्यो तथा लक्ष्यो तक पहुचा जाय, जिन्हे सभी देशो के लोग और सरकारें अपनाना चाहती है, ताकि तेजी से आर्थिक विकास हो, जीवन-स्तर ऊचा हो और काफी हद तक वेरोजगारी का उन्मूलन किया जा सके। साथ-ही-साथ चालू कीमते और चालू मुद्रा का चलन भी स्थिर रहे, जिसके विना ऐसा विकास या प्रगति कालातर मे मृगमरीचिका सिद्ध होती है। यही एक समस्या है, जो किसी-न-किसी रूप मे सब देशो के सामने है और विकासोन्मुख देशो के लिए खास करके यही वहुत पेचीदा सवाल है।

●

'मडल' का संस्मरण साहित्य

१ अमिट रेखाए
(सपादिका सत्यवती मल्लिक) ३ ५०
जीवन के हृदयस्पर्शी रेखाचित्रो का सग्रह

२ कोई शिकायत नही
कृष्णा हठीसिग २ ५०
नेहरू-परिवार की हृदयस्पर्शी व सजीव झाकिया

३ मानवता के झरने
(ग० वा० मावलकर) १ ५०
वदियो के जीवन की कुछ मार्मिक यथार्थ घटनाए

४ काश्मीर पर हमला
(कृष्णा मेहता) २ ००
एक रोमाचकारी आपवीती कहानी

५ मै भूल नही सकता
(कैलाशनाथ काटजू) २ ५०
हृदयस्पर्शी, रोचक तथा शिक्षाप्रद सस्मरण

६ मील के पत्थर
(रामवृक्ष बेनीपुरी) २ ००
गाधीजी, राजेन्द्र बाबू, विनोबा, प्रेमचन्द आदि के सस्मरण

७ मै इनका ऋणी हू
(इन्द्र विद्यावाचस्पति) २ ००
राष्ट्रीय नेताओ, विद्वानो तथा समाज सेवियो के रोचक
और मार्मिक सस्मरण

८ मेरे सस्मरण
(ग० वा० मावलकर) २ ००
गाधीजी के सपर्क के सस्मरण

९ विनोबा के साथ सात दिन
(श्रीमन्नारायण) ० ७५
विभिन्न महत्वपूर्ण समस्याओ पर गभीर विचार

१० मेरी जीवन-यात्रा
(जानकीदेवी बजाज) २ ००
जीवन-निर्माण की सरल, सुबोध एव भावपूर्ण कहानी

११ एक आदर्श महिला
(विनायक तिवारी) १ ००
स्व० अवतिकाबाई गोखले के सेवामय जीवन की कहानी

१२ लोकमान्य तिलक
(पाडुरग गणेश देशपाडे) २ ५०
स्वराज्य के मूल-मत्रदाता की प्रेरणादायक जीवनी

१३ एक क्रातिकारी के सस्मरण
(बनारसीदास चतुर्वेदी) १ ००
प्रिस क्रोपाट्किन का रेखाचित्र और सस्मरण

१४ स्मरणाजलि
(सपादक—काका कालेलकर) १ ५०
गुरुजनो, मित्रो, सबधियो तथा प्रशसको द्वारा स्व० जमनालाल बजाज के सस्मरण